जिज्ञासूनां कृते

(श्री हजरत मोहम्मद साहिब की संक्षिप्त जीवनी)

लेखक—
दूध का दूध पानी का पानी

इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य संस्कृत प्रचार है

प्रकाशक—
हिन्दी साहित्य प्रकाशन
कलकत्ता-१६

प्रथमवार १०००] [मूल्य १ रुपया ५० पैसे

। ओ३म् ।

जिज्ञासूनां कृते

पुराणमित्यैव न साधु सर्वं,
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम् ।
संन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते,
मूढः परप्रत्ययनेय बुद्धिः ।।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्त-तदेवेतरो जनः
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।।

जिज्ञाशुओं के लिये

कोई काव्य प्राचीन है अतः सर्वोत्तम है। ऐसा निर्णय नहीं करना चाहिये न यह नवीन है अतः निन्दनीय है ऐसा भी नहीं। विचार शील सज्जन नवीन प्राचीन दोनों की परीक्षा कर सर्वोत्तम को ग्रहण करते हैं। जैसे हंस परीक्षा कर दूध कों ग्रहण करता है जल को त्याग देता है। मूढ़ लोग दूसरों के कथन पर चलते हैं। स्वयं विचार नहीं करते। ऐसा कवि शिरोमणी कालीदास जी का कथन है।

जैसा जैसा श्रेष्ठ पुरुष आचरण करते हैं वैसा

आधुनिकाः अवसरवादिनाः स्वार्थवशेन अज्ञानतो वा स्वात्मान मुस्लीम मनु भवन्ति स्वीकुर्वन्ति च। मुस्लिम सम्प्रदायस्य संस्थापको महात्मा मोहम्मदोस्ति। अस्य विषये भविष्य पुराणे एतत् वर्णनं विद्यते।

मोहम्मदः इति ख्यातः पैशाच कृति तत्परः १२
आर्य धर्मो हि ते राजन् सर्वधर्मोत्तमस्मृतः
लिङ्ग छेदी शिखाहीनः श्मश्रुधारी स दूषकः
उच्चालापी सर्व भक्षी भविष्यति जनो मम १६
विना कौलं च पशवस्तेषां भक्ष्या मता मम
मूसलेनैव संस्कारः कुशैरिव भविष्यति १७

वैसा हो साधारण मनुष्य उनको प्रमाण मानकर वर्तते हैं।

गीता अ. ३ श्लोक २२

निवेदन :—आजकल के अवसरवादी जन स्वार्थ के कारण अथवा अज्ञान के कारण मुस्लिम अनुभव करते हैं और मुसलमान मानते हैं। मुसलमान मज़हब के प्रवर्तक महात्मा श्री मोहम्मद साहब थे। इनके सम्बन्ध में पुराण में इस प्रकार वर्णन विद्यमान है।

मोहम्मद नाम का व्यक्ति पैशाच कर्मों में तत्पर है। हे राजन् तुम्हारा आर्य धर्म सर्व धर्मो से सर्वोत्तम

तस्मान्मूसलवन्तो हि जातयो धर्मदूषका:

गृहस्थ पैगम्बरः-(प्रथमः अध्यायः)

मोहम्मदस्य महिमा यदयं गृहस्थ पैगम्बर: मुस्लिमा: अस्य विशेषतां साभिमानं स्थापयन्ति। कथयन्ति अन्येषु पैगम्बरेषु एषा विशेषता नास्ति, इयमेव मोहमदस्य प्रशंसा वेविद्यते।

लेखक: कथयति एषा वार्त्ता मम हृदयं स्पर्शति।

(क) शंकराचार्य: बाल ब्रह्मचारी-देवस्वरुप:। वयं साधारणा: जना: शंकरस्य अखन्ड़ ब्रह्मचर्यं कथं अनुसराम:

है। मौहम्मद के अनुयायी लोग लिङ्गछेदी, शिखाहीन, श्मश्रुधारी, सदूषक, उच्चालापी, सर्व भक्षी हैं। बिना सूअर के सब पशु पक्षी खा लिया करते हैं। कुशाग्रों के समान मूसल से हो इनका संस्कार होगा। ठीक होंगे। इसलिये मुसलमान कौम धर्म कीं दूषक शत्रु है।

गृहस्थ दूदेवत (प्रथम अध्याय)

श्रीमान मौहम्मद जी की महिमा यह है कि वह गृहस्थ पैगम्बर हैं। मुसलमान आपकी इस विशेषता को साभिमान स्थापित करते हैं और कहते हैं कि अन्य देवदूतों में यह विशेषता नहीं है। इस प्रकार मौहम्मद

(ख) महात्मा बुद्धः विवाहं कृतवान् परन्तु वनो भूत्वा प्रस्थितः, युवावस्थायां, पत्नीं, बालान् त्यक्त्वा साधुः संवृतः। नाहं तस्य साधुतां इच्छामि, न भयि तादृशी शक्तिर्विद्यते, पैगम्बर ईसा महात्मा गृहस्थाश्रमाय न सामग्री सज्जीकृता। मोहम्मदः विवाहं कृतवान् न अपितु विवाहा न् विहितवान्। अनेकधाः विवाह कृताः ? विधवाभिः कुमारीभिः वृद्धाभिः युवतीभिः, नवयुवतीभिः विवाहान् रचितवान्। विवाहानन्दस्य वैचित्र्यं दृष्टवान्। तस्यभद्रमभद्रं न

की प्रशंसा विद्यमान है।

लेखक कहता है कि यह बात मेरे हृदय को अच्छी लगती है।

(क) शङ्कराचार्य बाल ब्रह्मचारी देवस्वरुप हुए। हम साधारण मनुष्य उनके अखण्ड ब्रह्मचर्य का अनुशरण कैसे कर सकते हैं।

(ख) महात्मा बुद्ध ने विवाह किया परन्तु वानप्रस्थ होकर युवावस्था में बाल बच्चे व पत्नी को छोड़ कर साधू हो गये। हम उसकी ऐसी साधुता को नहीं चाहते। हमारे में ऐसी शक्ति नहीं है।

(ग) हजरत ईसामसीह ने गृहस्थाश्रम का विचार

पठितमपितु अनुभवं कृतवान् । मोहम्मदः अनुभवी पैगम्बरो विद्यते ।

अस्य (इल्हामस्य) आकाशवाण्याः आधार, अनुभवैव । अनुभवः कटुरासीत् तथापि मधुपानवत् पीतवान् । कथं पीतवान् ? केवलं सर्वेषां लाभाय अन्येषां उपदेशाय । मोहम्मदस्य जीवनं शिक्षाप्रदं उपदेशपूर्णं व्यवहारयुक्तं चासीत् यथार्थतः मोहम्मदः पथ प्रदर्शकोभूत् । अहं गृहस्थः मम पैगम्बरोऽपि गृहस्थ स मम गुरुः अहं तस्य शिष्यः ।

ही नहीं किया ।

हजरत मौहम्मद साहब ने विवाह किया । न अपितु विवाह किये । अनेक प्रकार से किये ।

विधवाओं के साथ कुमारियों के साथ वृद्धाओं के साथ नवयुवतियों के साथ विबाह किये । विवाहों के आनन्द की विचित्रता को देखा । देखा हा नहीं बल्कि भलाई बुराइयों का अनुभव भी किया ।

हजरत मोहमद साहिब अनुभवी पैगम्बर थे । इनके इल्हाम का आधार अनुभव ही था । अनुभव कड़वा था तो भी शहद की तरह पी लिया । क्यों पिया सबके लाभ और दूसरों को उपदेश के लिये ।

उपनिषदि यान्यस्माकं सुचरितानि तानि सेवितण्यानि नोऽइतराणो । अनेन विधिना वयमद्य गृहस्था: "रंगोले छबीले रसोले" रसूलस्य जीवनाङ्ग भूतस्य गृहस्थाश्रमस्य उपरि स्नेह दृष्टिं पातायेतुमिच्छाम: । मोहमदोया-अमोहमदीया: सर्वेपि अस्य स्वाध्याये सम्मिलिता भवितुं शक्नुवन्ति । कथं हजरत मोहम्मदं मोहमदीया: अमोहमदोया: सर्वेऽपि अधिकुर्वन्ति सम्मानयन्ति च ।

मोहमद साहिब की जिंदगी शिक्षाप्रद उपदेशपूर्ण व्यवहार युक्त थी । यथार्थ में मोहमद साहिब पथ-प्रदर्शक थे ।

मैं गृहस्थ मेरा पैगम्बर भी गृहस्थ । वे मेरे गुरु मैं उनका शिष्य । उपनिषद में लिखा है कि गुरुजनों के गुणों को ग्रहण करना चाहिये और अवगुणों का परित्याग करें । इस विधि से हम आज अपने रंगीले रसोले रसूल के जीवनांग गृहस्थाश्रम के उपर एक स्नेह दृष्टिपात करना चाहते हैं ।

मुसलिम गैर मुसलिम सभी इस स्वाध्याय में सम्मिलित हो सकते हैं क्यों कि सभी उनका मान करते हैं और सब को उन पर अधिकार है ।

ब्रह्मचारी (द्वितीयः समुल्लासः)

मोहमदस्य प्रथमो विवाहः पञ्चविंशतिवर्षे सञ्जातः अतएव सनातनशास्त्रानुसारेणायं प्रथमे वयसि कुमारः आसीत्। अतएव अयं ब्रह्मचारी। अस्य विवाह करणाय अधिकारः आसीत्।

अस्मिन्संसारे एतादृशाः छिद्रान्वेषिणोंः जनाः सन्ति। ते व्यर्थं सज्जन स्वभावेषु वचनेषु कर्मसु शंकां कुर्वन्ति। वयं मोहम्मदं ब्रह्मचारिणं मन्यामहे।

परन्तु मोहम्मदः स्वयं कथयति एकदा एकस्मिन्स्थाने अहं रात्री मध्ये अजावयान् मेषान् केनचित्

ब्रह्मचर्य व्रत द्वितीय (समुल्लास)

हजरत मोहमद का प्रथम विवाह (२५) पच्चीसवें वर्ष में हुआ था। इस लिये वे सनातनधर्म शास्त्रानुसार प्रथम आयु में कुमार व ब्रह्मचारी थे इनको विवाह करने का अधिकार था। इस संसार में ऐसे छिद्रान्वेषी मनुष्य हैं। जो व्यर्थ में सज्जनो के स्वभावों में, वचनों में, कामों में शङ्का करते हैं। हम तो श्रीमान मोहमद जी को ब्रह्मचारी मानते हैं। परन्तु वे कहते हैं कि मैं एक बार किसी स्थान में रात्रि को किसी

कुरेशी बालकेन सह चारयामिस्म। अहं तं उक्तवान् यदि त्वं रक्षसि तर्हि अहं गच्छामि। यस्मिन्कमणि युवानः निशां यापयन्ति अहमपि तथैव कृत्वा समागच्छामि. एवमुक्त्वा स मक्कानगरं गतवान्। तत्र विवाहोत्सवस्य मधुरं भोजनं दृष्ट्वा भुक्त्वा तस्मै निद्रा समायाता। प्रातः कालो जातः।

मोहम्मदः कथयति इदं द्वि कर्मानन्तरं मम हृदयं पापकर्मणि न प्रचलितम्। (इदं कथनं म्योर साहब कृते हयाते मोहम्मदि ग्रन्थे विद्यते) वयं मोहम्मदस्य

कुरेशी लड़के के साथ भेड़ें चरा रहा था मैंने उस से कहा कि यदि तू मेरी भेड़ों को संभाले तो मैं जाऊँ और जिस भोग विलास में युवक दो रात्रि व्यतीत करते हैं ऐसा मैं भी करके आजाऊँ।

ऐसा कह कर मक्कानगर चले गए और वहाँ विवाहोत्सव के मधुर भोजन को खा पी कर सो गए। प्रातःकाल हो गया। मोहमद साहिब कहते हैं इस दो बार के कर्म के अतिरिक्त मेरा दिल कभी पाप कर्म में नहीं लगा। यह बात मयोर साहिब के बनाए हुए हयाते मोहम्मदी ग्रन्थ में विद्यमान हैं। हम मोहम्मद जी के कथन में विश्वास करते हैं क्योंकि वे

कथने विश्वसामः । कथं स आमीनः (सत्यवादी) उच्यते । वयं मन्यामहे तस्य हृदयं पापकर्मात् निवृतमासीत् ।

द्वि वारं शैतानेनः भ्रमितं, पथ भृष्टं कृतम् । परन्तु ईश्वर प्रेरणा हि सहायिका सञ्जाता । अस्माकं रङ्गीला रसूलः अस्मात् भ्रान्तगर्तात् पूर्णतया रक्षितः । तेन कर्मणा पापं न कृतम् । मोहम्मद पूर्ण ब्रह्मचारी आसीत् । पञ्चविंशति वर्ष पर्यन्तं तेन विवाहो न कृतः । स युव वस्थायाः आनन्दसागरतरङ्गलोलातः सुरक्षितः आसीत् ।

आमीन (सत्यवादी) थे, हम मानते हैं कि उनका हृदय पापों से हट गया था । दो बार शैतान ने बहकाया और पथभ्रष्ट किया । परन्तु ईश्वर की प्रेरणा ही सहायक हुई और हमारे रंगीले रसूल इस अन्धेरे गर्त से पूर्णतया बच गए । उन्होंने कर्म से पाप नहीं किया । मोहम्मद साहिब पूर्ण ब्रह्मचारी थे । पच्चीस वर्ष तक उन्होंने विवाह नहीं कराया । वे युवावस्था के आनन्द सागर की तरङ्ग लोला से सुरक्षित रहे ।

श्री माता खुदीजा (प्रथम सर्ग)

हम खुदीजा को माता खुदीजा ही कहेंगे । क्योकि

श्रीमाता खुदीजा (१) (प्रथमः सर्ग.)

वयं खुदीजा श्रीमाता खुदीजांहिकयिष्यामः। यतः तस्यायुः चत्वारिंशत् (४०) वर्षीया आसीत्, यदा सा मोहमदस्य सद्मनि अन्तःपुरे समायाता, परञ्च सत्यमदो ऽस्तियतः मोहम्मदः स्वयमेव तस्याः अन्तः पुरे गतवान्।

मोहम्मद पञ्चविंशति वर्षीय आसीत्। आकृत्या स्वाभावेन च सुन्दरः सुशीलः, उत्तमस्थानीयश्च। श्री खुदीजा विधवा कुरेश वंशीया मोहम्मदस्य सजातीया आसीत्। पुरा अस्या द्वौ पती आस्ताम् बालक-

---

उनकी आयु ४० चालीस की थी। जब वह हजरत मोहम्मद साहिब के अन्तपुर में पधारी। नहीं नहीं अपितु मोहम्मद साहिब खुदीजा के घर पहुंचे। मोहम्मद की आयु २५ वर्ष की और खुदीजा की ४० वर्ष की थी। मोहम्मद आकृति व स्वभाव से सुन्दर सुशील और उत्तम वंश के थे। श्री खुदीजा विधवा कुरेशी वंश कीं और मोहम्मद के जात की थीं पूर्व इसके दो पति मर चुके थे बाल बच्चे भी थे। मोहम्मद और खुदीजा की आयु २५ व ४० वर्ष की थी। खुदीजा के पास बहुत धन था और वह धनवती थी।

बालिकाभिः युक्ता आसीत् । मोहम्मदस्य खुदीजायाः साम्यं आयुः २५ : ४० वर्षीयंमभवत् ।

खुदीजायाः पार्श्वे बाहुल्यं धनं विद्यतेस्म । सा धनवती आसीत् । यदा व्यापारिणां समूहाः स्वव्यापारं कर्तुं देशान्तरं गच्छन्ति तदा एषाऽपि स्व व्यापारार्थं स्वसेवकान् (एजन्टान्) प्रेषयतिस्म । ईश्वरकृपया सपादः अर्धपादः लाभो भवति स्म तस्याः कृते ।

मक्कानगरनिवासिनः सर्वे तां जानन्ति स्म । अनया सह विवाहार्थं अनेक प्रस्तावाः चलन्त्रितैः प्रषिता आसन् । परन्तु एषा स्वधनेषु स्वस्थितिषु

जब व्यापारियों के समूह अपने व्यापार के लिये विदेश जाते थे । तब ये भी अपने व्यापर के लिये एजेन्टों को उनके साथ भेजती थी । ईश्वर की कृपा से सवाया ड्योढ़े का लाभ होता था । मक्कानगर निवासी सब उनको जानते थे । इसके साथ विवाह करने को अनेक युवकों ने प्रस्ताव भेजे थे ।

परन्तु ये अपनी दौलत और अपनी स्थिति में संतुष्ट थी । व्यर्थ में गृहस्थाश्रम के संकट को अपने सिर पर उठाना नहीं चाहती थी । एक वर्ष उसने मोहम्मद को एजेन्ट बनाकर व्यापारियों के साथ

सुसन्तुष्टा अवर्तत । व्यर्थं गृहस्थाश्रम संकटं स्व शिरसि स्थातुं नैच्छत् ।

एकस्मिन् वर्षे सा मोहम्मदं एजेन्टं कृत्वा व्यापारीणां सार्धकेन सह प्रेषितवती । मुहम्मद आमीन (सत्यवादो) आसीत् अतएव अनुमानात् अधिको लाभः प्राप्तः ।

सा खुदीजा स्वप्रसादोपरि स्थित्वा दूरादायन्तं उष्ट्रवाहकं दृष्टवती स कः आसीत् मोहम्मद एव । मुहम्मदेनागत्य व्यापारस्य गणितं दत्तम्, स्वकीयं पारिश्रमिकं गृहीत्वा प्रस्थितः ।

व्यापार के लिए भेजा । मोहम्मद आमीन थे इसलिए अनुमान से भी अधिक लाभ हुआ । वह खुदीजा अपने मकान की छतपर बैठी थी दूर से आते हुए ऊंट सवार को देखा । वह ऊंट सवार कौन था ? हजरत मोहमम्द साहिब थे । उसने आकर व्यापार का हिसाब दिया अपना कमीशन लेकर चले गए । इस मोहम्मद के लज्जा युक्त नेत्र, स्वल्प भाषिता, स्वभाविक सुन्दरता, व्यापार की सत्यता, आडम्बर रहितता सरलता, मन वचन और कर्म में एकता इन गुणों से वृद्ध विधवा खुदीजा मोहम्मद पर मोहित हो गई ।

अस्य लज्जा युक्ते नेत्रे। स्वल्प भाषिता। स्वाभाविकी सुन्दरता। व्यापारस्य सत्यता। आडम्बर हीनता। सरलता मनसि वचसि कर्मणि एकता एतैः गुणैः वृद्धविधवा खुदीजा मोहम्मदोपरि मोहिता।

अनया निश्चितं अयं मम जीवनस्य सहायको भवेत्। खुदीजा देवी आचरेण शुद्धा आसीत्। जनाः तस्याः धनस्य सौन्दर्यस्य च पतङ्गा आसन् अत्र मोहम्मद विषये स्वयं पतङ्गी सञ्जाता पुनः का लज्जा आसीत्। या ताँ पतन्तीं दृष्ट्वा प्रकाशिता सती परांगमुखीं भवेत्

खुदीजायाः पिता जीवतिस्म। अतः सा शङ्कावती

उसने निश्चय किया कि वे मेरे जीवन के सहायक बनें। खुदीजा देवी आचार व्यवहार से शुद्ध थी। युवकगण उसके धन और सुन्दरता के पतंग (इच्छुक) थे। यहाँ मोहम्मद के रूप पर स्वयं पतंगी बन कर गिरी। फिर कौन सी लज्जा थी जो उसको गिरती देख कर प्रकट रूप से रोक सके। खुदीजा के पिता जी जीवित थे। उससे उसको भय था। कहीं यह इस कार्य में बाधक न हो। ऐसा सोच कर उस खुदीजा ने इस कार्य्य के लिए एक प्रीति भोज की व्यवस्था

आसीत् । स अस्मिन्मार्गे बाधकोन भवेत् इति कृत्वा अस्मिन्नवसरे प्रीति भोजनस्य व्यवस्था कृता खुदीजया निमन्त्रिताश्च स्व कुटम्बिनः ।

अस्मिन् प्रीति भोजे मदिरा पानस्य वाहुल्येन व्यवस्था आसीत् । खुदीजायाः पिताऽपि अत्र सम्मिलितः । आवश्यकतातः अधिका पीता वृद्धेनानेन । उन्मत्तः जातः । अस्यावसस्य सर्वे प्रतीक्षमाणाः आसन् । तां तं च विावहवस्त्राणि अच्छादयामासुः । इत्थं खुदीजायाः निकाहः (विवाहः) संवृतः ।

तस्याः पिता मदीरा पानतः मुक्तो भूत्वा स्वस्थोऽ

की । अपने और मोहम्मद के परिवार के मनुष्यों को निमन्त्रित किया । इस भोज में मदिरा पान का बहुत बड़ा प्रबन्ध था ।

खुदीजा का पिता भी इसमें सम्मिलित था । इस वृद्ध ने आवश्यकता से अधिक शराब पी ली और बेहोश हो गया । इस अवसर की सब प्रतीक्षा कर रहे थे । मोहम्मद और खुदीजा को विवाह के वस्त्र पहिना कर निकाह पढ़वा दिया । शादी हो गई । अब उस का बाप होश में आया तो हक्का बक्का रह गया । परन्तु पक्षी पिन्जरे से निकल कर उड़ गया

भूत् । तदा तद् विवाह कार्य्यं दृष्ट्वा चकितो भवत् परन्तु पक्षि पञ्जरात् निसृत आसीत् । सर्वैः परिचितैः वृद्धपुरुषैः अनुमोदितः स्वीकृतोयं विवाहः तत्पित्रापि मूकभावेन स्वीकृतः । अस्तु मोहम्मदः वरो भूत्वा माता खुदीजायाः पतिरभवत् । तस्याः धनस्य जीवनस्य स्वामी संरक्षको संवृतः ।

बाल्य काले निर्धनः आसीत् । चिरकाल पर्य्यन्तं मातुः ममतायाः सुखं न दृष्टम् । अनया धनवत्या वृद्धया सह विवाह करणेन उभौ वरौ लब्धौ । मोहम्मदः तां केनापि शब्देन सम्बोधयेत् परन्तु वयं तु

था । सब परिचित वृद्धों ने इस विवाह को स्वीकार कर लिया । इसलिये उस बुढ़े ने भी मूक भाव से स्वीकृति दे दी । इस प्रकार से मोहम्मद दुल्हा बन कर खुदीजा के पति बने ।

उसके धन और जीवन के स्वामी और संरक्षक हुए । मोहम्मद बाल्य काल में निर्धन थे और बहुत समय तक माता की ममता के सुख को नहीं देखा था । इस धनवती बुढ़ी के साथ विवाह करने से दोनों वरदान मिल गए । मोहम्मद खुदीजा को किसी भी शब्द से सम्बोधन करें । परन्तु हम तो उसको माता

तांमातरं कथिष्यामः । सा अस्मदीया माता । आर्य शास्त्रेषु वानप्रस्थे कृते स्वपत्नी माता भवति । वृद्धा सर्वाणां माता प्रोच्यते अयं विवाहः माता खुदीजायाः तृतीयः आसीत् :

माता खुदीजा (२) अध्यायः

माता खुदीजातः मोहमदस्य षड् संतानानि संजातानी । तेषु द्वौ पुत्रौ चतस्रः कन्यकाः आसन् । प्रथम पुत्रः कासिमः द्विवर्षीयो भूत्वा मृतः । द्वितीयोऽपि अत्यन्त बाल काले यममन्दिरं गतवान् । (सीरतुल्नकी मोंलान्दा शबली कृते दो वित्तते) ।

हो कहेंगे । वह हमारी माता है । आय धर्म शास्त्रों में वानप्रस्थियों के लिये स्व पत्नी भी माता होती है । आर्यवर्त में वृद्धा माता को दादी कहा जाता है । यह विवाह माता खुदीजा का तीसरा विवाह था ।

माता खुदीजा (द्वितीयः सर्ग)

माता खुदीजा से मोहम्मद को छः संतान हुई दो पुत्र चार कन्याऐं थी । प्रथम पुत्र कासिम दो साल का होकर मर गया, दूसरा पुत्र अति बाल काल में परलोक सिधार गया था ।

डाक्टर वैद्यनां सम्मति रेषा यत् नारी (४०) चत्वारिंशत् (४५) पञ्च चत्वारिंशत् वर्ष पर्य्यन्तं संतान मुत्पादयति । परन्तु अस्यामायुषि उत्पन्नाः बाला. चिराय न जीवन्ति । तातपर्य्यमदोस्ति यत् यदि सन्तानाय विवाहः करणीयः तर्हि एषां आयुः न समाचीना अनुपयुक्ता । अपरञ्च खुदीजायाः एषा आयुः विवाह करणाय सन्तानाय न उपयुक्ता आसीत् ।

"योगी युञ्जीत सततम्"

मोहम्मदस्य एकान्त वासोतीव रुचिकरः संजातः । ते विचार सागरे सदा निमग्नाः भवन्ति । पर्वतेषु

(सीर तुल्न की मोंलान्दा शबली कृत ग्रन्थ में यह लेख विद्यमान है ।) डाक्टर हकीम वैद्यों का यह मत है कि ४०, ४५ वर्ष की औरत सन्तान उत्पन्न करने में असमर्थ होती है यदि उत्पन्न हुए तो शीघ्र मर जाते हैं । तात्पर्य यह है कि यदि सन्तान उत्पन्न करनी है तो आयु ठीक नहीं है । दूसरी बात यह है कि श्रीमती खुदीजा की ४५ वर्ष की आयु विवाह करने और सन्तान उत्पन्न करने की उपयुक्त न थी ।

योगी युञ्जीत सततम्

मोहम्मद को एकान्त वास अत्यन्त रुचिकर था ।

ग्ररण्येषु विस्तृत क्षेत्रेषु रेगेस्थानेषु मरु प्रदेशेषु गृहस्थ कोणेषु गत्वा स्थित्वा सीदति स्म। तत्र स्वात्मना बडबडायते मनसा मुखेन च वार्ता कुर्वन्तिस्म। ग्रय-मेव मोहम्मदस्य पैगम्वरत्वस्य ग्राघारः मूलमासीत्।

यदि जीविकायाः चिता स्यात् तर्हि एषा स्व-तन्त्रता कुतो लब्धा भवेत्। ग्रपरञ्च पैगम्बरत्व प्रचारः कथं जायेत खुनीजायाः पाणीग्रहणेन मोहम्मद-स्य एतादृशीदैवी प्रेरणा प्राप्ता तथाच इदृशी वेला समुपस्थिता। ग्ररब देशे पापं भवति स्म। भयङ्कराणि पापानि जायन्ते।

वे सदा विचार सागर में निमग्न रहते थे। पर्वत, ग्ररण्य, विस्तृत क्षेत्र रेगिस्तान, मरू प्रदेश, घर के कोने ग्रादि स्थानों में बैठ कर ग्ररब देश की दशा पर रोया करते थे, मुख से बड़बड़ाते ग्रौर मन में बात करते थे। यही दशा मोहम्मद के पैगम्बर होने की ग्राधार था। यदि जीविका की चिन्ता होती तो यह स्वतंत्रता कहाँ से मिलती, ग्रौर पैगम्बर होने का प्रचार कैसे होता, धनवती खुदीजा के साथ शादी करने से मोहम्मद के लिये ऐसी दैवी प्रेरणा मिली ग्रौर ऐसा ग्रवसर प्राप्त हुग्रा। ग्ररब देश में बड़े बड़े

मोहमदस्य हृदयं पुण्य विधारैः परिपूर्णमासीत्। अरबदेशीयाः मूर्तिपूज्यकाः आसन्। मोहमदेन विस्तृत क्षेत्रषु विस्तृत गगनेषु काचित् महतो शक्तिः अनुभूता। अस्मै विश्वासः समुत्पन्नः परमात्मा एक एव वेविद्यते। तथा च ईश्वरः अकायावयवादि रहितः इति निश्चितं तेन। खुदीजायाः गुलाम दास सेवकेषु कश्चित् ज़ैद नामा ईसाई सेवकः आसीत्। तेन सह मोहम्मदस्य वार्तालापः संजायते। स ईसाई धर्मानुसारं मोहम्मदाय विश्वासं कारयति। मोहम्मदस्य जैदः अतिस्नेह पात्रं संजातः। खुदीजातः अयं गुलामः ज़ैदः स्वसेवायै याचितः प्राप्तश्च।

पाप होते थे। और भयंकर भी।

मोहम्मद का हृदय पुण्य विचारों से परिपूर्ण था। अरब देश वाले मूर्ति पूजक थे। मोहम्मद ने विस्तृत क्षेत्र और विशाल गगन में कोई महती शक्ति का अनुभव किया कि परमात्मा एक ही है और ईश्वर का आकार अवयवादिक नहीं है ऐसा मोहम्मद को विश्वास हो गया। खुदीजा के गुलामों में एक जैद नाम का ईसाई गुलाम (सेवक) था। उसके साथ मोहम्मद का वार्तालाप होता रहता था। वह ईसाई धर्मानुसार मोहम्मद का विश्वास करता था। जैद

खुदीजायाः कुटम्बिषु रिस्तेदारेषु एतादृशाः पुरुषाः अपि आसन् ये ईसाई धर्म्मं जानन्ति स्म। तैः मोहम्मस्य हृदयोत्साहान् पातयितुं महतीबाधा कृता। मोहम्मदस्य विश्वासः संजातः यत् सांसारिक मनुष्याः प्रतिदिनंपापैः लिप्ता भवन्ति।

मोहम्मदः मनुष्याणां एतादृशीं दशां दृष्ट्वा सीदित स्म। अस्य हृदये महती पीड़ा जायते। या पीड़ा अरबीभाषायां कदाचित् कदाचित् मनोहरि कवित्वरूपेण निसृत्य वेविद्यन्ते। ता एव कुरानस्य प्रथमा श्लोकाः सन्ति। ये श्लोकाः आयतें अज्ञात कारेणेन

मोहम्मद का अतिस्नेह पात्र हो गया था। खुदीजा से मोहम्मद ने अपनी सेवा के लिये इस जैद गुलाम को माँग लिया, और उसने उसको दे दिया।

खुदीजा के रिस्तेदारों (कुटम्बियों) में ऐसे बहुत व्यक्ति थे जो ईसाई धर्म को जानते थे। उन्होंने मोहम्मद के हृदयोत्साहों को गिराने का पूर्ण प्रयत्न किया। परन्तु मोहम्मद को विश्वास हो गया था कि सांसारिक मनुष्य प्रतिदिन पापों से लथपथ ही रहे हैं। मोहम्मद मनुष्य की ऐसी दशा देख कर रोते थे। उनके दिल में बड़ी पीड़ा होती थी। ये पीड़ा अरब भाषा में

कुरानस्य अन्तिम भागे वर्तन्ते।

येषु उद्वेगः ओजस्विता सत्यता निष्कामयाचना दरीदृश्यन्ते। मोहम्मदस्य उत्साहो वर्धते धैर्य्यस्य उपायं न दृष्ट्वा अन्ततः चिन्तितम् यद् आत्महत्या करणीया। कथमनेन रोदनपरक जीवनेन को लाभः।

अत्र खुदीजायाः वृद्धता संरक्षिका संजाता। यदि अन्या युवताभार्याभवेत् तर्हिएताम् उन्मत्तं अवगच्छति मोहमदं त्यक्त्वा पलायति कम्पति अन्यानपि काम्पयति। खुदोजया मोहमदाय धैर्यं प्रदत्तम्। मोहमदस्य मनसि शङ्का आसीत्। ममोपरि प्रेताः भूताः जिन्नाः तंत्र

कभी कभी मनोहर कविता के रूप म निकलती हैं ये कविता ही कुरान की प्रथम आयतें हैं ये आयतें किसी अज्ञात कारणवश कुरान के अन्तिम भाग में विद्यमान हैं। इन आयतो में उद्वेग ओजस्विता सत्यता निष्काम याचना दिखाई देती है। मोहम्मद का उत्साह बढ़ रहा था धैर्य का उपाय न देख कर अन्त में आत्म हत्या का निश्चय किया, इस प्रकार रोने पोटने के जीवन से क्या लाभ।

यहाँ पर श्री माता ख्दीजा का बुढ़ापा संरक्षक हुआ। यदि कोई और युवती भार्या होती तो डर

कुर्वन्ति । इदंइल्हामं नास्ति शैतानस्य कर्म विद्यते । खुदोजया तान्त्रिकैः परीक्षा कारिता । नेदं भूतप्रेतत्व अपितु देवदूताः सन्ति एतेषां संदेशाः सत्याः सन्ति-इति मोहम्मदाय विश्वासः प्रदत्तः ।

तदा मोहमदेन उक्तमहं संसारे परिवर्तनं करिष्यामि नवीन युगं स्थापयिष्यामि । अन्यथा जीवनस्य समाप्ति करिष्ये । खुदीजा संसार परिवर्तन विचारान् प्रसन्नतया स्वीकृतवती । सा स्वयं अस्य नवीन संप्रदायस्य सहायका संजाता । यस्य नवीनमत स्थापनस्य महती काङ्क्षा मोहमदस्य मनसि आसीत् (कससुलम्बिया ग्रन्थे) ।

जाती औरों को भी डराती, मोहम्मद को तलाक देकर भाग जाती । खुदीजा ने मोहम्मद को धीरज बन्धवाई । उसके मन में शङ्का थी कि भूतप्रेत जिन मुझ पर तन्त्र करते हैं । यह इल्हाम नहीं है शैतानी हरकत है । खुदीजा ने जादू टोहने वाले तान्त्रिकों को बुलाकर परीक्षा करवाई, और मोहम्मद को विश्वास दिलाया । कि ये भूत प्रेत और शैतान कर्म नहीं है । अपितु फरिश्ते (देवदूत) हैं । इनके संदेश सत्य और खुदा का कलाम हैं । तब मोहम्मद ने निश्चय किया

ईलहाम समये मोहमदाय महत्कष्टं भवति तन्मुखात् फेना: (झाग) निस्सरन्तिस्म संपूर्णे शरीरे श्वेदा: जायन्ते । बहिरंग ज्ञानमपि न भवति । अनेक जना: विचारयन्ति इदं मृगी रोगस्य लक्षण मासोत् । मोहमद: तस्मिन्काले रूग्ण: जायते । खुदीजा तस्य सेवां श्रुशुषां करोतिस्म । तस्य देहं वस्त्रेण आच्छादयति । जलकणेन वारिबिन्दु सिञ्चनेन तं सावधानं करोतिस्म । बुखारी ग्रन्थे अध्याय अल्वही ।

मोहमदीय पैगम्बरताया: प्रथमा: अश्रुपाता: खुदीजाया: क्रोडे प्रवाहिता: आसन् । एषा कथा लम्वा-

---

कि मैं संसार का पलट दूंगा, नवीन युग स्थापित करूँगा । नहीं तो जावन समाप्त कर दूंगा ।

खुदीजा ने संसार के परिवंतन को प्रसन्नता से स्वीकार किया । वह इस नवीन मजहब की मददगार बनी । मोहम्मद के मत में इस नवीन संप्रदाय के चलाने की महती आकांक्षा थी (यह बात कससूल म्बिया ग्रन्थ में लिखो हुई है) इलहाम के समय मोहम्मद को वड़ा कष्ट होता था उनके मुख से झाग फेन निकलते थे, सारा बदन पसीने से तरबतर हो जाता था । होश हवास बिलकुल नहीं रहता था नंगे हो

यमानः विद्यते तात्पर्यमदोस्ति । यद् मोहमदः स्वात्मना वर्तमानं सम्प्रदायात् तन्नियमात् पृथक् जातः । तथास्व-भक्तान अपि प्रचलित धर्म्मा विद्रोहाय प्ररयतिस्म । अनेव हेतुना सर्वे जनाः विरोधिनः खिन्नाः बभूवुः ।

जनता मोहमदस्य हत्यायै शत्रुरूपेण सन्नद्धा-संजाता । अरबदेशे नियमोय वधस्य परिवर्तनं वधेन करणीयम् । कस्यचित् परिवारस्य कञ्चित् पुरूष अन्य परिवारस्य पुरूषः धातयति तर्हि अनयोः प्राणघातिका शत्रुता भवति ।

परन्तु अस्मिन् विषये मोहमदस्य सुमहत् कारण-

जाते थे पहने हुए कपड़े फाड़ कर फेंक देते थे । इस हालत को देखने वाले कहते थे । यह मृगी रोग के लक्षण हैं और कुछ नहीं । उस समय मोहम्मद बहुत रूग्ण होकर पड़े रहते थे । खुदीजा मोहम्मद की सेवा श्रुशुषा करती, नंगे को वस्त्र ओढाती उसके मुख पर पानी के छींटे देती और होश में लाता थी यह इल्हाम उतरने की कथा बुखारा ग्रन्थ के अल्वही अध्याय में है ।

मोहम्मद कीं पैगम्बरता के प्रथम अश्रुपात खुदीजा की गोद में प्रवाहित हुए । यह कथा बड़ी लम्बी है । तात्पर्य यह है कि मोहम्मद ने अपने आप

भासीत्। एकन्तु अस्य वृद्धः पितृव्यः तथा अन्यत् धनवतो खुदीजा। एनं एनां सर्वे वृद्धाः युवानः सम्मानयन्ति। मोहमदेन अनेकानि कष्टानि दुःखानि सह्यानि। परन्तु तस्य भार्या खुदीजायाः कृपया तस्य प्राणघातो न जातः अन्ततो गत्वा यदा मोहमदः (५०) पञ्चाशत् वर्षीयः संजातः। तदा खुदोजा परलोकवासिनो अभवत्। अस्य संरक्षकः पितृव्योपिः मृतः। सम्प्रति मोहमदः सारहितः विवशः मित्ररहितः असहायको भूत्।

को वर्तमान मजहब से और उसके नियमों से पृथक कर लिया। तथा अपने अनुयायियों को भी प्रचलित सम्प्रदाय से विद्रोह की प्रेरणा देने लगे।

इस कारण से अरब के लोग दुःखी और विरोधी हो गए। जनता मोहम्मद की हत्या के लिये शत्रुरुप से सन्नद्ध हो गई। अरब देश में यह नियम है कि खून का बदला खून से लिया जाता है। किसी परिवार का मनुष्य अन्य परिवार के मनुष्य की हत्या करता है तो दोनों परिवारों में सदा के लिये प्राणघातक शत्रुता हो जाती है। इस विषय मैं मोहम्मद के संरक्षण का महान् कारण था। एक तरफ उसका बूढ़ा चाचा दूसरी तरफ धनवती खुदीजा थी इन दोनों

उदासीनो भूत्वा (हिज़रत) देशत्यागं कृत्वा मक्कानगरं प्लायितः :

प्रियपाठकाः अनेन ज्ञास्यन्ति यद् खुदीजायाः जोवनं अस्य मोहमदस्य कृते कियत् लाभकर मासीत् : अस्याः मरणानन्तरं मोहमदस्य सद्मनि अनेकाः भार्य्याः सुन्दरतायाँ एका पेंक्षया एका अतिसुन्दरा आसन् । आनन्दोपि आरामोपि सर्वं संवृतम् । तथापि खुदीजायाः स्मृतिः मोहमदस्य हृदयान्नोपसरतिस्म ।

का बूढ़े और जवान सब मान करते थे ।

मोहम्मद को बड़े बड़े दुःख सहने पड़े । परन्तु उसकी भार्या खुदीजा की कृपा से मोहम्मद का प्राण-घात न हुआ । अन्ततो गत्वा मोहम्मद ५० (पचास) वर्ष के हुए । तब खुदीजा का अन्त काल हो गया । और उसका संरक्षक बूढ़ा चाचा भी मर गया । अब मोहम्मद साररहित विवश मित्र रहित असहायक हो गए । उदासीन हो हिजरत (देश त्याग) कर मक्कानगर को भाग गए, प्रिय पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि खुदीजा का जीवन मोहम्मद के लिये कितना लाभ दायक था । खुदीजा के मरने के बाद मोहम्मद के घर में अनेक भार्यायें आई एक से एक सुन्दरता में

प्रियतमायाः आयशायाः संभोगकालेपि तां दया-स्वरूपां क्षमावतीं मातृतुल्यां श्रीमती खुदीजां स्मरन्नास्ते। प्रतिक्षणं खुदीजा मोहमदं महापुरुषं कृतवती। (२५) पञ्चविंशतिं वर्षं पर्य्यन्तं यावत् खुदीजा। तस्य भार्य्या भूत्वा जीवति स्म तावत्पर्य्यन्तं अनेन द्वितीय विवाहस्य विचारोपि न कृतः।

आर्य धर्मशास्त्रेषु गृहस्थाश्रमस्य आयुः पञ्च-विंशति (२५) वर्षाणि निश्चितानि सन्ति। अयं कालः

बढ़ चढ़ कर थी। घर में आराम आनन्द सब कुछ था। खुदीजा की याद मोहम्मद से दिल से दूर नहीं होती थी। प्राण प्यारी आयशा के संभोग काल में भी उस दया स्वरूपा क्षमावती मातृ तुल्या श्रीमती खुदीजा को स्मरण करते रहते थे।

प्रतिक्षण खुदीजा ने मोहम्मद को महान् पुरुष बनाया, २५ वर्ष तक खुदीजा उसकी भार्या बन कर जीवित रही। इसने दूसरी शादी का विचार भी न किया। आर्य धर्मशास्त्रों में गृहस्थाश्रम आयुः २५ पच्चीस वर्ष की निश्चत की है। यह २५ वर्ष मोहम्मद ने सदाचार से व्यतीत किये। इसलिये हम इनको आर्य गृहस्थाश्रमी कह सकते हैं। यदि मोहम्मद

मोहमदेन सदाचारेण याषितः । अतएव एतंवयं आर्य-गृहस्थाश्रमिणं कथयितुं शंकुनः । यदि मोहमदः खुदी-जया सह विवाहं अकृत्वा दत्तक पुत्रत्वं स्वीकरोति चेत् । तदा तत्कार्य्यं आर्य्यधर्म शास्त्रनुसार मभूत् ।

एकदा केनचित् मुस्लिम पण्डितेन (मौलवी) सह वार्तालापं कुर्वन्तो वयं एवं कथितवन्तः । श्रुत्वेव आश्चर्य सागरे निमग्नः । किं स्त्री माता अपि भवितुं शक्नोति । आम् ध्रुवं सत्यमेतत् तु । आर्य्यवर्ते कस्य-चित् वृद्धस्य पत्नीं मातरं गदिष्यामः । सा मेधायां अवस्थायां अनुभवेषु दर्शनेषु अनुभव कार्य्येषु माता खुदीजा एव दरीहश्यते ।

खुदीजा से विवाह न कर उसके दत्तक पुत्र बन जाते तो सर्वोत्तम होता, और आर्य धर्म शास्त्रानुसार हो हम एक बार एक मुस्लीम मौलवी के साथ वार्तालाप करते हुए । हमने यह वात कही वह सुनकर चकित रह गए, हमसे कहने लगा क्या स्त्री भी माता हो सकती है । हाँ ध्रुवं सत्य है । आर्यावर्त में किसी भी वृद्ध की पत्नी को माता कहते हैं और स्वयं पुत्रवत् आचरण करते हैं । इस लिये हम खुदीजा को माता ही कहेंगे । वह बुद्धि में, अवस्था में, अनुभवों में, देखने

पुत्री आयशा अध्याय नं० (१)

खदीजाया: परलोक गमने त्रयोपि मासा न व्यतीता आसन् यद् मोहमदेन अनुभूतम्–संसारे स्मिन् भार्य्यातिरिक्तकानि चिद् वस्तूनि प्रियतमानि न जायन्ते। तस्यै कष्टं प्रतिदिनं वर्धते। धैर्य्यप्रदानायगृहे कोपि नास्ति। अलम्। स अन्यां भार्य्यां अन्वेषयति स्म।

माता सुदा सुकरातस्य पत्नी आसीत् उभौ इमौ पति: पत्नी मोहमदमतं स्वोकृत्य मुस्लिमौ जातौ।

में अनुभूत कार्यों में माता खदीजा ही दिखाई देता है।

पुत्री आयशा (अध्याय नं० १)

खुदीजा की मृत्यु के तीन मास भी व्यतीत नहीं हुए थे कि मोहम्मद ने अनुभव किया कि इस संसार में भार्या के अतिरिक्त कोई वस्तु प्यारी नहीं है। मोहम्मद को स्त्री के विना चैन न था प्रति दिन कष्ट बढ़ रहा था धैर्य बन्धाने को घर में कोई न था। बस वह औरत की तलाश में निकले। माता सुदा सुकरात की पत्नी थी यह दोनो पति पत्नी मोहम्मद के मजहब को स्वीकार कर मुसलमान हुए थे। इस अपराध में दोनों

अपरञ्च अनेन अपराधेन दण्डोपि महान् प्राप्तः। अरबदेशनिवासिभिः उभौ उद्वेजितौ पिड़ितौ स्वदेश त्यागाय बाधितौ प्लायितौविदेशेस्थित्वा स्वजीवनं यापित।

यदा मोहमदेन मूर्तिपूजकैः सह (कुफ्फारैः) मित्रता कृता। तेषांमूर्तिनांसंमानम् स्वीकृतं कीर्तिरपि सम्मानिता (एतद् वृतान्तं शरह बुखारी सप्तमेभागे जलालेन भाष्य पृष्ठे ४५ तमे द्वीतीय भागे मदाल्ह कुल तञ्जील पृष्ठे २५६। कबीर भाष्येपि) यद्यपि पश्चात् अस्मै

को महान् दण्ड भोगना पड़ा था। अरब निवासियों ने बहुत सताया स्वदेश छोडने को बाधित किया। वे दोनों चुपचाप भागे और विदेश में रह कर जीवन व्यतीत करने लगे। अब मोहम्मद ने मूर्ति पूजक काफिरों के साथ मित्रता करली उनकी मूर्तियों का सम्मान किया और उनके गुणानुवाद गाने लगे। यह सब वृतान्त शरह बुखारी ससद भाग में जलालीन भाष्य पृ० ४५ में तथा मदाजी कुल तञ्जील पृ० २५६ में और कबीर भाष्य में भी है।

यद्यपि बाद में इसमित्रता के कारण मोहम्मद को बड़ा कष्ट हुआ। मित्रता करने की आकाशवाणी

मोहमदाय अनया मित्रतया महत् कष्टं जातम् ।

एनां आकाश वाणीं शैतानस्य कथयित्वा मोहमदः स्वमित्रता प्रतिज्ञां खण्डितवान् । तदा देशनिष्कासितैः सर्वजनैः सह सुकरात सूदा अपि समायातौ । अत्र आगत्य सुकरातः मृतः । सूदा विधवा जाता ।

सूदायाः विश्वासस्य महत् प्रमाणमिद मस्ति । यत् तया इस्लामपालनाय देशत्यागोपि स्वीकृतः । एकतः एषा पत्युराज्ञाकारिणी अथ च स्वधर्म्म रक्षायै प्राणदानेपि सन्नद्धा अभवत् । एनदृशी भार्य्या मोहमदाय प्राप्तुं कठिना आसीत् ।

इल्हाम को शैतानी बता कर सैकड़ों कस्में खाकर को हुई प्रतिज्ञा शर्त और मित्रता को तोड़ दिया शक्ति वढ़ा कर युद्ध का वाजा वजा दिया । तब देश निकाले गए सब मुसलमानों के साथ सुकरात् सदा भी आ गए । यहां आकर सुकरात मर गए । सूदा विधवा हो गई । सूदा के विश्वास का बड़ा प्रमाण यह था कि उसने इस्लाम के पालने के लिए देश त्याग भी स्वीकार किया था । एक तरफ पति की आज्ञा कारिणी थी दूसरा तरफ स्वधर्म की रक्षा के लिये भी प्राणदान को तैयार थो । ऐसी भार्या मोहम्मद को मिलना कठिन

इस्लाम कृपया तेन तया सह विवाहः कृतः। वृद्धस्य विधवया सह विवाहे किमपि अनुचितं नासीत्। उभौ पारस्परिकौ परमस्नेहपात्रौ भवितु मर्हतः। तौ उभौ स्नेहाधिकारं पालयतुं समर्थयतः। खुदीजायाः स्थानं का ग्रहीतुं समर्था तथापि या मोहमदस्य पुन विवाहेच्छा आसीत् सा पूर्णतां गता।

गृहं भार्य्या शून्यं न भूतम्। या विवाह काले (४०) वर्षीया। अस्माभिः पुराक्तं यत् गृहस्थाश्रम नियमानुसारेण मोहमदः पंचविंशति (२५) वर्षपर्य्यन्तं एकयया भार्य्यासह जीवनं व्यतीतवान्। सा भार्य्या

था। इस्लाम की कृपा से उसने उसके साथ शादी कर ली। वृद्ध विधवा के साथ विवाह कुछ भी अनुचित नहीं था।

दोनों परस्पर स्नेह पात्र होने के योग्य थे। दोनों स्नेहाधिकार पालने को समर्थ थे। खुदीजा का स्थान कौन ले सकती थी तथापि जो मोहम्मद की पुन विवाह करने की इच्छा थी वह पूर्ण हुई। घर भार्या शून्य न रहा। सूदा विवाह के समय (४० चालीस) वर्ष की थी। हमने पूर्व लिख दिया कि गृहस्थाश्रम नियमानुसार मोहम्मद ने २५ वर्ष तक एक भार्य्या के

खुदीजापि द्विपत्युः विधवा आसीत् । मृत्यु समये (६५) पञ्चषष्टिः वर्षीया । अनया वृद्धया सह अस्य मोहमद स्य जीवनं सुखेन व्यतीतम् ।

एषावार्ता मोहमदस्य पवित्रतां साक्षयति । जरठ कोमलता प्रीतिः भवतेभ्यः उपासकेभ्यः वरदान मासीत् । तस्य सम्मतिः वर्तते यद् भार्य्याप्रीतिः पुरुषेभ्यः परोपकारस्य शिक्षां ददाति । कष्ट काले बल उपद्रवेषु संतोषं वर्धयति हृदयमुत्फूलयति । आत्मानं प्रसादयति । साम्प्रतमपि एतादृशाः अनेकाः कविवर्य्याः

साथ ही ज़ीवन व्यतीत किया । वह भार्या खुदीजा भी दो पतियों की विधवा थी । मृत्यु के समय ६५ वर्ष की थी । इस विधवा वृद्धा के साथ मोहम्मद का यह जीवन सुख से व्यतीत हुआ । इस बात में मोहम्मद की पवित्रता साक्षी देती है । बुढ़ी की कोमलता और प्रीति स्वाभाविक थी । ये प्रीति पुरूषों के लिये विशेषतः भक्तों के लिये, उपासकों के लिये वरदान थी । मोहम्मद की सम्मति है कि भार्य्या की प्रीति पुरूषों के लिये परोपकार की शिक्षा देती है । कष्ट काल में में बल, उपद्रवों में संतोष देती है दिल को फुलाती है । आत्मा को प्रसन्न करतो है ।

सन्ति ये नार्य्याः सौन्दर्य मेव मेव वर्णयन्ति ।

कार्य्येषु मन्त्री करणेषु दासी भोज्येषु माता शयनेषु रंभा
धर्मानुकुला क्षमया धरित्री षाड् गुण्यमेतद्धि पतिव्रतानाम् ।

पूज्यां देवीं सम्पादयन्ति । पवित्रतायाः मूर्ति-कल्पयित्वा उपमां वायुमण्डलं प्रेरयन्ति । एताषां हृदय पटलेषु मस्तिष्केषु प्रीतिपवित्रतायाः अधिकारं रचयन्ति । मोहमदस्य हृदये कवित्वं स्वाभाविक मासीत् । परन्तु खुदीजायाः जरठत्वे मोहमदाय युवती नार्य्याः स्मरणत्वं सुरतत्वं न लब्धम् ।

इस समय भी ऐसे अनेक कविगण हैं। जो स्त्रियों के सौन्दर्य का इसी ही तरह वर्णन करते हैं। पति के कार्य्यों में सलाह देने वाली मन्त्री, पति को भोजन कराने में माता के समान, शयन के समय प्रीति उत्पन्न करने वाली रंभा, धर्मकार्य में अनुकूल क्षमा करने में पृथ्वीवत् ये छः गुण पतिव्रता देवियों के होते हैं। पूज्यादेवी सम्पादित करते हैं। पवित्रता की मूर्ति बनाकर उपमा को वायु मण्डल में भेजते हैं। इन देवियों के हृदय पटलों पर मस्तिकों पर प्रीति पवित्रता का अधिकार रचते हैं। मोहम्मद के हृदय में कवित्व स्वाभाविक था। परन्तु खुदीजा के बुढ़ापे

कवित्व शक्तिः मृत्यु शय्यां लब्धवती संसारस्य सुन्दर्यः मस्तिष्कात् पलायिता आसन् । आकाशीय अप्सराः स्वप्न संसारे प्रतिदिनं समागच्छान्तिस्म । तदनु मोहमदस्य अनेके विवाहाः संजाताः । तस्य हृदयं भोगविलास व्यभिचारेण अम्लमय जातम् । उदासीना उत्पन्ना ।

अतएव तदनु आकाश वाण्याः (इल्हामे) हूररेषु (अप्सरा) वर्णनेषु तादृशं सौन्दर्यं न दृश्यते यादृशं खुदीजा जीवन काले कुरान श्लोकेषु देदीप्यते ।

के कारण मोहम्मद को युवतियों का स्मरण और भोग विलास प्राप्त न हुआ। कवित्वशक्ति मृत्यु शय्या को प्राप्त हुई। संसार की सुन्दरियां मस्तिष्क से पलायमान हो गई आकाश की अप्सरायें (जन्नत कीहूरें) स्वप्न संसार में रात दिन आने लगीं।

तत्पश्चात् मोहम्मद ने अनेक शादीयां की। उसका दिल भोग विलास के व्यभिचार से खट्टा हो कर उत्तर गया। और उदासोनता उत्पन्न हो गई। इस-लिये आकाशवाणी इल्हाम में हुरों के वर्णन में ऐसी सुन्दरता नहीं दिखाई दे रही है जैसे खुदीजा के जीवन काल में कुरान की आयतों में चमक रही है।

एतत्सर्वं कुरान सूरत दखान अध्याये विद्यते । अपरञ्च कुमारी कन्यका गौराङ्गना लम्बायमाना नेत्रा कठिन कुचा उन्नतवक्षा सुन्दरकपोला आदि वर्णन मोह· मदः कृतवान् । यथार्थतः नार्य्याः सुन्दरत्वं कुमारी काले एव प्रतीयते ।

अत एव मोहमदेन एका कुमारी कन्यका परि- णीता । सा आयशा आसीत् । एषा अबूबकरस्य पुत्री बभूव । अबुबकरः मोहमदस्य बाल सखा स्नेही । एतयोः अनुमानतः आयुषि समानता आसीत् । द्विवर्षा-

---

ये सब बातें कुरान सुरत दखान के अध्याय में विद्य- मान है । अथवा मोहम्मद ने कुमारी कन्यका, गौरा- ङ्गना. लम्वायमान नेत्रा, कठिनकुचा, उन्नतवक्षा, सुन्दरकपोला आदि आदि वर्णन किया है । यथार्थ में स्त्री की सुन्दरता कुमारी अवस्था में हीं चमकती है । इसलिये मोहम्मद ने एक कुमारी कन्यका के साथ शादी की । वह किशोरी आयशा थी यह कन्या आयशा अबुबकर की पुत्री थी । अबुबकर मोहम्मद का बाल सखा और स्नेही था । लग भग दोनों की आयु समान थी । दो वर्ष मोहम्मद वड़े थे और अबुबकर दो वर्ष छोटे थे । वह मोहम्मद पर विश्वास

धिको मोहमदः द्विवर्षन्यूनः अबुबकरः । स मोहमदं विश्वसति विना ननु नच शीघ्रतया मोहमद सम्प्रदाये सम्मिलितः आसीत् । मोहमदेन स्वहृदये आयशां परिणेतुं रक्षिता । तस्मिन् काले आयशा षड् सप्त वर्षीया आसीत् ।

(इदं मुजार जुल नब्बूत पृ० २८ । अ० ४० तमे) मोहमदेन एषा कन्या अल्पायुष्मती आयुषि अस्य पौत्री आसीत् कथं विवाहिता । केचन जनाः एवं विचारयन्ति अबुबकरं मोहमदः स्वकुटम्बिनं कर्तु मिच्छति नैतत्-

---

करता था । बिना ननु नच किये मोहम्मद के सम्प्रदाय में शीघ्र सम्मिलित हो गया था ।

मोहम्मद के मन में आयशा से शादी करने की लग्न लगा थी । उस समय आयशा ६–७ वर्ष की थी (यह बात मुआर जुल नब्बूत, अ० ४० पृ० २८ पर है) । मोहम्मद ने इस छोटी उम्र की कन्यका से शादी क्यों की । जो उम्र के लिहाज से उसकी पोती लगती थी । कोई कहते हैं कि मोहम्मद अबुबकर को रिस्तेदार बनाना चाहता था । यह कथन ठीक नहीं मिथ्या है । मोहम्मद के मजहब को अबुबकर ने स्वीकार किया था । उसको देवदूत रसूल मानता था ।

सीचीनं कथं प्रथमन्तु अबुबकरः मोहमदमतं स्वीकरोति स्म तं देवदूतं रसूलं मानयति तस्य आदेशं परमात्मनः आज्ञां उररीकरोति।

इत्थं स्वसमीपस्य सम्बन्धस्य आवश्यकतैव नास्ति परन्तु अयं धार्मिक सम्बन्धो निर्बल आसीत् तर्हि अस्य सबलत्वकरणाय समीचीन उपायोस्ति यत् अबुबकरस्य पुत्रीं स्वकीयां दत्तकपुत्रीं कृत्वा तस्याः आयशायाः विवाहं केनचित् सुन्दरेण युवकेन सह विधाय कन्यादान मपि कृत्वा आयशायाः पिता मोहमदः

मोहम्मद के हुकम को खुदा का कलाम स्वीकारता था इस प्रकार से रिश्तेदारी की आवश्यकता ही न थी। यदि यह धार्मिक सम्बन्ध निर्बल था तो इसको सबल बनाने का सरल उपाय यह था कि अबुबकर की पुत्री आयशा को अपनी दत्तक पुत्री बना लेता। और उस आयशा का विवाह किसी सुन्दर युवक के साथ करता और कन्या देकर उस आयशा कन्या का मोहम्मद पिता बन जाता तो अतीव सुन्दर होता।

अरब निवासी लोग पवित्र सम्बन्ध से अपरिचित थे जो सम्बन्ध जन्मगत से भी बलवान और सुखदायक है। सर सैयद अमीर अली लिखते हैं कि

अभविष्यत् । तर्हि अतीवं सुन्दरं स्यात् ।

अरबनिवासिनः कृत्रिमः परन्तु जन्मगत सम्बन्धतः अधिक बलवत्तरः प्रसन्नतादायकः सम्बन्द्धः इति विषये अपरिचिताः आसन् । सर सैयदः अमीर अली लिखति अरबदेशे कापि नारी पत्नी भूत्वा पुरूषस्य पार्श्वे स्थातुं शक्नोति नान्यसंबन्द्धेन ।

मोहमदः स्वकीय राजनीतेः आवश्यकतया विवशो भूत्वा क्रमशः अनेकान् विवाहान् चकार ।

ओह प्रियतम भारतवर्ष ? पवित्रतायाः नक्षत्रं

कोई भी औरत हो अरबदेश में पुरुष की पत्नी बन कर ही रह सकती है। और कोई सम्बन्द्ध से नहीं। मोहम्मद अपना राजनीति की आवश्यकता से विवश था। अतएव उसने क्रमश अनेक विवाह किये। ओह प्रियतम भारतषे ? पवित्रताओं के. चमकते हुए नक्षत्र भारतवर्ष। प्राचीन आर्य्यों की प्राचीन सभ्यता के भारत ? तुझको बार बार नमस्कार है। क्योंकि भारतीय दुर्गादास, औरंगजेब की पौत्री शफीया उन्निसा को अपनी पुत्री बनाकर रक्षा करता है। शिवाजी के समक्ष युद्धसामग्री प्राप्त हुई गोलवानी की आसीरा राज पुत्री को लाया गया। शिवराज जी ने आसीरा

भारतवर्ष ? प्राचीन आर्य्याणां प्राचीन सभ्यताया: भारत ? त्वां भूयो भूयो नमस्करोमि । यत: भारतीय: दुर्गादास: औरंगजेबस्य पौत्रीं शफीय उन्निसां राजपुत्रीं युद्ध सामग्रीमध्ये प्राप्तां समक्षे समायातां कन्यादान दत्वा तस्य श्वसुर गृहे प्रेषितवान् ।

यदि श्रीमान् मोहमदोपि आयशाया: पितृसम्बन्द्धं स्थापयेत् । या आयशा पुत्री कृत्रिम कन्यका पुत्तलिका कन्दुक खेलन परा आसीत् । अतएव पिता पुत्री संबन्धोधिक: उपयुक्तो ऽभवत् । एवं स्यात् तर्हि अबु-

---

को पुत्रीं मान कर वस्त्र भूषण युद्धा दान देकर उसके ससुराल में सम्मान सहित भेज दिया ।

यदि श्रीमान मोहम्मद साहिब भी आयशा के साथ पितृ सम्बन्द्ध स्थापित कर लेते तो जो आयशा पुत्री खेल खिलौने गुड़िया गेंद खेलने वाली थी । उसके साथ मोहम्मद का पिता पुत्री का ही सम्बन्द्ध ठीक था यदि ऐसा होता तो क्या अबुबकर और मोहम्मद का अन्य निकटवर्ती सम्बन्द्ध होता परन्तु अरब देश निवासी यथार्थ में रक्त जनित रिस्ते की ग्रन्थी को ही बलवन्त मानते थे । अस्तु जो कुछ हो जैसे तैसे तीन साल गुजर गए, आयशा बेटी दश वर्ष

बकरस्य मोहमदस्य सम्बन्धः किमल्पनिकटवर्ती स्यात् परन्तु अरबदेशीयाः जनाः यथार्थतः रक्त-सम्बन्द्ध जनितां ग्रन्थीं हि बलवतीं मन्यन्ते । अस्तु किमपि स्यात् येनकेन प्रकारेण त्रिणिवर्षाणि व्यतीतानि आयशा दशवर्षीया संजाता ।

तदा मोहमदः मदीना नगरं निवासं कृतवान् । मस्जिदस्य एकस्मिन भागे तस्य गृहस्थाश्रमस्य सामग्री रक्षणाय कुटीरं निर्मितम् । अन्यस्मिन् पार्श्वे माला सूदा निवासिता । एकस्मिन् पार्श्वे पुत्री आयशायाः स्थातुं स्थानं रचितम् । अस्मिन् समये विवाहाणां नियमा निश्चिताः अभवन् ।

आयाशा स्व कृत्रिम कन्यका कन्दुकादीन् खेल सामग्रीं सदैव आनीतवती । ५३ त्रियंपाशत् वर्षीयो मोहमदोपि अस्या आयशायाः

==========================

की हो गई । तब मोहम्मद ने मदीना नगर में निवास किया मस्जिद के एक भाग में अपने गृहस्थाश्रम की सामग्री की रक्षा के लिये कमरा बनवाया । एक तरफ माता सूदा को बसाया दूसरी तरफ बेटी आयशा को रहने को स्थान बनाया । इस समय विवाह के नियम निश्चित किये ।

आयशा को अपने खेल खिलोने गुड़िया गेंद के साथ लाया गया । ५३ त्रेपन वर्ष का वह बुड्ढा मोहम्मद भी इस वेटी आयशा के साथ गुड़िया गेंद खेलने सम्मिलित होने लगा । ५३ वर्ष के बूढ़े का बच्ची के साथ खेलना अनुचित नहीं है । परन्तु वह खेलना अन्य सम्बन्ध से हो पिता दादा चाचा के रूप से न कि पति के रूप से । आयशा कहती है जब मैं ९ नव वर्ष की हुई । तब मेरी मां मेरा शृङ्गार कर मुझको हजरत मोहम्मद के कमरे में छोड़ कर चली गई । अन्य आदमी यार दोस्त भी चले गये । तब मेरे साथ मोहम्मद ने जबरदस्ती कर भोग किया मैं चिल्ला उठी

खेलने सम्मिलितो भवति स्म । ५३ वर्षीय वृद्धस्यबालकैः खेलनं नानुचितम् । परन्तु तत्खेलनं किमपि अन्य सम्बन्धेन भवेत् । नतु पति सम्बन्धेन ।

आयशा कथयति अहं नववर्षीया आसम् तदा मम माता माँ शृङ्गारयित्वा मोहमद पार्श्वे स्थापयित्वा गता अन्येपि जनाः निसृताः । हजरत मोहमदोमया सह रति क्रीडां (सुरतं) कृतवान् । आयशा आयुषि अल्पा तथापि बुद्धिमती आसीत् । यथा यथा आयुः एधते तथा तथा सा युवती अपि जायते आकृत्या सुन्दरी रत्नायां कोमलदेशः मधुररसनावती मेधावती आसीत् । कथनं कथनात्पूर्वमेव बोधवती ।

मोहमदस्य हृदयोपरि एषा नव युवती भार्या अधिकारं

और बेहोश हो गई । यह बात लाहौर मुद्रित तारवारीख मोहमदी में छपी हुई है ।

आयशा उम्र में छोटी थी परन्तु अक्ल में बहुत बड़ी थी । जैसे जैसे आयु बढ़ती गई आयशा पर जवानी चढ़ती गई । आकार में सुन्दर, बदन कोमल, जुबान रसीली, अक्ल तेज थी । कथन करने के साथ ही तात्पर्य को समझ लेती थी । मोहम्मद के दिल पर इस नव युवती भार्या ने अधिकार प्राप्त कर लिया । ऐसी ऐसी औरतें मोहम्मद के घर में पत्नी बन कर आईं जो देखने में आयशा की सुन्दरता को भी लजाती थीं । परन्तु आयशा ज्ञान विशेष के कारण सब सोतों में पटरानी साम्राज्ञी थी । मोहम्मद के मरण तक उसके गृह की स्वामिनी, मोहम्मद के हृदय और प्राण की अधिकारिणी आयशा ही थी ।

पुत्री आयशा (अध्याय नं० २)

अन्तिम बुढ़ापे की हालत में इस ६-७ वर्ष की बच्ची आयशा

कृतवती ईदृशी ईदृशी नार्य्यः मोहमदस्य गृहे पत्नी भूत्वा समायाताः। याः प्रकाशितसुन्दरतायां आयशां लज्जापयन्ति परन्तु आयशा ज्ञानविशेषतया सर्वासां सापत्ये साम्राज्ञी संजाता। मोहमदस्य मरणपर्य्यन्तं गृहवती मोहमदस्य हृदयप्राणस्य अधिकारिणी आयशा एव आसीत्।

पुत्री आयशा अध्याय नं० २

अन्तिमायां अवस्थायां एतावत्याः अल्पायुष्मत्याः बालिकायाः सार्द्ध विवाहकरणेन मोहमदाय महती आपत्तिरपि समायाता। अकिञ्चनायाः आयशायाः आचरणविषयेपि आक्षेपाः कृताः। अस्याः कीर्ति विषये शंका विहिता जनैः। (हदीस मुसल्लिम भाग षष्ठमे किताबुल तोबायाम् विद्यते) बनी मुश्तलक सीमायां मोह-

==========================

के साथ शादी करने के कारण मोहम्मद को बड़ी बडी बाधा और मुसीवतें आईं। बेचारी आयशा के आचरण के विषय में भी आक्षेप होने लगे। लोग उसको बदनाम कर शङ्का करने लगे। (हदीस मुसलिम बाब छ, किताब्बुल तोया में लेख है।) बनी मुस्तकल सीमा में मोहमद ने आक्रमण किया। नियमानुसारेण मोहमद की बेगमात भार्य्या समूह भी साथ गया। ऐसे अवसर पर मोहमद के नियमानुसार बेगमात् अपने अपने खेमों में सैनिकों से पृथक निवास करती थीं अनेक कारणों से हम इसका वर्णन आगे करेंगे। इस्लाम सम्प्रदाय में बुरका परदा और मुखाच्छादन की मर्य्यादा प्रचलित हो चुकी थी। मोहमद की भार्य्यायें भी लोगों की नजर से बचो रहें। अतः ऐसी व्यवस्था की थी। जब प्रस्थान का समय आता तब नौकर लोग खेमें के आगे पालकी रख देते और दूर चले जाते वे चुपचाप मुँह छिपा कर पालकी में बैठ जातीं और मजदूर आकर पालकियों को ऊँट की पीठ पर

मदेन आक्रमणं कृतम् । नियमानुसारेण अस्य भार्य्यासमूहः स्वकीयेषु २ वस्त्रपटगृहेषु (खेमाषु) सैनिकेभ्यः पृथक् भूता निवसन्ति ।

अनेककारणवशैः अस्य वर्णनमग्रे करिष्यामः । इस्लाम सम्प्रदाये अन्तर पटस्य मुखाच्छादनस्य (परदायाः) मर्य्यादापि प्रचलिता बभूव । मोहमदस्य भार्य्यासमूहः जनदृष्टिभिः पृथक् भूतो भवति । प्रस्थानस्य समयो भवति तदा वस्त्रपटगृहस्याग्रे पालकीं जनवाहिनीं स्थापयन्ति । याषु आगत्य ताः उपविशन्ति । सेवकाः समागत्य पालकीः उष्ट्राणां पीठोपरि संस्थाप्य प्रचलन्ति ।

एकदा युद्धात् परावर्तिताः तदावलोकनेन ज्ञातं आयशायाः पालकी रिक्ता वर्तते । मोहमदाय चिन्ता समुत्पन्ना । रात्रिः

==========================

रख देते और ऊँटों को लेकर सेना के साथ चल देते । एक बार जङ्ग से लौटे तो देखा कि आयशा की पालकी खाली है । मोहमद को चिन्ता हो गई । प्रतीक्षा करते करते कठिनता से रात्रि व्यतीत हुई ।

आखिरकार सफवान के ऊँट पर बैठी हुई आयशा मदीना नगर पहुँची । पूछने पर बताया कि आधीरात को शौच के लिये खेमें से बाहर गई थी । जब सौच से निवृत होकर खेमें आई तो देखा कि उसका सच्चे मोतियों का हार कहीं गिर गया है । ढूंढने फिर जङ्गल में गई । उस ही समय फौजके कूच का बिगुल बज गया । खेमों के आगे पालकियां रख दी गई । सब बेगमें बैठ गई । ऊँट पर रख दी गई । आयशा हलके बदन की थी । अतः भार का अनुमान न रहा । उसकी पालकी भी रख दी गई । जब सब सेना और सैनिक चले गए तो आयशा कर्तव्यमूढ होकर वहीं बैठ गई । और सोचती रही कि अभी थोड़ी देर में मुझे कोई न कोई लेने आयगा । परन्तु संयोग वश हजरत सफवान

प्रतीक्षमाणा व्यतीता । अन्ततोगत्वा सफवानस्य ऊष्ट्रपीठोपरि आसीना आयशाः मदीना नगरं प्राप्ता । प्रश्नेन ज्ञातं आवश्यकीय शौचकार्य्यार्थी गतनिशीथे बहिर्गता खेमातः । यदा परावर्तिता स्वस्थाने स्थिता तदातया दृष्ट यत् तस्याः मौतिक माला कुत्रचित् पतिता । मालान्वेषयितुं सा पुनरपि स्वस्थानात् दूरेगता ।

तस्मिन्नवसरे सेनायाः प्रस्थानस्य शङ्खनादः जातः । अपरञ्च आयशायाः पालकी अनेन भ्रमेण सा तस्यां उपविष्टा भविष्यति ऊष्ट्रस्य पीठोपरि संस्थापिता । आयशा कोमलाङ्गी भाररहित शरीरा अस्मात् कारणात् पालक्याः उत्थापने भारस्यानुमानं न जातं आभ्यन्तरे आयशा अस्ति न वा ।

प्रस्थितेषु सैनिकेषु जनेषु च आयशा किंकर्तव्यविमूढा तत्रैव स्थिता । इदानीमेव मां नेतुं कश्चिद् समेष्यति इति प्रतीक्षमाणायाः प्रातः कालो जातः । परन्तु कश्चिदपि न समायातः ।

==================

ऊँट को लेकर उधर से निकला उसने आयशा को पहचान लिया और बिना वार्तालाप के उसके आगे ऊँट को बैठा दिया और वह केमलक की पीठ पर बैठ गई । इस प्रकार एक रात गुजार कर अपने प्रीतम प्यारे मोहमंद मे जा मिली ।

परन्तु ऐसी हालत में कौन किसकी जुबांन पर लगाम लगा सके । आयशा के बारे में आचार भ्रष्टता के अनेक आक्षेप होने लगे । शनैः शनैः मोहमद भी आयशा से रुष्ट होते गये । ऐसी हालत में वह कोई उपाय न देखकर अपने बाप के घर चली गई । उसकी माता उसको प्रसन्न मनोरंजन करती थी परन्तु आयशा का दिल कष्ट की ग्रन्थी से दूर नहीं होता था न प्रसन्न होता था । इस परिवर्तन से मोहमद के मित्रों और अमित्रों में बहुत मतभेद होने लगे ।

मोहमद की बदनामी होने लगी । रोबदाब भी नष्ट हो गया

संयोगवशेन हजरत सफवान् स्वकीयं ऊष्ट्रं गृहीत्वा तत् समीपतः निसृतः । तेन आयशा परिचिता । बिना वार्तालापेन आयशा समीपे ऊष्ट्रं उपवेशितवान् आयशा तस्योपरि आरूढा एकां रात्रि एकान्ते व्यतीती कृत्वा तदनु स्व प्रीतम मोहमदाय मिलिता ।

अस्तु अस्यां अवस्थायां कः कस्य वाणी प्रवाह-मवरोधयति आयशांविषये अनेक प्रकारकाः भ्रष्टाक्षेपाः प्रचलिताः आसन् । शनैः शनैः मोहमदोपि आयशातः रुष्टः सजातः । अस्या मव स्थायां सा कमपि उपायं न दृष्टवती । अन्ततोगत्वा पितृगृह गतवती ।

तन्माता आयशायाः मनोरंजनं करोति स्म । तथापि आयशायाः हृदयात् कष्टग्रन्थी न दूरे भवति न उद्धारयति सा अनेन परिवर्तन हेतुना मोहमदस्य मित्राणाममित्राणां बहु विधाः मतभेदाः संजाताः । मोहमदस्य अपकीर्तिः उत्पन्ना, प्रभावोपि नष्टः ।

===================

आखिर कार अली और उसमान से सलाह की गई । अली ने कहा कि इस बारे में आयशा की दासी से पूछा जाय । सलाह तो अच्छी थी । परन्तु यह सलाह हजरत अली के लिये बड़ी दुःखदायिनी हुई ।

आयशा ने अपना अपमान समझा और मृत्यु तक याद रखा अली मोहमद का दामद (जामाता) था । उसने आयशा के सदाचार के विषय में शङ्का की । इसलिए अली से आयशा की विकट शत्रुता हो गई । मोहमद की प्यारी पुत्री खुदीजा की यादगार फातिमा इस अली को व्याही गई थी एक तरफ फातिमा का पति और अपना जमाई अली । दूसरी तरफ प्राण प्रियतमा भार्या आयशा है । मोहमद किधर जाये घर में घर युद्ध की जड़ जम गई । इस युद्ध ने मौहम्मद के मरण के पश्चात् इस्लाम के इतिहास को निरन्तर रक्त रंजित किया । उत्तराधिकार के वास्ते

अन्ततोगत्वा अली उसमानाभ्यां सम्मतिः ग्रहिता अत्र विषये अलीना प्रोक्तम्। आयशायाः दासी पृष्टव्या। सम्मतिः समीचीना आसीत्।

परन्तु एषा सम्मतिः अलीमहाशयाय अतिकष्टदायका संजाता। आयशा एनं अपमान मृत्यु पर्यन्तं न विस्मृतवती। अली मोहमदस्य जामाता। तेन आयशा सदाचारविषये शङ्का-कृता। अतएव अलीतः आयशायाः विकट शत्रुता समुत्पना। मोहमदस्य प्रिय पुत्री खुदीजायाः स्मृति स्वरूपा फातिमा। एषा अलीना सह विवाहिता आसीत्। एकतः फातिमायाः पतिः स्वकीयः जामाता अली। अन्यतः प्राणप्रियतमा भार्य्या आयशा विद्यते। मोहमदः कुत्र गच्छेत्। गृहे गृहयुद्धस्य मूलं समुत्पन्नम्।

अनेन युद्धेन मोहमद मरणान्तरं इस्लामस्य इहितासः निरन्तरं रक्तरंजितः कृतः। उत्तराधिकारार्थं सभवतः एतावान् रक्त-

===========================

सम्भवतः इतना रक्त पात न होता यदि अली और आयशा का हृदय पवित्र और दोष रहित होता। अली को आयशा शत्रु न मानती।

देखो ? बहुत पत्नी वाले लोगों ? पैगंम्बरों का भी जीवन भयङ्कर त्रास युक्त दिखाई देता है। बहुप्रतिष्टिता मान्या लोग अपनी त्रुटियों स अपने दोषों से अपने दुष्ट कर्मो से न बच सके तो तुम कौन हो, जो अपने दुष्ट कर्म जन्य कटु फलों से बच सकोगे। श्री महाराजा दशरथ का घर नष्ट हो गया बहुत पत्नियों के कारण। मोहम्मद का परिवार भीं नष्ट हुआ बहु-पत्नियों के कारण। क्यों कि बूढ़े होकर भी नवयुवती कुमारियों विधवाओं के साथ विवाह किया। मौहम्मद आयशा के घर गया। उसके माता पिता के सामने आयशा से प्रार्थना की तू ही बता अपने सच्चे २ वृतान्त को। यदि तूने पाप कर्म किया है तो पर-

पातोन भवेत् यदि अली आयाशायाः हृदयं पवित्रं द्वेषरहितं स्यात् यदि आयशा अलीं शत्रुं न मन्येत् । पश्यन्तु बहुपत्नीवन्तः लोकाः पैगम्बराणामपि जीवनं भयङ्करं त्रासयुक्तं दृश्यते । बहुप्रतिष्ठिताः मान्याः जनाः स्वत्रुटिभिः स्वदोषैः दुष्ट कर्मभ्यः न रक्षिता आसन् । तर्हि के यूयं ये स्वदुष्ट कर्मजन्य कटुफलेभ्यः रक्षिता भविष्यथ ।

श्री दशरथस्य गृहं नष्टं वहुपत्नी कारणात् । मोहमदस्य परिवारोपि नष्टः । नाशकारण मदास्ति तत् वृद्धाः भूत्वापि नवयुवती कुमारीभिः सह विवाहाः कृताः । मोहमदः आयशायाः गृहं गत्वा तस्या मातृ पितृ समक्षे आयशां प्रार्थयति त्वमेष स्वयं स्वकीयं वृतान्त सत्यं सत्यं कथय । यदि त्वया पाप कर्म कृतं तर्हि परमात्मतः क्षमायाचनां कुरू । स क्षभादायकः दयालुः निष्कङ्कोवरीवर्तते । त्वं स्वनिर्दोषितां प्रकटय । आयशा किञ्चित्कालं मौनी

==========================

मात्मा से क्षमा याचना मांग वह ईश्वर क्षमा दायक दयालु निषकलङ्क है । तू अपने निर्दोषता को प्रकट कर । आयशा कुछ देर चुप रही फिर धैर्य धारण करके बोली धैर्य ही मेरा उत्तर है । ईश्वर मेरा सहायक है यदि मैं अपने आपको निर्दोष बताती हूं तो कौन मुझ पर विश्वास करेगा । परमात्मा से क्षमा याचना किस अपराध की करूँ । परमात्मा जानता है कि मैं निर्दोष हूं । मौहम्मद अपने मन से आयशा का आचरण जानता था ।

परन्तु लोगों को विश्वास दिलाने के लिये मौहम्मद ने अपने को इलहाम के लिये तैय्यार किया । मुख पर वस्त्र डाल दिया कुछ समय के लिये छल से जड के समान हो गया । आखिर कार वह मौहम्मद अपने माथे से परिश्रम की बूंदों को दूर करता हुआ उठा और बोला हे प्राणप्रिय आयशा तू प्रसन्न हो जा अल्ला मियाँ तुझे निर्दोष बताते हैं । आयशा का नष्टीभूत सौभाग्य पुनः

भूय । ततः धैर्यं धृत्वा उवाच । धैर्यं हि ममोत्तर मस्ति । ईश्वरः मम सहायकोस्ति यदि अहं आत्मानं निर्दोष कथयामि तदा केपि न मन्यन्स्यन्ते । क्षमायाचना करणमपि कस्य अपराधस्य । परमात्मा जानाति यदहं निर्दोषा अस्मि ।

मोहमदः स्वमनसा आयशायाः आचरणं जानातिस्म । परन्तु लोकानां विश्वासाय मोहमदः स्वात्मानं आकाशवाण्याः कृते (इलाहमाय) सज्जीकृतः । तस्य मुखं वस्त्रेण आच्छादितम् । स किञ्चित् कालाय छद्मना जडवत् अचेतनः संजातः । अन्ततः स स्व मस्तिष्कात् परिश्रम विन्दून दूरीकुर्वन् उत्थितः सन् उक्तवान् भो प्राण प्रियतमे आयशे प्रसन्नाभव अल्ला त्वां निर्दोषा प्रतिपादयति । आयशायै नष्टीभूतं सौभाग्यं पुनरपि प्राप्तम् ।

परन्तु आक्षेप कर्तृषु वज्रपाताः समुत्पन्नाः आसन् । प्रतिदिनं आकाथवाणी जायते इलहामो भवति विरोधिनां कृते दण्डो

==========================

भी प्राप्त हो गया । परन्तु आक्षेप करने वालों पर बज्रपात गिरने लगे । प्रतिदिन आकाशवाणी इलहाम होता था । विरोधियों के लिये अनेक प्रकार के वाक्य जाल गिरने लगे । आखिरकार उन लोगो के लिये दण्ड निश्चित हुआ कि उनको ८० अस्सी २ कोड़े लगायें जायें । और लगाये गये । एक औरत को भी कोड़े लगाये गये । यह बात कुरान शरीफसूरे नूर नाम के अध्याय में है । रसूल मौहम्मद तथा उसके खुदा का खेद और क्रोध आज तक भी कुरान में लिखा हुआ विद्यमान है । विरोधियों की जीभ को मुँह में ठोंस दिया गया ।

अब आवश्यकता हुई कि भार्या समूह को भी उपदेश दिया जाये । ताली दोनों हाथ से ही बजती है । यह सेवा अल्ला मियां ने स्वीकार की । सूरये अखराब में आकाश वाणी उतरी कि हे मौहम्मद की औरतें तुम और नारियों के सदृश्य नहीं हो । यदि

निश्चित: (८०–८०) आशीति वारं अभिषुभि: (कोड़ै:) ताडनीया: । काचित् महिलापि कोड़ै: अशीति वारं ताडिता । कुरानस्य सूरये नूर नामनि अध्याये रसूल मोहमदस्य तथा तस्य खुदाया: खेदक्रोधौ इदानीं पर्य्यन्तं लिखितौ दरीदृश्यत: । विरोधिनां रसना: तेषाँमुखे प्रतिरुद्धा ।

अधुना आवश्यकता सजाता यत् भार्य्या समूहमपि उपदिशेत् । तालिका द्विहस्ताभ्यामेव भवति । एषा सेवा अल्लामियां स्वीकृतवान् सूरये अखराव आकाशवाणी उत्तरिता । भो मोहमदस्य भार्य्या वर्गे यूयं अन्यनारी सदृश्य: न भवथ । यदि ईश्वरं हृदयेन मानयथ तदा विवाह प्रतिज्ञा वचनै: मा परिवर्तिता: भवत । ये युष्मान् अभिलषन्ति तेषां मनोरथा: सफला न भवेयु: । प्रतिज्ञापालनं परमो धर्म्म उच्यते । अतएव स्वस्वगृहेयु प्रतिरुद्धा: भवथ । अपरञ्च शृङ्गारम् कृत्वा वहि: पर्य्यटनं मा कुरुथ ।

==========================

तुम हृदय से ईश्वर को मानती हो, तो तुम विवाह के वचनों से मत पीछे हटो । जो तुमको चाहते हैं उनके मनोरथ सफल न हों । प्रतिज्ञा पालन ही परम धर्म है इसलिये अपने २ घरों में पर्दे में रहो । शृङ्गार करके घर से बाहर मत फिरा करो । जैसा मूर्खता के जमाने में औरतें भटकती फिरती थी । मौहम्मद के लिये अपनी औरतों को विधि निषेध बतलाना औरतों की प्रतिष्ठा सम्मान के विरुद्ध था । अल्ला मियाँ स्त्री पुरुष दोनों का पूजनीय है । उसको मध्यस्थ करके मौहम्मद ने जो चाहा वह करा दिया इस प्रकार से आयशा व मौहम्मद का फिर से मिलन हो गया । आयशा का घर में साम्राज्य हो गया ।

इसके पश्चात् फिर किसी युद्ध में आयशा को नहीं ले गये । इसके बाद आयशा को घर से बाहर न निकलने दिया । जब इसका पति मौहम्मद मृत्यु शैय्या पर लेटा हुआ था तब उसने

यथा मूर्खतायाः काले नार्य्यः अटन्तिस्म । मोहमदाय स्वभार्य्यावर्गार्थी विधि निषेधकरणं नारीणां प्रतिष्ठा सम्मानस्य विरुद्धमासीत् । अल्लामियां उभयोः स्त्री पुरुषयोः पूजनीयोऽवर्तते। तं मध्यस्थं कृत्वा मोहमदेन यदभिलषितं तत् कारितम् । अनेन प्रकारेण आयशा मोहमदयोः पुनरपि समागनं एकता संजाता। आयशायाः गृहमध्ये साम्राज्यम भवत् ।

एतदनु पुनः कस्मिञ्चित् युद्धकाले युद्ध देशे आयशा न नीता। अस्यानन्तरं आयशायाः दर्शनं अन्तिमं दर्शनम् । यदा अस्याः पतिः मोहमदः मृत्यु शय्यारूढ आसीत् । मोहमदेन अन्तिम रोग ग्रसितेन स्वभार्य्याभ्यः स्वीकृतिः गृहिता यदहं इदानींतः आयशायाः गृहे निवसिष्यामि । अस्मिन् गृहे एव आकाशवाणी (इलहाम) प्रायः भवतिस्म । सैव खट्वा तदेव विष्ठरं तदेव कम्वलं तद् गृहं सर्वेभ्यः गृहेभ्यः मोहमदाय अति प्रियतमं आसीत् । रुग्णावस्थायाँ

=====================

अपनी सब औरतों को कहा कि मैं अब आयशा के घर में ही रहूंगा। उन औरतों ने स्वीकृति दे दी। इस घर में ही प्रायः आकाश वाणी होती थी। वही घर वही विस्तर वही कम्बल वही खाट मौहम्मद को सबसे अच्छा था। बीमारी की हालत में मौहम्मद कब्रिस्तान गया वहाँ अपनी मृत्यु का निश्चित करके घर लौट गया। दत्रयोग से आयशा को भी सर में दर्द था। वह दुखित स्वर में सर में दर्द सर में दर्द कह रही थी। तत्र बीच में हजरत मौहम्मद साहब ने फर्माया कि हे आयशा तू ऐसा न कह क्यों कि मैं स्वयं रोगी हूं ऐसा अलाप तो मुझे करना चाहिये। आयशा सुन कर चुप हो गई। अब मौहम्मद ने कहा कि क्या तू खुश होगी अगर तेरी मौत मेरे सामने हो जाये और मैं अपने हाथ से तुझे दफनाऊँ । और तेरी कब्र पर जाकर तेरी स्वर्ग प्राप्ति को प्रार्थना करूँ। आयशा का चेहरा क्रोध से लाल हो

मोहमदः कबरस्थानं शमसानं गतवान्। तत्र स्वमरणस्य विश्वासं कृत्वा गृहं परावर्तितः।

दवयोगात् आयशा अपि शिरोवेदनया पीडिता आसीत्। सा खेद शब्दैः कथयति ममशिरः ममशिरः तदा मध्ये मोहमद उवाच आयशे एतत्कथनं मदीयं भवेत् तर्हि शोभनं स्यात्। आयशा श्रुत्वैव मौना संजाता। मोहमदः उपहासं करोति—आयशे त्वं प्रसन्ना भविष्यति यदि ते मरणं मम जींवन समक्षे स्यात्। तथा च अहत्वदीयां अन्तिम क्रिया स्वहस्तेन दफनं करोमि। तव कवरस्य समीपे ते स्वर्ग प्राप्तयर्थं प्रार्थनां करोमि।

आयशा एतच्छ्रुत्वा अतीव रुष्टा जाता–उत्तरति इदं कथनं का मपि अन्यां श्रावयतु। मयाज्ञातं मम गृहं मत्तो रिक्तम् कारयित्वा अन्यां सुन्दरीं विवाहयित्वा आनेतुं इच्छा वे विद्यते। मोहमदाय उत्तरयितुं अवकाशो नासीत्। शक्तिरपि न।

==========================

गया। उसने कहा कि ऐसी गलत बातें किसी और को कहना। मैं समझ गई हूं कि मेरा घर खाली करा कर किसी सुन्दरी से विवाह करना चाहते हो व उसे इस घर में लाना चाहते हो। मौहम्मद के लिये उत्तर देने का अवकाश न था न शक्ति थी। थोड़ी हँसी में यह वात समाप्त करदी। यह वात म्यूर साहव के बनाये हुये हयाते मौहम्मदी ग्रन्थ में लिखी है।

पाठक गणः—समझ गये होंगे कि नवयुवती भार्या को मरण के पश्चात् छोड़ने में मौहम्मद को कितना कष्ट हुआ। हाय यह कैसा दृश्य है रोमांचकारी दृश्य है। उपदेश जन्य दृश्य है। मस्जिद का आँगन है वहां बीस वर्ष की पत्नी आयशा ६२ वर्ष के अपने पति मौहम्मद का सर अपनी जाँघों पर बैठी दृष्टी गोचर हो रही है। मौहम्मद आयशा का चबाया दाँतन अपने मुँह से चबा

मन्दोपहासेन एषा वार्तात्यक्ता । क्योर साहबःकृते हयाते मोहमदी ग्रन्थे दरी दृश्यते ।

पाठकैरवगतं भविष्यति यत् नवयुवतीं भार्य्यां मरणानन्तरं त्यक्तुं मोहमदाय कष्ट कारणं जातम् । हन्त एतादृशं दृश्यम् मसजिदस्य आङ्गणमस्ति । तत्र (२०) विंशति वर्षीया पत्नी आयशा (६२) द्वियष्ठि वर्षीयस्य स्वपत्युः मोहमदस्य शिरः स्वकीय जानूपरि गृहीत्वा आसीना दृश्यते । मोहमदः आयशायाः चर्वितं-दन्त धावनं स्वमुखे चर्वयति । (एतद् वृतान्तं इतिहास जैबुल्लाह पृ० १६६ । मदारिजुल् फतूहा रुकू–४ अस्ति ।)

मोहमदस्य क्षणभंगुरात् शरीरात् प्राणाः निःसरन्ति स्म ।

२० विंशति वर्षीया विधवा आयशे तवोपरि मम हृदये दया उत्पद्यते तव युवावस्थायै कारुण्यं जायते । तव उत्साहेषु अभिला-षासु सुन्दरतासु मुखाकृतिषु करुणा संजायते । ममनेत्रयोः ते

= =

रहा है । देखो इतिहास जैबुल्लाह पृष्ठ १६६ और मदारीजुल फतूहा रकू न० ४ ।

हजरत मौहम्मद साहब के शरीर से प्राण निकल रहे हैं । मृत्यु को प्राप्त हुये ।

हे बीस वर्ष की विधवा आयशा तेरे लिये मेरे मन में दया उत्पन्न हो रही है तेरी जवानी की हालत पर मुझे रहम आ रहा है । तेरे उत्साहों में अभिलाषाओं में सुन्दरताओं में मुखाकृतियों में दया उत्पन्न हो रही है । मेरी आँखों में इस समय वह आँसू हैं जो एक पिता के अपनी पुत्रीं के सुहाग नष्ट होने पर होते हैं । परन्तु क्या करूँ तुझको अपनी पुत्री कह कर रो रहा हूं । मौहम्मद तुझको कुछ भी कहे ।

इति आयशा विधवा समुल्लास समाप्तः ॥

अश्रुविन्दवः सन्ति ये अश्रुविन्दवः कस्यचित् पितुः समक्षे स्वकीया युवतीकन्या विधवा भवति तदा स्वयमेव निःसरन्ति । परन्तु किं करोमि अहं त्वां स्वपुत्रीं कथयित्वा रोदनपरोस्मि । मोहमदः किमपि न कथयति ।

॥ इति आयशा विधवा समुल्लासः समाप्तः ॥

सौभाग्यवत्यः

अबूवकरः मोहमदस्य दक्षिणोहस्तः उमरः वामहस्तः । अयं उमरः सरलतया इस्लामे न प्रविष्टः यथा अबूबकरः शीघ्रतया मोहमदस्यानुयायी सजातः । परन्तु स उमरः पूर्ण विश्वासेन इस्लामे समायातः । तदा स इस्लास प्रचाराय मरतुं मारयितुं सदा सन्नद्धो भवति । अबूवकरः तेजस्वी वीरो बुद्धिमान् आसीत् । तद् विपरीतः उमरः बलवान् शीघ्रकारी तीव्रतया क्रोधयुक्तो भवति । तदा तस्य स्वाधीनकरणं सरलं नासीत् ।

=======================

सुहागिनों–

अवूवकर मौहम्मद का दाँया हाथ था उमर बाँया हाथ था । इस उमर ने सरलता से इस्लाम धर्म को स्वीकार नहीं किया था । जैसे अबूवकर शीघ्रता से मौहम्मद का अनुयाई हो गया था परन्तु उमर पूर्ण विश्वास होने पर इस्लाम में आया था । तब वह इस्लाम का प्रचार पूर्ण शक्ति से मरने मारने को तैयार रह कर करता था । अवूबकर तेजस्वी वीर और बुद्धिमान था । उसके विपरीत उमर बलवान शीघ्रकारी जल्दबाज व क्रोधी था । तब उसको बस में करना सरल नहीं था । यही स्वभाव उसकी पुत्री हफसा में भी था । वह भी किसी के बस में नहीं आती थी । उसका विवाह खनीस के साथ हुआ था । वह खनीस मिया गजवा बदर के युद्ध में मर गया । छेः सात महीने तक

इममेव स्वभावं उमरस्य पुत्री हफसा प्राप्तवती। सापि केनापि रुद्धा न भवति। अस्याः विवाहः मियां खनीसेन सह अभवत्। स खनीसमियां गिजवा वदर युद्धे मृतः। ६–७ षड् सप्तमास पर्यन्तं सा विधवा अतिष्ठत् कोपि मुस्लीमानः तां विवाहयितुं न सन्नद्धः। प्रथमं उमरः अबूवकरं प्रार्थितवान्। तन्निषेधानन्तरं उसमानं विवाहार्थं याचितवान्। द्वाभ्यामपि विवाहाय स्वीकृतिः न दत्ता। क्रोधवती हफसायाः रक्षणं उपहासो वा खेलः नासीत्।

उमरः अतिरुष्टो भूत्वा मोहमदस्य समीपं गतवान्। मोहमदेन स्वकृपया हफसायाः स्वपत्नीकरणं स्वीकृतम्। अनेन प्रकारेण यः सम्बन्ध अबूवकरस्य आसीत् स एव सम्बन्धः उमरस्यापि संजातः। तौ समानरूपेण आज्ञापालनपूर्वक इस्लाम प्रचारे संलग्नौ। तथा स्वपुत्री कारणात् मोहमदस्य प्रशंसकौ संजातौ।

एवंहि गिजबा वदर युद्धे मृतस्य आबीदस्य पत्नी जौनबा

==========================

हफसा विधवा रही। कोई भी मुसलमान उससे शादी करने को तैयार न था।

उमर ने अबूबकर से प्रार्थना की कि वह मेरी लड़की से विवाह करले परन्तु उसने स्पष्ट मना कर दिया। तदन्तर उसमान् से प्रार्थना की उसने भी मना कर दिया। दोनों ओर से ही निराश होना पड़ा। क्रोधवती हफसा को साथ में रखना कोई हँसी खेल नहीं था।

उमर बहुत नाराज होकर मौहम्मद के पास गया। मौहम्मद के मन में दया आ गई। उसने कृपा करके हफजा को अपनी पत्नी बनाना स्वीकार कर लिया।

इस प्रकार जो सम्बन्ध अबूबकर का था वही सम्बन्ध उमर का भी हो गया। वह दोनों मौहम्मद की आज्ञानुसार समान रूप

आसीत् । आबीदः सम्बन्द्धतः मोहमदस्य भ्राता अभवत् । तस्य विधवया सह मोहमदेन विवाहः कृतः । श्रीमती जैनबा दयावती उदार हृदया अस्या अभिधानं उन्मूल मसाकीन संजातम् । अबूसल्लमः आरंभिक मुस्लमानेषु आसीत् । स हबशयात्रायां अरबदेशात् निः सारितः । यदा मोहमदेन मदीना नगरे स्थितिः कृता । तदा सोपि तत्रैव समागतः । उहद युद्धे आहतः परन्तु शीघ्रमेव स्वस्थः जातः । यदा बनीसाद देशे इस्लामः आक्रान्त-वान् । तदा अयं सेनापति रासीत् । तत्र स पूर्वाघातकारणात् पुनरपि रुग्णो जातः मृतश्च ।

मोहमदस्य कुटम्बिजनानां कृने सहानुभूति रासीत् । स प्रायः तस्य विधवा "हिन्द" पार्श्वे गच्छति । हिन्द विधवा वृद्धा भूत्यापि सुन्दरी आसीत् । मोहमदः तया सह विवाहस्य प्रस्तावं कृतवान् । तया उक्तं अहं जरठा अस्मि । अतएव नेच्छामि । तदा पैगम्बरो

==========================

से इस्लाम के प्रचार में लग गये। वैसे ही अपनी पुत्रियों के कारण मौहम्मद के प्रशंसक हो गये। ऐसे ही गजना बदर के युद्ध में मारे गये आबिद की पत्नी जैनबा विधवा थी । आबिद रिश्तेदारी नें मौहम्मद का भाई था। उस विधवा के साथ भी हजरत मोहम्मद साहब ने विवाह कर लिया। श्री मती जैनबा दयावती व उदार हृदय थी । इसका उपनाम लोगों ने उन्मूल मसाकीन (गरीबों पर दया करने वाली) रख दिया था । अबूसल्लम शुरू के मुसलमानों में से था। वह हब्श यात्रा में अरब देश से निकला था । फिर मौहम्मद मदीना नगर में रहने लगा । वह अबूसल्लम भी वहीं उनके पास आ गया । उहद युद्ध में घायल हो गया। परन्तु शीघ्र अच्छा हुआ। जब बनीसा देश पर इस्लाम ने आक्रमण किया तब वह सेनापति था। वहाँ वह पूर्व आघात के कारण फिर बीमार हो गया और मर गया।

मोहमदः कथयति अहमपि जरठोस्मि । सा उक्तवती मे बाला सन्ति । निषेद्धतीं तां वृद्धां विवाहित्वा स्वगृहे आनीतवान् मोहमदः तस्या परिवारस्य स्वामी संजातः ।

साम्प्रतं मदीना मस्जिद मध्ये कुटीः पंच संजाताः । तासु प्रत्येक कुटीसु एका एका भार्य्या निवसति । प्रतिदिनं प्रत्येक रात्रिसु कमशः एकस्याः एकस्याः पार्श्वेगच्छति स्म भोगार्थम् । अन्तिमा कुटी हारिशस्य आसीत् । यदा मोहमदस्य हरिशाय नवीना कुटी निर्माणं भवति । स वराकः गुप्तरूपेण गृहे छिद्रम् करोति स्म ।

एकदा मोहमदः लज्जावान् अभवदचिन्तयच्च हारिशः मनसि किम् विचारयति । राय आनरेवेलमियाँ सैयद अमीरअली वर्णयति । एषाः सर्वः विधवा. मोहमदस्य भार्य्यात्वं साभिमानं स्वीकुर्वन्ति परन्तु पराधीनाः आसन् तासां पतयः इस्लाम प्रचार

मौहम्मद को अपने कुटम्बियों के लिए सहानुभूति थी । वह प्रायः उसकी विधवा हिन्द के पास जाता था । हिन्द विधवा बूढ़ी होने पर भी सुन्दर दीखती थी । मौहम्मद ने उसके साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की । तब उसने कहा मैं बूढ़ी हूं इसलिए विवाह न करूँगी । तब पैगम्बर मौहम्मद ने कहा कि मैं भी तो बूढ़ा हूँ । विधवा ने कहा मेरे बाल बच्चे हैं । मौहम्मद ने उस बूढ़ी को भी प्रभावित कर विवाह कर अपने घर ले आया । मौहम्मद उसके घर का मालिक बन गया । तब मदीने की मस्जिद में पांच कमरे बनवाये गये व एक-एक कमरे में एक-एक पत्नी को रखा प्रति रात्री एक-एक पत्नी के पास जाता था । आखिरी कमरा हारिश नाम के एक नौकर का था । जब मौहम्मद घर में नई बहू को लाता था तब हारिश के कमरे में ठहराता था । वह हर बार हारिश को नई कुटिया बनवा देता था । वह हारिश नौकर

कार्य्येषु मृताः । अतएव मोहमदस्य इदं कर्तव्यम् आसीत् यद तासां निर्वाहाय व्यवस्थां कुर्यात् । इदं तस्य परं आवश्यकीयं कार्य्यमासीत् ।

मोहमदस्य स्वनिर्वाह कठिनतया जायते । तथापि स्वजीविकातः अधिकं भारं वहति स्म । उत्तरदायत्वं अधिकं जातम् । आयस्य स्थितः न एधते । पूर्ववत् तथैवासीत् देशमर्य्यादा सर्वत्र भिन्नाः जायन्ते । संभवोस्ति सैयद अमीरअली महाशयस्य अनुमानं सत्यं स्यात् ।

अरबदेशे रसूल मोहमदस्य युगे कापिनारी कस्यचित् पुरुषस्य पार्श्वे भार्य्या भूत्वा हि तिष्ठति । परन्तु आर्य्यावर्तदेशे एतादृशी मर्य्यादा वर्तते यत् धर्मात्मजनाः सन्ति ये एतादृश्यः विधवाः स्वगृहे स्वभगिनीं विधाय स्थापयन्ति अनेन प्रकारेण उभयोः निर्वाहोपि जायते धर्मरक्षा भवति सतीत्व मपि सुरक्षितं भवति । संभवतः मुसलमान मध्ये कश्चित् कुमारः अथवा विगतस्त्रीकः

==========================

दीवाल में छेद कर तमाशा देखता रहता था । एक बार मोहमद शर्मिन्दा हुआ और चिन्तित हुआ कि हारिश मन में क्या सोचता होगा ।

राय आनरेबल मियाँ सैयद अमीरअली फरमाते हैं कि ये सारी विधवायें मोहमद की पत्नी होना साभिमान स्वीकार करती थी । परन्तु उनके पति पराधीन थे । वे इस्लाम प्रचार के कार्यों में मर गये थे । इसलिये मोहमद का यह परम कर्तव्य था कि उन विधवाओं के निर्वाह का प्रवन्ध करें । यह मोहमद का परम आवश्यकीय काम था । यद्यपि मोहमद का गुजारा कठिनता से होता था , तो भी वह मोहमद अपने गुजारे से अधिक भार ढोता था क्योंकि उत्तरदायित्व बढ़ा था । आमदनी की हालत पूर्ववत् वैसी ही थी । देश मर्यादा सर्वत्र भिन्न होती है । सम्भव है सैयद अमीर अली महाशय का अनुमान सत्य हो । अरब देश में

एताँ विधवाँ न गृहणाति इति कृत्वा मोहमदेन महतीं कृपां कृत्वा एताः सर्वाः विवाहिताः ।

अस्माकं बुद्धिमध्ये एवं समागच्छति यदि मोहमदः ताः सर्वा भगिनीः विधाय स्वगृहेषु स्थापयति चेत् तदपि कार्य्यं चलत्येव । यदि तासां विवाहस्य आवश्यकता स्यात् तर्हि केनचित् युवकेन सह कारयेत् । भिन्नरुचि हि लोकोस्ति । मोहमदस्य विवाहोपायः रुचिकरः जातः । यत् स्वकीयं गृहं भार्य्याभिः भरितं स्यात् । ६० षष्ठि वर्षीय वृद्धस्य पंच पंच भार्य्याः महदाश्चर्यम् । अस्तु प्रतिक्षणं गृहे मनोरंजनं भवति आनन्देन दिवारात्रं वहति । वृद्ध-कोमलयाः कृते वृद्ध कोमलस्य सम्बन्धः समीचीनो दृश्यते ।

बहुपत्नीवान् स्त्रैणः रसूलः

अस्माभिः पूर्वमुक्तं यद जैदः खुदीसायाः ईसाइ गुलामः आसीत्तेन मोहमदस्य धार्मिकी एवं मानसिकी व्यथा दूरीकृता ।

हजरत मोहमद के जमाने में कोई भी नारी किसी पुरुष के घर में पत्नी बनकर ही ठहर सकती है ।

परन्तु आर्यावर्त में ऐसी मर्यादा है कि जो धर्मात्माजन हैं वे ऐसी विधवाओं को अपने घर म अपनी बहन या माता बनाकर रखतेहैं इस तरह दोनों का निर्वाह भी हो जाताहै धर्म रक्षा और सतीत्व भी सुरक्षित रहता है । सम्भव है कि मुसलमानों में कोई कुमार अथवा विगतस्त्रीक इन विधवाओं को न ग्रहण करता हो इसलिये मोहमद ने बड़ी कृपाकर इन विधवाओं को व्याह लिया हो । हमारी बुद्धि में ऐसा आता है यदि मोहमद उन सब विधवाओं को अपनी बहनें बनाकर अपने घर में रख लेता तो भी काम चल जाता । यदि उनके विवाह को आवश्यकता होती तो किन्हीं युवकों के साथ कर देता । ससार भिन्न रुचि वाला है । मोहमद को अपने साथ विवाह करने का उपाय रुचि कर हुआ ।

अतएव मोहमदः विशेषतया तां स्नेहयति। खुदीजाः सेवकं जैदं मोहमदाय समर्पितवती स्म। मोहमदः तां स्त्रीकीयं दत्तक पुत्रं कृतवान्। जैदोपि मोहमदाय विशेषतया प्रीतिं करोति स्म। यदा जैदस्य पिता जैदं नेतु समायातः। तदा स स्व पित्रा सहन गतवान्। तेन स्वपिता निषेधितः। मोहमदः रसूलोपि भूत्वा तस्य पिता संजातः एकाकिना वालिदेन (पित्रा) सहगत्वा किम् कुर्यात्।

जैदस्य प्रथमो विवाहः उमरोमन नार्य्या सह संजातः। सा आयुषि द्विगुणा आसीत्। पित्रा स्वयमेव प्रसन्नतया अन्येषिता जैदेन सह विवाहिता पराधीनोयं किम् कुर्यात्। अस्यां एकः पुत्रः उसमा उत्पन्नः। जैदस्य द्वितीयो विवाहो जैनवा देव्या सह संजातः। जैनवा कुरैश जातीया सम्बन्धेन मोहमदस्य पितृव्या भगिनी भवति। एकदा जैदस्य अनुपस्थितौ मोहमदः तद्गृहं

===

क्योंकि अपना घर बीवियों से भरना था।

अब तक ६० वर्ष के बूढ़े के पाँच पाँच बहुएँ थीं महदाश्चर्य है। अस्तु प्रतिदिन प्रतिक्षण मनोरंजन और आनन्द रहता होगा। बूढ़ी कोमल के साथ बूढ़े कोमल का सम्बन्ध (विवाह) ठीक दीखता है।

बहुपत्नीवान् स्त्रैण रसूलः

हमने पूर्व बता दिया कि जैद खुदीजा का ईसाइ गुलाम था। उसने मोहमद की धार्मिक और मानसिक तकलीफें दूर की। इस लिये वह उससे बहुत स्नेह करते थे। खुदीजा ने जैद को मोहमद को दे दिया था। मोहमद ने जैद को दत्तक पुत्र बना लिया था। जैद भी मोहमद को प्रीति करता था। एक बार जैद का पिता जैद को लेने आया तो उसने उसको मना कर दिया। मोहमद रसूल होकर भी उसके पिता बन गये थे। जैद अकेले वालिद

गतः जौनवा अन्तरपरे आसीना आसीत् । तया मोहमदस्य शब्दं श्रुत्वा तं शीघ्रं गृहमध्ये आनेतुं व्यवस्था कृता। मोहमदस्य दृष्टिः तस्याः सुन्दर शरीरे पतिता। मोहमदस्य हृदये विद्युद्वज्र पातोजातः तन्मुखान् शब्दाः निःसरिताः ओह भगवन् त्वं कीदृशीं सुन्दरतां कृतवान् ।

जौनबया श्रुताः ते शब्दाः। मोहमदस्य मनसि काम वासनां ज्ञात्वा प्रसन्नवती संजाता । तस्याजैदेन सह प्रायः कलहः जायते स मोहमदस्य दत्तक पुत्रः तथापि गुलामः आसीत्। एषा शुद्धा कुरैश वंशीया। जैदः स्वगृहे समायातः तदा जैनवा सर्ववृतान्तं कथितवती । स तया पूवमेव रूष्टः। शीघ्रमेव मोहमद समीपे गतवान्। जौनवां त्यक्तुं सन्नद्धः संजातः। मोहमदः विचारयन् उक्तवान् एवं मा कुरू स्नेहेन मिलित्वा निर्वाहय। जैदः तस्याः नार्य्याः पतिर्भूत्वा स्थातुं नैच्छत् । या स्वहृदयं अन्यस्मैं दत्तवती । जैदः जौनवां त्यक्तवान् ।

==========================

(पिता) के साथ जाकर क्या करता । यहां तो गुलछल्ले थे ।

जैद का प्रथम विवाह उमएमन से हुआ था वह आयु में द्विगुण थी। उसके बाप ने स्वयं प्रसन्नता से तलाश की थी और जैद से व्याह दी थी । इससे एक पुत्र उसमां पैदा हुआ था। वह कुरैशी वंश की और मोहमद की चचेरी बहन थी। एक बार जैद की गैर हाजरी में मोहमद उसके घर गया। जैनबा सुन्दरी परदे की ओट में बैठी थी तब मोहमद की आवाज को सुन कर उसको घर में लाने को उठी तो उसके सुन्दर शरीर पर मोहमद का दृष्टिपात हुआ तो मोहमद के दिल में कामाग्नि भड़क उठी और चिल्लाया ओह भगवान तू कैसी कैसी सुन्दर सृष्टि रचता है । जैनबा ने ये शब्द सुन लिये और सोचा मोहमद के मन में काम-वासना हुई है और वह मुझे चाहता है बड़ी प्रसन्न हुई। जैद के साथ प्रायः झगड़ा होता रहता था। वह मोहमद का दत्तक पुत्र

जैनवा मोहमदाय पुनः पुनः कथयतिमा पत्नी कुरू। मोहमदः विचारयति विना कारणं अपयशो भविष्यति अन्ततो गत्वा 'वही' आकाशवाण्यासर्वं कार्य्यं निश्चितम्। सुरह उत्तरिता। खुदा ईश्वरः मनुष्येभ्यः द्विहृदयं न दत्तवान्। न दत्तक पुत्रान् स्वीकृतवान्। यान् स्व पुत्रान् यूयं कथयथ एतद्वाक्यं युष्माकं मुखात् निःसृतम्। परन्तु अल्लाहः सर्वं सत्यं जानाति। स सत्यमार्गदर्शकः। युष्माकमुत्तराधिकारिणां कर्तव्यमेतत् यत् ते स्वपितुः नाम्ना प्रसिद्धाः भवेयुः। एकं एतादृशं पुरुषं परमात्मा अनुकम्पते। त्वमपि तं अनुकम्पसे। त्वं नवीनां भार्य्यां स्वपार्श्वे स्थापय।

परमात्मतः भयं कुरू त्वया एतत् सर्वं स्वहृदयं प्रच्छन्नं कृतमासीत्। अत्र ईश्वरेच्छा अभवत्। त्वं जनेभ्यः विभेषि परन्तु ईश्वरादधिकं भेतव्यम्। यदा जैदः जैनवाँ त्यक्तवान् विधिना।

========================

था तो भी गुलाम था। जैनबा शुद्ध कुरंश वंश की थी। जैद जब घर आया तो जैनबा ने मोहमद का सारा वृतान्त सुना दिया। वह पूर्व से ही उससे रूठा हुआ था।

जल्दी से मोहमद के पास गया। जैनबा को तलाक देने को तैयार हो गया। मोहमद ने विचार कर कहा ऐसा मत करो। स्नेह से मिल कर रहो। जैद उसका पति होकर रहना नहीं चाहता था। क्योंकि उसने अपना दिल मोहमद को दे दिया था। जैद ने जैनबा को तलाक दे दिया। अब वह मोहमद को बार बार कहने लगी मुझे अपनी पत्नी बना लो। मोहमद सोचने लगा बिना कारण बदनामी होगी आखिरकार वही इलहाम से सम्पूर्ण कार्य निश्चित किया। सुरह उतरी खुदा ने इन्सान को दो दिल नहीं दिये हैं। खुदा दत्तक पुत्र को स्वीकार नहीं करता है। जिनको तुम अपना पुत्र कहते हो यह बात तुम्हारे मुख से निकली हुई है

तदा अस्माभिः त्वं तयासह अत्रैव विवाहितः। अतएव मोमिनानां कृते इतोग्रे दत्तक पुत्राणाँ भार्य्याभिः सह विवाहो अदण्डचः स्यात् ।

यदितैः विधिपूर्वकं त्यागपत्रं दत्तं भवेत् । परमात्मनः आदेशः अवश्यः पालनीयः मोहमदः युष्मासु न कस्यचित् पिता अस्ति। अपितु स अल्लायाः रसूलः वर्तते (खातिमुल मरसलीनः अन्तिमः रसूलः , अल्ला सर्वं जानाति । एतत् सर्वं एतदर्थं अस्माभिर्लिखितं येन पाठकाः मोहमद हृदय गतं अवगच्छेयुः। जैनवादर्शनानन्तरं मोहमदेन मिथ्यैव सभ्यता प्रकटीकृता। अन्यथा तन्मनसि कामाग्निः प्रचण्डः संजातः । प्रतिक्षणं प्रचण्डचते । शक्तया आकाशवाणी (वही) अपि प्रभवति । मोहमदः जैनवा समीपे सदेशं प्रेषितवान् ।

परमात्मना तव मम सम्मेलनं कृतम् तत्रैव । यतः विवाह-

परन्तु अल्ला मियां सब सत्य बात को मानता है। वह सत्य मार्ग दर्शक है। तुम्हारे उत्तराधिकारियों का कर्तव्य है कि वे अपने पिताके नाम से प्रसिद्ध हो। किसी ऐसे पुरुषको परमात्मा चाहता है और तू भी उसको चाहता है। तू नवीन भार्य्या अपने पास रख ले तू अल्लामियाँ से डर। तूने यह सब अपने दिल में छिपा रखा था। इसमें ईश्वरेच्छा पूरी हुई। तू जनता से डरता है परन्तु ईश्वर से अधिक डरना चाहिये। जब जैद ने कानूनन जीनवा को तलाक दे दिया। तो हमने यहां पर ही तेरा विवाह उसके साथ कर दिया।

इसलिये मुसलिमों को दत्तक पुत्रों को बहुओं से शादी करना जायज हो। यदि उन्होंने विधिपूर्वक त्याग पत्र दे दिया हो। अल्ला मियाँ के हुकम को अवश्य पालना चाहिये। मोहमद तुम लोगों में किसी का पिता नहीं है। (खातिमुल मरसलीन अन्तिम

संस्कारस्य आवश्यकता नास्ति। यत्रेश्वरः हृदयस्य सम्मेलनं करोति। तत्र मौलवीकाजी एवं वरयात्रिणां मध्ये पतनं उपहास एव अस्ति। नान्यत् किञ्चित् । मोहमदाय सर्वजनानां प्रसन्ना आवश्यकीया आसीत्। अतएव उक्तं अल्लामियाँ विवाहं कारितवान्। जब्राइलाः फरिश्ता : साक्षीरूपेण वरीवर्तते। इद द्विसाक्ष्यं विवाहसंस्कारे पर्य्याप्तमस्ति।

रंगीले रसूलस्य अयं रागः अत्यन्तः आश्चर्यवान् विद्यते। न पुत्रः पुत्रो भवति न तद्भार्य्या तद्भार्या भवति। अनेन पाठकाः ज्ञातुं शक्नुवन्ति यद् मोहमदः कामपि नारीं मातृ पुत्री तुल्यां न स्वीकरोति। यदा दत्तक पुत्राणां कृते यः व्यवहारः जायते स व्यवहारः औरसपुत्राणां कृते न सम्भवति। तेषां भार्य्याः मोहमदाय ग्राह्याः भवन्ति तर्हि धर्मेण स्वीकृत पुत्र्यः भगिन्यश्च कथं रक्षिता स्युः। तत् कालियाः मोहमदीयाः मौनाः जाताः।

========================

रसूल) लेखक का कथन है कि हमने यह बात इसलिये लिखी है कि पाठक गण, मोहमद के दिल की बात को समझ लेवें। मोहमद ने जैनवा को देख लेने के बाद यह झूठमुठ की सभ्यता प्रकट की। अन्यथा मोहमद के दिल में कामाग्नि भड़क उठी थी। और बढ़ती जा रही थी। ताकत से इलहाम वही को भी बुला लिया। मोहमद ने जैनवा के समीप सन्देश भेजा कि अल्ला मियां ने तेरा और मेरा सातवें आसमान पर निकाह पढ़ दिया है। अतएव अब विवाह संस्कार की आवश्यकता नहीं है। जहाँ अल्ला दो दिलों को मिलाता है। वहाँ पर मौलवी, काजी और बरात को लाना केवल उपहास है। यह कुछ नहीं था केवल मोहमद को जनता को प्रसन्न करना (आँखों में मिर्च झोंकना) था। इसलिये अल्ला ने उक्त निकाह करवा दिया। वहाँ जब्राइल फरिश्ता साक्षी रूप से विद्यमान था यह दो गवाही निकाह के लिये काफी हैं।

परन्तु इतिहासः न मौनः जातः इतिहासस्य घोषणा विद्यते । यद् मोहमदेन अनुचितं कृतम् । तस्य आकाश वाण्या अनुचितं विहितं । मोहमदः पापकर्ता अपराधी तस्य इल्हामोपि अपराधी तथा च तस्य अल्लामियाँ एवं जिबराइलोपि अपराधिनौ ।

इदं नासीत् यद् मोहमदः स्व कीयं पापं न जानाति अपितु जानात्येव । यदि तस्य दृष्टिपातः अकस्मात् जैनवा शरीरे न पतेत् । सापि स्वसुन्दरं शरीर सम्यक् आच्छादयेत् तर्हि दिनस्य प्रकाशे अयं अन्धकारः न स्यात् । यद् जात तद जातमेव । साम्प्रतमग्रे अवलोकनीयम् । प्रथमं तु अस्य स्वस्त्री मण्डलस्य रक्षणस्य विचारा संजाता । पुरा सर्वे पुरुषाः स्वतन्त्ररूपेण मोहमदस्य गृहेषु आवागमनं कुर्वन्तिस्म । तस्य स्त्रीवर्गेण सह संलापयन्ति । कदाचित् कस्यचित् पुरुषस्य तादृशी दशा न भवेत् यादृशी दशा मोहमदस्य संजातासीत् संभवोस्ति कापि मोहमदस्य भार्य्यातथा

रङ्गीले रसूल का यह रङ्ग सबसे अनोखा है । न पुत्र पुत्र होता है । न उसकी वहू वहू होती है । इससे पाठक गण जान सकते हैं कि मोहमद किसी भी नारी को माता पुत्री तुल्या नहीं मानता है । जब दत्तक पुत्रों की बहू के साथ यह व्यवहार है तो क्या यह ढङ्ग औरस पुत्रों की बहुओं के साथ सम्भव नहीं है । उनकी पत्नी को भी मोहमद ग्रहण करता है । तो धर्म पूर्वक स्वीकार की हुई बहिन बेटियां कैसे सुरक्षित रह सकती हैं । उस समय के मुसलमान मौन हो गये । परन्तु इतिहास न मौन हुआ । इतिहास की घोषणा है कि मोहमद ने अनुचित किया उसके इल्हाम ने अनुचित किया । मोहमद पापकर्त्ता गुन्हागार उसकी आकाशवाणी उसका अल्ला व जब्रायिल सारे के सारे गुन्हागार हैं । यह बात नहीं कि मोहमद अपने पाप को न जानता हो बल्कि जानता ही था । यदि उसका दृष्टिपात अकस्मात् जेनबा की देह पर न

भवेत् यादृशी जैद पत्नी जैनवा प्रसिद्धि प्राप्ता। अतएव प्रबन्धो अवश्यमेव विधेयः। आकाशः वाणी शृङ्खला चालिता। कार्य्यं सिद्धं जातम्। सूरा उत्तरिता।

ऐ मोमीनाः रसूलगृहे मा गच्छन्तु। यदि किमपि पृष्टव्यं स्यात् तर्हि वस्त्रेण अन्तरायं कृत्वा पृच्छन्तु। एषा व्यवस्था उभयोः युष्माकं तासाञ्च हृदय शुद्धि कारणं भविष्यति। एतद् अनुचितं यद् मोहमदस्य मनसि पीडा भवेत्। नेदं यद् मोहमदस्य भार्य्यया सह विवाहो विधेयः। कथं रसूलस्य सर्वाः भार्य्याः मोमिनानां कृते मातरः भवन्ति। सूरये अखराब अध्याय सप्तमे विद्यते। अन्तिमं वाक्यं मम रुचिकर मस्ति। अहं स्वयमेव ताः सर्वा स्वामातृः कथयामि।

अग्रे आकाशवाणी कथयति—भो रसूलस्य भार्य्याः पुत्र्यश्च मोमिनानां पत्न्यः शृणवन्तु यूयं सर्वाः स्वमुखंवस्त्रेण आच्छादयथ

==========================

गिरता। और जैनबा भी अपने सुन्दर शरीर को ढाप के रखती तो यह दिन दहाड़े प्रकाश में अन्धेरा न होता। जो होना था वह होगा।

अब आगे देखना चाहिये। प्रथम तो मोहमद को अपनी बेगमात् की रक्षा का ध्यान आया पूर्व सब पुरुष स्वतन्त्रता पूर्वक मोहमद के घर आते जाते थे। उसकी बीबियों से बातचीत करते थे। कभी किसी पुरुष की ऐसी हालत न हो जैसी मोहमद की हुई थी। सम्भव है मोहमद की कोई बीबी ऐसी हो जावे जैसी जैद की पत्नी जैनबा प्रसिद्ध हुई। इसलिये प्रबन्ध अवश्य करना चाहिये। इल्हाम की शृङ्खला को हिलाया। और काम बन गया। कुरान में आयते उतरी कि हे मोमीनों रसूल के घर में मत जाओ। यदि कुछ पूछना हो तो परदे की ओट से पूछ लिया करो। यह व्यवस्था तुम्हारे और उनके दिल की पवित्रता का कारण होगा।

पुन: अस्मिन् अष्टमे अध्यायेस्ति मोमिन भार्य्याभ्य: ता: सर्वा: स्वनेत्रेषु स्वाधिकारं स्थापयेयु: स्वलज्जां रक्षन्तु स्वकुच वक्षसि वस्त्रेण आच्छादयन्तु । कोमलाङ्गनां रक्षणं विधेयम् अधुना नियमा: नियोजिता: नैकटिकानाँ गृहे केन प्रकारेण प्रवेशो विधेय: ।

यदि एते नियमा: जौनव गृह गमनात् पूर्वं प्रचारिता: स्यु: तर्हि जौनवाया: सतीत्व रक्षा गृहरक्षणं मोहमदस्य कालुष्यं कलंकं न स्यात् । परन्तु किं अन्तरपटेन मोमिना: दुराचारात् रक्षिता: सन्ति दुराचारस्य रक्षायै परमौषधं हृदयस्य पवित्रता वेविद्यते । यदि मोहमद: हृदय शुद्धिविषये अधिकं उपदिशेत् तर्हि स्वसम्प्रदायस्य मतानुयायिन: निर्दोषिण: भवेयु: । (म्योर साहब कृतेहयति मोहमदी ग्रन्थे) वेगम साहिवा भूपालस्य हजगता मक्कानगरस्य वृत्तं लिखति सा अरबदेशस्य व्यवहारस्य चित्रमेवं चित्रयति ।

==========================

यह ठीक नहीं कि तुम मोहमद के मन को दु:ख पहुँचाओ । यह नहीं कि तुम मोहमद की भार्य्या से विवाह करो । क्यों कि रसूल की सब औरतें तुम्हारी मातायें हैं (सूराये अखराब सातवे बाव में है) । आखिर की बात मुझे रुचि कर है । मैं उन सबको माता ही कहता हूं । आगे कुरान कहता है कि हे रसूल की औरतें और बेटियाँ और मुस्लिम महिलायें सुनो । तुम अपने मुँह और बदन को वस्त्र से ढाप लिया करो । आगे अष्टम अध्याय कुरान में है कि मुस्लिम औरतें अपने नेत्रों को काबू में रखें । अपनी लज्जा की रक्षा करो अपने सीनों और कुचों को वस्त्र से ढाप कर रखो । कोमल अङ्गों की रक्षा करो । अब नियम बनाये गये कि अपने पड़ौसियों के घर में कैसे प्रवेश करना चाहिये । यदि ये नियम जैनबा के घर जाने से पूर्व बनाये हुए होते तो जैनबा का सतीत्व घर का नाश और मोहमद की बदनामी न होती ।

यथा अरबदेशीयाः स्त्रियः १०-१० दश दश विवाहान् कुर्वन्ति । याभिः द्वौ पत्यौ स्वीकृतौ ताः संख्यया स्वल्पाः एव । याः स्वपतिं वृद्धत्वं गतं अवलोकयन्ति अथवा अन्येभ्यः नेत्रव्यवहारं कुर्वन्ति तदा मक्का पवित्रस्य सेवायां समुपस्थिताः भवन्ति । अभियोगस्य निर्णयं कारयित्वा स्वपतिं त्यजन्ति । अन्यं युवानं सुन्दरम् धनिकं अभिलषन्ति पतित्वं स्वीकुर्वन्ति । लोकाः पश्यन्तु अन्तरपटस्य इदं वरदानमस्ति ।

स्त्रीमण्डलस्य शृङ्गाराः

अस्य ग्रन्थस्य विषयः रसूलस्य गृहस्थ जीवनस्य नियमाः सन्ति अतएव अन्ये विषयाः न अत्र प्रविष्टाः । परन्तु अत्र अपूर्णता स्यात् । यतः यां अस्मत मसावां नारीं मोहमदः स्वायतीं कर्तुंसन्नद्धः सा यहूदवंशीया मोहमदस्य आग्रहादपि व्यभिचरितुं निषेध

परन्तु क्या परदे ने मुसलमानों को दुराचार से बचाया। दुराचार की रक्षा के लिये हृदय की पवित्रता ही परम औषधि है। यदि मोहमद दिल की पाकीजगी की अधिक नसायत करता तो अपने मजहवी मुसलमानों को गुन्हों के गर्त से वचा लेता । यह बात म्योर साहिव के हयाते मोहमदी में है ।

हज को गई हुई भूपाल बेगम साहिवा मक्का नगर के हालात लिखती है । अरब देशवासियों के व्यवहार का चित्र खिचता है मुसलमानी औरतें १०-१० दश दश शादी कराती हैं । जिसने अपनी दो शादी कराई हो ऐसी तो वहुत कम हैं । जब अपने पति के वुढ़ापे को देखती है या अन्य युवकों से आंखें लड़ाती हैं । तब मक्का पवित्र में पहुँचती हैं । अभियोग का फैसला अपने हक में करा कर पति को तलाक दे देती हैं । और अपने युवक धनिक दोस्त से शादी कर लेती हैं । पुराने को धक्का मार देती है । पाठक देखें कि परदे का परिणाम क्या है ।

यतिस्म । प्रियपाठकाः अस्य कारणं ज्ञातुं असमर्थाः भविष्यन्ति यदि वयं मोहमदस्य यहूदस्य पारस्परिकी मैत्री वृतान्तं न श्रांवयामः । देशत्यागानन्तरं मोहमदाय यहूदवर्गात् अनेकविधाः आशाः आसन् । तेन तैः सह मैत्री कृता यहूदीय सम्प्रदायस्य प्रशंसा विहिता । तेभ्यः स्व मतस्य नोचता पूर्ण द्रमाणपत्र मपि गृहीतम् ।

तदनु मोहमदस्य साहयकानां वृद्धिः जाता । तदाते यहूदाः मोहमदाय अभद्रतायाः कारणं संजाताः । कण्टकवत् दुःखदायकाः लगन्तिस्म । एकदा ते यहूदाः बन्धीकृताः तैः क्षमायाचना कृता । मोहमदेन निर्णयोदत्तः । ते सर्वे यहूदाः घातनीयाः । सहस्रशः यहूदाः क्षणमात्रेण कृपाणेन मृत्यु सदम्नि प्रेषिताः । एका महिलापि मोहमदस्य आदेशेन-घातिता । अनुअम्पा व्यवहारः एकया सुन्दरी नार्य्या सह संजातः अस्याः नाम धेयं रेहाना आसीत् ।

स्त्री मण्डल का शृङ्गार

इस ग्रन्थ का विषय रसूल के गृहस्थ जीवन के नियम हैं अतएव अन्य विषयों की चर्चा यहाँ नहीं की है। परन्तु एक बात की चर्चा न करें तो यह ग्रन्थ अधूरा रह जायगा । इसलिए अस्मत अमावा नारी को मोहमद अपने आधीन करने को तैयार हुआ वह यहूदन उसके आग्रह पर भी भोग कराने को तैयार न हुई। यदि हम मोहमद और यहूदियों की मित्रता न सुनावें तो सब बात समझ में न आवें । हिजरत के बाद मोहमद को यहूदियों से अनेक प्रकार की आशायें थीं । उसने उनसे मित्रता की । उनके मजहब और उनकी मूर्तियों की प्रशंसा की । अपने सम्प्रदाय का नीच होने का प्रमाण प्रत्र प्राप्त किया । परन्तु मोहमद की ताकत बढ़ गई । सब फैसलों को तोड़ दिया । उनको कैदी बना लिया । उन सबने

सा प्रथमतः पंक्तितः निःसारिता। सा सुन्दरवदना रूपवती अभवत्। मोहमदाय सुरक्षिता मोहमदेनतया सह विवाहितुं प्रार्थना कृता तया न स्वीकृता। इस्लाम सम्प्रदाये समागच्छ तदपि न स्वीकृतम्।

अतएव मोहमदेन सा दासी (लोंडी) कृता। एतादृशी दशायां किञ्चित् समयं जीवतिस्म। परन्तु वहुवर्ष न। स्वजाति स्व यशसोः दुखे माना मृताच। वनीं मुस्तलक युद्धस्यवृतान्तं आयशायाः पृष्ट स्थिति आक्षेप कटाक्ष समये वयं कृतवन्तः। अस्मिन् युद्धे प्राप्त सामग्री वस्तु समुदायेन सह जोएरिया नामिका एका यहूद जातीया समायाता। तस्या मूल्यं विजेतृभिः अधिकं निश्चितम्। मोहमद समीपे मूल्यव्यवस्था प्रेषिता। स्वल्पं न कृतम्। अपितु पूर्वनिश्चित मूल्येन स्वयं गृहीता भार्य्या च कृता।

यदा जोएरिया मोहमद गृहेगता। तदा आयशा तस्याः

==========================

क्षमा याचना मांग ली। तो भी मोहमद ने उन सबको कत्ल करा दिया। क्योंकि वे कांटों की तरह चुभते थे। एक यहूदन को भी कतल करा दिया। एक सुन्दर औरत पर ही कृपा की गई। उसका नाम रेहाना था। उसको पंक्ति में से निकाल लिया वह सुन्दर वदन रूपवती थी। उसके साथ मोहमद ने शादी करनी चाही उसने मना कर दिया। मुसलमान होना भी स्वीकार न किया। मोहमद ने उसको लोंडी दासी बना लिया। यह इस दशा में कुछ समय जीती रही परन्तु बहुत वर्ष नहीं। अपनी जाति व यश के दुःख में दुःखित होकर मर गई। बनी मुस्तकल युद्ध की चर्चा हम आयशा के जङ्गल में रह जाने के आश्रम के समय कर चुके हैं। इस युद्ध में प्राप्त सामग्री में एक यहूदन जाएरिया नाम की औरत मिली थी। विजेताओं ने उसका मूल्य लगाया वह अधिक था। मूल्य व्यवस्था लेने मोहमद के पास भेजा। मूल्य कम

सुन्दरतां दृष्ट्वा ज्ञातवती । एषा न परावर्तयिष्यति । भयः समुत्पन्नः भवेत् न भवेत् इयं सपत्नी (सौतिम्) भविष्यति । तदेव संजातम् । खैवरः अपि यहूदस्य लघुनगरं मोहमदेनाक्रान्तं विजितं तदधीशः कमानः मृतः । तत्पत्नी प्राप्ता । मोहमदः तां विवाहयितुमिच्छन् सास्वीकृतवती । मदीनेगन्तुं प्रतीक्षा नासीत् । तत्रैव मृत्तिका स्थण्डिलं कृत्वा तस्योपरि वस्त्राणि आच्छादय खर्जूरनवनीत दधिभिः प्राति भोजः कारितः । नवीना भार्य्या श्रृङ्गारिता । मोहमदः तां एकस्मिन् कक्षे नीतवान् रक्षार्थं सम्मन्ततः विश्वस्ताः सैनिकाः सन्नद्धाः कारिताः । सा कदाचित् स्व मृतपत्युः परिवर्तनार्थं मोहमदं न आक्रमेत् ।

परन्तु एवं न जातं तस्याः मस्तिष्के आघात चिन्हम् दृष्ट्वा पृच्छति । किमिदं सा उत्तरति स्वप्नस्य वृतान्तं स्वपत्ये वर्णितम् । श्रुत्वा स शङ्काशोलोभूतः । एषा मोहमदेन सह विवाहितुं

==========================

न किया और स्वयं उस मूल्य से उस जाएरिया औरत को ले लिया और पत्नी बना अपने घर ले आया । तब आयशा उसकी सुन्दरता देखकर जान गई यह अब वापिस न जायगी । डर लगा हो न हो यह सौत बनेगी । यही बात हुई । खैबर नामक यहूदियों का छोटा नगर था । मोहमदने उस पर आक्रमण किया । जीत लिया उसका राजा कमान मर गया । उसकी पत्नी मिली उससे भी मोहमद ने विवाह कर लिया ।

मदीना पहुँचने की प्रतीक्षा न की । वहीं पर मिट्टी का टीला बना उस पर वस्त्र बिछाकर अखर्जूर स्मखन दही की दावत की । नवीन वहू को श्रृङ्गारा गया । मोहमद उसको एक तम्बू में ले गया । अपनी रक्षा के लिए चारों तरफ विश्वस्त सशस्त्र सैनिक लगा दिये । कहीं वह औरत अपने मरे हुए पति का बदला लेने को मोहमद पर आक्रमण न कर दे । परन्तु ऐसा न हुआ । उसके

इच्छति। बलेन ताडितवान् माम्। इत्यं इदं आघात चिह्नं वर्तते।

भो प्रिय पाठका: भवद्भि: किमपि ज्ञातम्। या मनसा मोहमदं वाञ्छति। तस्या: सदाचार विषये किं कथनीयम्। खैवरनगरात् सर्वे मदीनां समायाता: तदनु मोहमद: कावा यात्राँ कृतवान्। एषा धार्मिकी यात्रा प्रथमा आसीत् यात्रायै कावामन्दिरोपासकाधिकारिभि: आज्ञाप्रदत्ता आसीत्। अत्रापि अस्मिन्नवसरे मोहमद: स्वपापकर्मात् न निवर्तित:। तत्रापि मेमुना नामवती तस्य पितृव्यस्य अब्बासस्य विधवा अवर्तत्। २६ वर्षीया सम्वेद्धेन मोहमदस्य समीपस्था अतएव स्व पितृव्यस्याग्रहेण सापि विवाहिता। मदीना मस्जिदे भार्य्याभ्य· नव कक्षा आसम्। अधुना दशममपि निर्मितम्. एता: सर्वा: कुराननियमानुसारेण मोहमदस्य विवाहिता:। दक्षिणहस्तेन

==========================

माथे पर आघात का निशान था देख कर मोहमद ने पूछा यह क्या है। उसने कहा मैंने अपने पति को स्वप्न का हाल सुनाया। वह शङ्का शील हुआ कि यह मोहमद के साथ शादी करना चाहती है क्रोध में आ मेरे माथे पर लोहा मारा यह निशान वहीं है। प्रिय पाठक गण आपने कुछ समझा जो मन से मोहमद को चाहती है उसके सदाचार के विषय में क्या कहना। खैंवर नगर से सब मदीना आये उसके बाद मोहमद ने कावा की यात्रा की। यह धार्मिक प्रथम यात्रा थी। यात्रा के लिए मन्दिर के पुजारी और अधिकारी गण ने आज्ञा दी थी। यहाँ पर इस अवसर पर भी मोहमद अपने पाप कर्म से न बचा। अपने चचा अब्बास की मेमूना नाम की सुन्दर विधवा थी २६ वर्ष की रिस्ते में मोहम्मद की समीपस्थ थी। आग्रह पूर्वक उससे भी शादी कर ली। अब तक मदीना की मस्जिद में नव कमरे औरतों के लिए बन गये थे।

प्राप्ताः अभवन् । शेष दासी वर्गः अगणितः आसीत् ।

मारिया

(इदं वृतान्तं इदीस मुसलिम हुसेनी भाष्ये विद्यते)

ईसवी ६२८ तमे वर्षे मोहमदः स्वदूतं लुकोलसस्य समीपे प्रेषितवान् लुकोलस महानुभावेन पैगम्बरत्वं न स्वीकृतम् । परन्तु मोहमदेन सह मित्रतां स्वस्तिक सम्बन्धं स्थापयितुमिच्छन् दासी द्वय उपहाररूपेण प्रेपितवान् मोहमदाय । तयोः मध्ये एका मारिया नामवती आसीत् । मारिया कृते मस्जिद गृहेषु स्थानं न लब्धम् दासी कारणात् । मारियायै एका पृथक् वाटिका निर्मितः । मोहमदः कदाचित् तत्र गच्छति तया सह आनन्दवेलां यापयति स्म ।

मारिया विषये मोहमदस्योपरि आक्षेपाः पतिताः । दासीरक्षणं

==========================

दशम कमरा भी बना लिया । यह सब औरतें कुरानी कानून से मोहमद से विवाहित थी । दाहिने हाथ से प्राप्त की । शेष दासी वर्ग अगणित था ।

मारिया

(यह बात हदीस मुस्लिम हुसैनी भाष्य में है)

ईसवी ६२८ में मोहमद ने अपना दूत राजा लुकोलस के पास भेजा । उसने मोहमद को पैगम्बर न स्वीकार किया परन्तु उसके साथ अच्छी मित्रता स्थापित करने को भेट रूप में दो सुन्दर दासी भेज दी । उनमें एक मारिया नाम की दासी थी मारिया के लिए मस्जिद के कमरों में दासी होने के कारण स्थान न मिला । मरिया के लिये एक वाग बनवाया उसमें एक सुन्दर न्यारा बँगला बनाया । उसमें मरिया को वसाया । मोहमद कभी कभी वहां जाते और मजा उड़ाते थे । मारिया के बारे में मोहमद पर

कुरान नियमानुसारेण विहितम् । यतः मोहमदगृहे दासीवर्ग आसीत् तस्योपरि मोहमदस्य भार्य्याभिः न आक्षिप्तम् न अनुयायिवर्गैः । कस्मात् दासी-तिस्रः समायाता एकदा । मोहमदेन एका स्व श्वसुराभ्यम् उपहार रूपेण दत्ता । एका स्व जामात्रे अली महोदयाय (अबुबकर-उस्मानाभ्याम्) । आधुनिकः जनाःइदं कृत्यं लज्जाजनकं प्रति पादयिष्यन्ति । यतः स्व जामत्रे स्व श्वसुराभ्यां सह एतादृशो वर्तावः असभ्यः-एव ।

आर्य्यावर्ते श्वसुरः पितृतुल्यो भवति तथा जामाता पुत्रवत् । पूज्यवृद्धेभ्यः प्रियतमेभ्यः दासीदानं न सध्यजनाः समर्थयन्ति किन्तु अरवदेशे एतादृशाः नियमाः आसन् । यदा अल्लामियां तस्यादेशेन फरिस्ता साक्ष्य सहितं किमपि नियमनं निर्धारयति । तदा कस्य सामर्थ्यमस्ति य इस्लामस्य पैगम्बरोपरि काफिरः अमुस्लीम आक्षिपेत् । यत् त्वया अनुचितं कार्य्यं कृतम् । न कस्य

==========================

आक्षेप होने लगे । दासी को रखना कुरान कानून अनुसार विहित है । इसलिये मोहमद के घर में दासीवर्ग था । इस पर मोहमद की स्त्रियों ने अथवा अनुयायियों ने कोई आक्षेप न किया था परन्तु एक वार कहीं से तीन दासी मोहमद के पास आईं । मोहमद ने उनमें से एक २ अपने ससुरों को उपहार में दी । (अबुवकर उस्मान को) एक अपने जमाई अली को दी । आज कल के लोग इस कर्म को लज्जा जनक कहेंगे । यह व्यवहार अपने श्वसुर और जामाता के साथ असभ्य है । आर्य्यावर्त में ससुर पिता तुल्य और दामाद पुत्र तुल्य होता है । पूज्य वृद्ध और प्रियतम को दासी दान सज्जनगण स्वीकार नहीं करते हैं । निन्दित समझते हैं । परन्तु अरव देश में ऐसे नियम होंगे । जब अल्लामियां अपने हुक्म से फिरस्तों की गवाही से कोई नियम निश्चित करते हैं तो किसकी ताकत है जो इस्लाम के पैगम्बर

अपि शक्तिः। हन्त साम्प्रतं मोहमदीया अपि मोहमदस्य इमं व्यवहारं निन्दन्ति। सैयद अमीर अली इदं वृतान्तं अमृततुल्यं कृत्वा एक श्वासेन पीतवान्।

मौलाना शिवली वृतान्तमिदं परिवर्तयति। तस्य विचार दृष्ट्या इदं मोहमद गृहे किमपि न जातम् कुरान मध्ये एका सूरत विद्यते। भो रसूल त्वं स्व भार्य्याणां प्रसन्न करणाय तत्कार्य्यं स्वकृते अनुचितं मन्यसे। परन्तु अल्ला तव कृते उचितं कथयति। अल्ला युष्माकं प्रतिज्ञा भंगं कर्तुं स्वीकृतिं ददाति। रसूलः एकदा एक रहस्यं स्व भार्य्यायै कथितवान्। तथा अन्यायै किञ्चित् वृतान्तं उक्तम्। किञ्चित् स्वमनसि रक्षितम्। सा पृच्छति त्वया कस्माच्छ्रुतम्। कथयति रसूलात्। अल्ला यः सर्वव्यापकः सर्वगुणसम्पन्नः। तस्मात् रसूलः प्राप्तवान्।

यदि युवां भार्य्ये अपराधं स्वीकृत्य क्षम्मा याचनां कुरुतम्

===

काफिर अमुस्लीम आक्षेप करें। कि तूने यह अनुचित कार्य किया न किसी की शक्ति है। शोक इस समय मोहमदीय अमोहमदीय सभी इस व्यवहार की निन्दा करते हैं। सैयद अमीर अली इस वृतान्त अमृत तुल्य कर एक श्वास से पान कर जाते हैं मौलाना शिवली इस वाक्यात को बदल देते हैं उसके विचार में ऐसी कोई बात मोहमद के घर में नहीं हुई थी। कुरान में एक सूराह है। हे रसूल तू अपनी भार्य्याओं की प्रसन्नता के लिये उस कार्य को अनुचित समझता है परन्तु अल्लामियां तेरे लिये उस कर्म समुचित कहता है। अल्लामियां तुम्हारी प्रतिज्ञा भङ्ग की स्वीकृति देता हैं। रसूल एक वार एक रहस्य को अपनी एक भार्य्या से कहने लगे। यह किसी से मत कहना। उसने कुछ बात दूसरी को बता दी। कुछ अपने मन में रखी। दूसरी ने पूछा तू ने यह बात किससे सुनी। उसने कहा रसूल से। अल्ला जो

तदा समीचीनम् । यदि युवां रसूलः त्यक्ष्यति तदा तदीयः अल्लामियां तस्मै रसूलाय युवयोः स्थाने त्वदपेक्षया उत्तमाः भार्य्याः ईश्वरोपासिकाः धार्मिका शुद्धाः उपबासरताः विधवाः कुमारिकाः वा दास्यति । किमिदं रहस्यं एकया भार्य्यया अपरायै प्रकाशितम् । मोहमदेन किमुचित मनुचितम् कृतम् । यस्मात्कारणात् अल्लामियाँ ते भार्य्ये ताडितवान् । हदीस हुसैनी भाष्ये लिखितमस्ति । एकदा हफसायाः क्रमः आसीत् । सा अवकाशं गृहित्वा पितृ गृहं गता । तदा तद्गृहे मारिया दासीं आनीय संस्थापिता । तस्मिन्नेव कालि हफसा समायाता । स्वकीयं आराम गृहं अविवाहित नार्य्या भरितं हृष्ट्वा जाज्वलमाना अतीव रूष्टा ।

मोहमदः इमां क्रोधवतीं अवलोक्य कथयति । भो भाग्यवति । यदित्वं मारिया भोग वृतान्तं कस्यैचित् न कथयिष्यति तर्हि अहं प्रतिज्ञाँ करोमि इतोग्रे तया मारियया सहं भोगकार्य्यं न

सर्व व्यापक सर्वगुण सम्पन्न है। उससे रसूल ने प्राप्त की। यदि तुम दोनों औरतें अपना अपराध स्वीकार क्षमायाचना करो तो ठीक है। यदि तुम मोहमद को तलाक दोगी तो अल्ला रसूल को तुम्हारे स्थानमें सुन्दर उत्तम नमाज पढ़ने वाली रोजा रखने वाली खेरात करने वाली विधवा या कुमारी का देगा। यह क्या रहस्य था जो एक ने दूसरी को बता दिया मोहमद ने क्या उचित अनुचित किया। जिस कारण अल्ला ने उन दोनों भार्य्या को ताड़ना की। हदीस हुसैनी भाष्य में है कि एक बार भोग की बारी हफसा की थी वह छुट्टी लेकर अपने बाप के घर गई थी। तब उसके कमरे में मारिया दासी को लाकर ठहराया। उस ही समय हफसा आ गई। अपने कमरे को अविवाहित नारी से भरा देखकर जलती आग के समान क्रोध युक्त हो गई। इस क्रोधवती को देखकर मोहमद ने हाथ जोड़ कहा हे भाग्यवती यदि तू यह

करिष्यामि । तथा ममानन्तरं मे उत्तराधिकारी तव पिता भविष्यति । एषा वार्ता समाप्तिं गता । परन्तु हफसा आत्मना अनियन्त्रिता भूत्वा इदं सर्वं वृतान्तं आयशायै कथयितवती । सा लज्जावती स्त्री आसीत् । आयशायाः अध्यक्षतायां मोहमद भार्य्यामण्डलस्य सम्मेलनं संजातम् । एतत् वृतान्तं श्रुत्वा सर्वाः रूष्टाः मोहमदात् । मोहमदः मदीनानगरस्य एकाकी सम्राट् अयं स्त्री वर्गः कः किं सामर्थवान् । यः मोहमदात् रूष्टतामाचरेत् ।

तस्मिन्नेव समये उक्ता वही समायाता । मोहमदेन भार्य्या वर्गः बहिष्कृतः मास पर्य्यन्तं मारिया गृहे निवासो विहितः । मोहमदः कथयति कुर्वन्तु मम वहिष्कारं हानिश्च । उपालम्भनेन उक्तम् । एतच्छ्रुत्वा अबूबकरः रूष्टः उमर उसमानौ अपि रूष्टौ । यत् दासीकारणात् अस्मदीयाः पुत्र्यः परित्युक्ताः । मासपर्य्यन्तं विहरानन्तरं मोहमदस्य हृदयं कोमलं संजातम् । कथयति

==========================

वात मारिया के भोग की किसी से न कहेगी तो मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि इससे आगे मारिया के साथ रतिक्रिया न करूँगा । मेरे बाद मेरा उत्तराधिकारी तेरे पिता को करता हूं । यह बात समाप्त हो गई । परन्तु हफसा अपने आपको वश में न रख सकीं और यह बात आयशा से कहदी । आयशा लजवन्ती स्त्री थी । आयशा की अध्यक्षता में मोहमद की भार्य्याओं का सम्मेलन हुआ । यह बात सुन सब रूष्ट हो गईं । और मोहमद से विमुख हो गईं । मोहमद मदीना का एक मात्र सम्राट ये औरतें । किसकी क्या ताकत है जो मोहमद से रूष्ट हो जाय । उस समय वह वहीं आई थी । मोहमद ने अपनी बीबियों का वहिष्कार कर दिया । एक मास तक मरिया के घर निवास किया । मोहमद ने कहा करो मेरा वहिष्कार मेरा नया विगाड़ सकती हो । यह बात सुनकर अबूबकर उमर और उसमान रुष्ट हो गये । दासी

अल्लामियां हफसायाः अपराध क्षमां करोति तथा तस्याः भगिनी नामपि अपराधं क्षमां करोति। ईश्वर कृपया रसूलस्य गृहे शान्ति जाता। आरामोपि जातः। गृहयुद्धं समाप्तिमगात्।

मारियया सह विशेष प्रीतिकारणमेत्तत् अस्ति यत् तदुदरात् पुत्रः समुत्पन्नः। मोहमदाय कन्यका आसन् परन्तु पुत्राः उत्पन्नाः भूत्वा मृताः। मौहमदाय उत्तराधिकारी प्राप्तः स्यात् कार्य्यवाहकः सम्पत्ति स्वामी सम्प्रदाय रक्षकः पारिवारिक कीर्तिकरः। पुत्रं को न अभिलषति। सैयद अमीरअली कथयति संभवतो मोहमदेन वहुशः विवाहाः पुत्रलाभाय कृताः। तस्य सर्वोत्तम सन्तानस्य महती इच्छा आसीत् भार्य्याभ्यो न। दासी मारिया एव सन्तान विषये सोभाग्यवती संजाता। नवजात पुत्रस्य नाम इब्राहीम इति निश्चितम्॥

तस्य दुग्धपानाय अजामण्डलं स्थापितम् रक्षितम्। एकदा

==========================

के कारण हमारी वेटियों को छोड़ दिया। एक मास वियोग के बाद मोहमद का दिल नरम हुआ। अल्लामियाँ ने वही भेजा मैंने हफ़सा का और उसकी वहिनों का अपराध क्षमा कर दिया। इस प्रकार अल्लामियाँ की कृपा से मोहमद का गृहयुद्ध समाप्त हुआ शान्ति और आराम हुआ। मारिया के साथ विशेष प्रीति का कारण यह था कि उसके पेट से पुत्र उत्पन्न हुआ था। मोहमद को कन्यायें थी पुत्र उत्पन्न हो मर जाते थे। मोहमद को उत्तराधिकारी कार्य्यवाहक सम्पत्ति व सम्प्रदाय रक्षक परिवार की कीर्ति बढ़ाने वाले पुत्र की आवश्यकता थी वह उसको प्राप्त हुआ। सैयद अमीरअली लिखते हैं कि शायद मोहमद ने पुत्र प्राप्ति के लिये अनेक शादियां की होंगी। उसको सर्वोत्तम सन्तान की वड़ी इच्छा थी। भार्य्याओं से अधिक सौभाग्यवती मारिया दासी हुई। नवीन पुत्र का नाम इब्राहिम

स्वपुत्रं इब्राहिमं आयशा समीपे नीतिवान् । अवलोक्य कथयति मोहमद सदृशोस्ति न वा । आकृत्या स्वरूपेण वर्णेन साक्षाद् मोहमद एव । आयशा सापत्य पुत्रं दासीजं नेच्छतिस्म घृणां करोति । उक्तवती अस्य अन्येन सह समता करणीया । व्यर्थं स्वकीय स्वरूपस्य मा अपमानं कुरु । मोहमदः तं रुष्ट पुष्टं संकेतयति । पश्य कीदृशोवलिष्टः पुत्रो वर्तते । आयशा उवाच यस्य कस्य दुग्धपानाय अजामण्डलं दद्यात् स एव प्रफुल्लितो भविष्यति ।

अस्माभिरेतद् वर्णनम् अतः कृतम् येन बहुपत्नीबन्तः शिक्षां लभेयुः । पिता पुत्रस्य आकृतिं दृष्ट्वा शैत्यं प्राप्नोति परन्तु भार्य्यास्ति या सापत्नीतः द्वेषेण ज्वलता दृश्यते । इब्राहीमः दौर्भाग्येन स्वल्प जीवनं कृत्वा माता पितरौ त्यक्त्वा परलोकं गतः । मोहमदस्य नेत्रयोः अश्रु पातो जातः । तदा अनुयायिनः

===========================

रखा गया । उसको दूधपान के लिये एक बड़ा भारी बकरियों का झुण्ड रखा गया । एक वार मोहमद अपने पुत्र इब्राहीम को लेकर आयशा के पास गये कहने लगे । देख मेरे सदृश है ना । आकृति से स्वरूप से रंग से साक्षात् मोहमद ही है । आयशा सौतीला दासी पुत्र को नहीं चाहती थी घृणा करती थी । कहने लगी इसकी उपमा दूसरे से कीजिये । व्यर्थ में अपने रूप का अपमान मत करो । मोहमद कहने लगा देख कैसा मोटा ताजा तगड़ा है । आयशा कहने लगी जिस किसी के लिये दूधपान को अजा मण्डल रखा जाय वही रुष्ट पुष्ट हो जायगा । हमने यह वर्णन इसलिये किया कि बहुत औरतें वाले शिक्षा ग्रहण करें । पुत्र को देख पिता प्रसन्न होता है । परन्तु भार्य्या है जो सौतीले पुत्र को देख द्वेष से जल रही है । इब्राहीम दुर्भाग्य से थोड़ा जी कर माता पिता को त्याग यमलोक सिधार गया । मोहमद रोने

कथयन्तिस्म । भवान् तु अस्मान् धैर्यं धारणस्य उपदेशं दत्तवान् । अद्य भवते किं जातम् । आदिशति देवदूतस्य प्रभावेण सूचयति । अन्ततोगत्वा अहमपि मनुष्योस्मि । व्यर्थं रोदनं निषेधयामि । इदं कः कथयति । प्रेम्णा हृदयं रिक्तं न करणीयं ।

भो मोहमद अहं त्वामभिलषामि । यतः त्वं मनुष्योस्ति । त्वं सन्तानमिच्छसि । तस्य मरणेन शोकोस्ति । यदि प्राकृमिक नियमानुसारेण स्वजीवनं यापितं स्यात् । परमात्मनः नियमान् न खण्डितवान् तदा परमात्मातेभिक्षावस्त्रं इच्छायाः मुक्ताभिः भरितं कुर्यात् । वयं आश्चर्यवन्तः । यत् अस्याः कवती दास्याः कृते जनाः कथं आक्षिपन्ति । स्वयं मोहमदीयाः इमं कृष्णा हस्तं इव वस्त्रेण आच्छादयन्ति । अन्यथा तु स्वगृहे दासी रक्षणस्य आज्ञा कुरानात् निःसारणीया ।

एवं कर्तुं न पारयन्ति । तदा हफसा गृहे दासी निवासेन

===========================

लगे । तब मुसलमानों ने कहा आप तो रोने को मना करते थे अब आपको क्या हो गया । रसूल होने के कारण मैंने आप लोगों को व्यर्थ रोने पीटने को मना की थी । मैं भी मनुष्य हूं प्रेम से हृदय रिक्त करने की मना नहीं हैं ।

लेखक कहते हैं । हे मोहमद मैं तुमको चाहता हूँ क्योंकि तू मनुष्य है । सन्तान को चाहता है उसके वियोग में शोक करता है । यदि तुमने प्राकृतिक नियमानुसार स्वजीवन व्यतीत किया होता परमात्मा के नियम को न तोड़ा होता तो ईश्वर तेरे भिक्षापात्र इच्छाओं के मोतियों से भर देता हम आश्चर्य करते हैं कि इस दासी के लिये लोग क्यों आक्षेप करते हैं । मुसलमान स्वयं काला हाथ के समान छिपाते फिरते हैं । नहिं तो कुरान से गृह में दासियाँ रखने के हुकम को निकाल देना चाहिये । यदि ऐसा नही कर सकते हैं तो हाफसा के घर दासी निवास से

इस्लामस्य कः स्तम्भः तुटितः । हफसायाः क्रोधकारणमुचितम् । तस्या भार्य्यात्वें भेदः जातः कीर्तिः खण्डिता । यत् एकालघ्वी दासी तस्याः निवासगृहे शयनं करोति । आयशायाः कोप करणं समीचीनम् । यत् तस्याः एका भगिन्याः अपमानं संजातम् । भार्य्यात्वस्यापि अपकीर्तिः जातः । स एव अधिकारः भार्य्यात्वस्य स्वकीय आसीत् । परन्तु आक्षेपकर्तृणां कृते कोयं अवसरः । सेवां भार्य्यात्वस्य अधिकारकः मारितः । जैनबा बिना विवाहेन समुचिता पत्नी ज्ञाता । तर्हि मारिया कथं न भवेत् । अल्लामियां अस्याः अपि विवाहं पठितवान् यत्र उभयोः हृदयं मिलित तत्र अल्लामियाँ हि (काजी) विवाह पाठकः अस्ति जिब्राइलः साक्षी । एवं मारिया मोहमदस्य भार्य्या जाता ।

स्त्रैणः (बीबोवाला) बहु भार्य्यावान्

(१) श्रीकृष्णः वंशो विभूषितः उच्यते । वंशी एव कृष्णस्य

==========================

इस्लाम का कौनसा स्तम्भ टूट गया । हफसा का क्रोध करना उचित भार्य्यापने में फर्क पड़ गया । बदनामी हुई । कि उसके घर में एक छोटी दासी ने शयन किया । आयशा का कोप करना भी ठीक है कि उसकी एक बहिन का अपमान हुआ । बेगमपने की बेइज्जती हुई । यह भार्य्यापन का अधिकार उन देवियों का था । परन्तु आक्षेप करने वालों के लिए यह कौनसा अवसर था उनके भार्य्यापन का अधिकार किसने मारा था । जैनबा बिना शादी के पत्नी बन गई । तो मारिया भी पत्नी क्यों न बने । अल्लामियां ने इसका भी निकाह आसमान पर पढ़ दिया । जहाँ दो दिल मिल जावे वहां अल्लामियां ही काजी होता है और जिब्राइल गवाह होता है । इस तरह मारिया मोहमद की पत्नी बन जाती है ।

विभूषणं यशस्करमस्ति । वृन्दावनस्य अरण्यं धेनूनां समूहः गोपानां बाल बालिका सन्ति। आश्चर्यवान् गोपालः कृष्णः वशीं गृहीत्वा तिष्ठति । सर्वतः चतुर्दिशतः गुजायमानं अस्ति । एकः प्रियतमः रागः भूमौ आकाशे शब्दायते। गोपाल बाल बालिकाः उन्मत्ताः भवन्ति । यावत्पर्यन्तं अरण्यं वृक्षाः पत्राणि सर्वं उन्मतं दरीदृश्यन्ते । इदं कृष्णस्य बाल जौवनम् । युवावस्था समायाता कंसवधःजरासंधवधः। तत्रापि युद्धघोषणा अनया वंशिना कृता आसीत् । वृद्धावस्था समायाता । युवावस्थायाः उत्साहान् वृद्धत्वं गृह्णाति । सा एव वंशी सभ्यता आलापेन दुष्टा न् दुश्चरितान् सदाचारवतः करोति । मार्ग भ्रष्टान् सुमार्गे स्थापयन्ति । कुरु क्षेत्रस्य युद्धे का मार्ग प्रदर्शिका आसीत् । सा एव वंशी । यस्याशब्दाः भूमौ ईश्वरीयाः शब्दाः प्रसिद्धाः । श्रीमद्भगवद्गीता अर्थात् आकाशवाणी । एषा एव अद्यतनीयः श्री कृष्णोस्ति ।

==========================

स्वंण मोहमद वीबो वाला

(१) श्री कृष्ण वंशी विभूषित कहलाते हैं। वंशी ही श्री कृष्ण का श्रेयस्कर विभूषण है। वृन्दावन का जङ्गल गोओं का झुण्ड गोपालों की बाल बालिकाये हैं। आश्चर्यवान् गोपालक श्री कृष्ण वंशी लिये खड़े हैं। सर्वतरफ सब दिशाओं में गुंजायमान एक प्रियतम राग आकाश व भूमि में सुनाई दे रहा है। ग्वालों के बाल बच्चे उन्मत्त हो रहे हैं। जहां तक जङ्गल है वृक्ष पत्ते फूल फल सब उन्मत्त प्रसन्न दिखाई रहे हैं यह कृष्ण का बाल चरित्र है । युवावस्था आई। शिक्षा वेद धनुर्वेद आदि पढ़ शक्ति प्राप्त कर कंस का वध किया जरासन्ध को भी समाप्त किया। वहां पर युद्ध की घोषणा इस ही वंश से की। वृद्धावस्था आई। वृद्धावस्था से उत्साहों और युद्धों को ग्रहण किया। वही वंशी अब सभ्यता आलाप करने लगी। दुष्ट और दुष्ट चरित्रों को सदाचारी बनाने लगी। मार्ग भ्रष्टों को सुमार्ग पर लाने लगी। वशी ही

जीवित: कृष्ण: नेत्र समक्षे कर्ण समीपे वर्तमान: कृष्ण: । एक एव शब्दे कृष्णस्य संपूर्णं जीवन चरित्र चित्रं समक्षे समायाति । असौ प्रियतम: शब्द: वंशीवान् ।

(२) गुरू गोविन्दसिंह: कलंगोवान् उच्यते । पुरा नृपा: गुरुवोपि आसन् । परन्तु केपि कलंगीवन्तो न । सर्वस्मात् प्रथम: एव अयं कलंगींधारितवान् । अन्ये गुरव: स्वाधीना नासन् । अयं नियमानुसारेण रणक्षेत्रे विजेता आसीत् । कस्यचिदपि यवन नृपस्य आधीनता न स्वीकृता । अयमेव गुरू यज्ञ: । एतेहि योद्धा आसन् । बलिदानमपि इदमेव । इयमेव मृत्यु: स्वतन्त्रता स्वाधीनता । एकस्मिन् शब्दे (कलंगीवान्) एते सर्वे वृतान्ता: सम्मिलिता प्राप्यन्ते । तत एव गुरूगोविन्दासहस्य अभिलाषा अन्वेषणं तात्पर्यं क्रान्ति: कीर्ति सर्वं ज्ञायते ।

(३) ऋषि दयानन्द: पञ्चनददेशे वेदवान् उच्यते जनै: ।

कुरुक्षेत्र के युद्ध का मार्ग प्रदर्शक थी । जिसके शब्द ईश्वरीय शब्द प्रसिद्ध हुए । श्रीमद् भगवद् गीता अर्थात् आकाश वाणी यही आधुनिक श्री कृष्ण है । जीवित कृष्ण नेत्रस्थ कृष्ण कर्णस्थ कृष्ण वर्तमान कृष्ण । एक शब्द से ही श्री कृष्ण का सम्पूर्ण जीवन चरित्र चित्र समक्ष हो जाता है । वह प्यारा शब्द है। वंशीवाला ।

(२) गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज कलङ्गी वाला कहलाते हैं इनसे पूर्व बहुत गुरु हुए । परन्तु किसी ने कलङ्गी धारण न की । सर्व प्रथम इन्होंने ही कलङ्गी धारण की । अन्य गुरु स्वाधीन स्वतन्त्र न थे । यही नियमानुसार रण क्षेत्र में विजेता हुए थे । किसी मुसलमान बादशाह की दासता को स्वीकार नहीं कया था । यही गुरुयज्ञ था ये ही योद्धा थे । बलिदान भी यही था । यही भृत्यु स्वतन्त्रता, स्वाधीनता एक ही शब्द में आ जाती है

ऋषेः कार्य्यं वेदः आदेशः वेदः जीवनं वेदः मृत्युकारणं वेदप्रचारः। ऋषेः श्वासः प्रश्वासः वेदमन्त्राः आसन्। वेदवान् ऋषिः अभिधानं अतीव रूचिकरं श्रूयते। अभिधानं उक्तं तत एव ऋषि हृदयं प्राप्तम्। ऋषेः आत्मापि प्राप्तः।

(४) मोहमदस्य किमभिधानं स्यात् येन तस्य जीवन वृतान्तस्य सम्पूर्ण चरित्रं चित्रं नेत्रयोः समक्षे समागच्छेत्। मया मोहमदस्य जीवनं आदितः अन्तपर्य्यन्तं पठितमस्ति। विचारयामि किं सूत्रमस्ति यस्मिन् मोहमदस्य जीवन पुष्पाणि फलानि प्रोतानि भवेयुः। विचार क्रियाचित्राणि समक्षे समागच्छेयुः। कर्म वाण्याः जीवितं चित्रं भवेत् मोहमद जीवन लीलायाः तदापटः उत्तिष्ठति। यदा माता खुदीजया सह विवाह करणंनिश्चितम्। एतत्पूर्वं कार्य्यं जातं सर्वं विवाह कार्य्यस्य सन्नद्धता आसीत्। खुदीजया सह विवाहः विहितः। मोहमदः पैगम्बरः जातः मोहमदस्य पैगम्बरत्वं

========================

कलङ्की वाला। ये सारे हालात साथ मिल जाते हैं। इस ही शब्द से ही गुरु गोविन्द जी की इच्छायें तात्पर्य क्रान्ति कीर्ति सब कुछ मिल जाता है। कलङ्की वाले की जय।

(३) ऋषि दयानन्द पंजाब में वेदावालां कहे जाते हैं। ऋषि का काम वेद आदेश वेद जीवन वेद मृत्यु वेद प्रचार कारण। ऋषि के श्वास प्रश्वास वेद थे। वेदावालां कहा और ऋषि प्राप्त हुए। यही नाम रुचिकर सुनाई देता है। वेदावालाँ नाम लिया और ऋषि का हृदय प्राप्त हो गया आत्मा भी प्राप्त हो गया।

(४) मोहमद का क्या नाम हो जिससे हजरत मोहमद का सम्पूर्ण जीवन चरित्र चित्र नेत्रों के समक्ष आ जावे। मैंने मोहमद का जीवन आदिसे अन्त तक पढ़ा है। विचार करताहूं कौनसा ऐसा सूत्र है जिसमें मोहमद के जावन पुष्प पत्र फलों को परोया जावे। विचार और क्रिया सामने आ जावे। कर्म व वाणी से जीवित

सर्वस्मात् प्रथमं केन स्वीकृतं ? तस्य भार्य्यया खुदीजया। पैगम्बरत्वे महती सहायता केन दत्ता ? खुदीजया। मक्का नगरस्थ जनानां शत्रुतातः केन रक्षाकृता ? खुदीजाया प्रभावेण।

अहं निवेदयामि २५ विंशति वर्षात् ५० पञ्चाशत् वर्षं पर्य्यंतं । मोहमदस्य जीवने यदि कापि विशेषता सुन्दरता विद्यते । तर्हि खुदीजाया एव अस्ति। कथयन्ति मोहमदः तस्मिन् समये यथार्थतः पैगम्बरः आसीत्। यदि एतत् सत्यमस्ति तर्हि सा यथार्थता खुदीजायाः आसीत्। खुदीजा मृताः मोहमदेन मक्कातः पलायनं कृतम्। माता सूदाबिवाहिता। आयशा जैनवा प्रथमा, जैनवा द्वितीया, उमसेलमा, उमहबीबा, मैसूना, जोरिया आदयः परिनीताः विवाहिताः। कवती दासी मारिया अविवाहिता हि गृहेस्थापिता।

५० पञ्चाशत् वर्षीयः मोहमदः आसीत् तदा खुदीजा मृता '

चित्र हो। मोहमद के जीवन चरित्र नाटक का परदा तब उठता है। जब माता खुदीजा के साथ शादी करना निश्चित होता है। इससे पूर्व का सब कर्म विवाह कर्म की तैयारी थी। विवाह होगया। मोहमद पैगम्बर हुए। उसकी पैगम्बरी को सर्व प्रथम स्वीकार किया उसकी बीबी खुदीजा ने पैगम्बरी के प्रचार में सबसे बड़ी सहायता भी उस ही ने दी। मक्का नगरस्थ जनता की प्राण घातक शत्रुता से भी खुदीजा ने रक्षा की। मैं निवेदन करता हूं कि २५ पच्चीस वर्ष से ५० वर्ष तक मोहमद के जीवन में विशेषता और सुन्दरता है तो वह खुदीजा की कृपा से है। कहते हैं उस समय मोहमद सचमुच पैगम्बर था। यदि सत्य है तो यह सत्यता खुदीजा की थी। ख़ुदीजा मर गई। और मोहमद मक्का से भागे। माता सूदा से भी शादी की। आयशा, प्रथम जैनवा, दूसरी जैनबा, उसेलमा, उमह बीबा, मैसूना, जोरिया

द्विषष्टि ६२ वर्षे स्वयं मृतः । १२ द्वादश वर्ष मध्ये १० दश नार्य्यः विवाहिताः । अर्थात् सपाद ससाद वर्षे एका एका विवाहिताः । किं वयं मोहमदाय वहु विवाह दोषं स्थापयामः कदापि नहिं । जिह्वा ज्वलेत् यदि मोहमदाय विश्वास विरुद्धावार्ता कापि समागच्छेत् । गान्धी महात्मा कथयतिस्म नारी पवित्रता याः सृष्टि रस्ति । मोहमदस्य जीवनंपवित्रं विचारधारापि पविता परमात्मनः पवित्र स्रष्टौ मोहमदस्य पवित्र दृष्टिः न पतेत् तर्हि कुत्र पतेत् ।

(५) हैनरी अष्टमः यूरोपदेशस्य सम्राट आसीत् तस्य संपूर्ण जीवनं विवाहेषु विवाहत्यागेषु व्यतीतम् । तस्य राज्यस्य दशा वृतान्तं लम्बायमानं आसीत् । स्मरणं कठिनमस्ति अस्य विवाह सूत्रं गृहीतं भार्य्या वर्गस्य नामधेयानि कण्ठी कृतानि । एवं प्रकारेण हैनरी मृतस्य वृतान्तेन पूर्णः इतिहासः कण्ठस्थः जायते ।

==========================

इत्यादि औरतों से शादी की । कवती दामो मारिया बिन विवाह घर में डाल लिया । ५० वर्ष के मोहमद थे तब खुदीजा मर गई थी । स्वयं ६२ वर्ष के होकर मर गये थे । १२ वर्ष में १० औरतों से शादी की । अर्थात् सवा सवा वर्ष में एक एक शादी की । क्या हम मोहमद पर बहु विवाह दोष स्थापित करते हैं । कदापि नहीं । जिह्वा जल जाय यदि मोहमद के लिये विश्वास विरुद्ध बात निकले । महात्मा गान्धी कहते थे कि नारी पवित्रता की सृष्टि है । मोहमद का जीवन पवित्र विचार धारा भी पवित्र थी । परमात्मा की पवित्र सृष्टि पर मोहमद की पवित्र दृष्टि न गिरे तो कहाँ गिरे ।

(५) हैनरी अष्टम युरोप देश का सम्राट था । उसका सम्पूर्ण जीवन विवाहों में और तलाकों में व्यतीत हुआ था । उस राज्य की दशा लम्बी है उसको याद करना कठिन है । उसके विवाहों

हैनरी अष्टमेन ६ षड विवाहाः कृताः आसन् तेषु एव संपूर्ण जीवनं यापितम् मोहमदेन १२द्वादश वर्ष मध्ये तदपेक्षया अधिकाःविवाहाः कृताः । अलंमस्तु । मोहमदस्य जीवनं हैनरी अष्टमस्य जीवनापेक्षया अस्मिन् विषये अतीव अधिकमस्ति । कस्मिन्चित् युद्धे विजयः प्राप्तः परमात्मनः पवित्रा सृष्टेः सुन्दरता नेत्रयोः समक्षे समायाता तत्रैव मोहमदस्य विवाहोत्सवाः जायन्ते ।

येषाँ इष्ट मित्राणि मृतानि ते रूदन्ति । अनाथाः मातृपितृन् विलापयन्ति । विधवाः पतीनां शोकं कुर्वन्ति । मोहमदः रंगीले रसूलः शोक प्रदर्शनं करोति भार्य्या मण्डलस्य वृद्धिमपि विदधाति । अष्ट प्रहरेषु वरराजः (दुल्हा) दृश्यते । प्रीतिभोजः जायते । द्वि खर्जूरस्य भक्षणेनैव भार्य्या कृत्वा गृहे संस्थापिता । अनेकाः विधवाः सौभाग्यवत्यः संजाताः । हजरत आयशा मोहमदस्य अतीव प्रियतमा भार्य्या कथयति । मोहमदाय त्रयः

==========================

के सूत्र को पकड़ा उनकी पत्नियों क नाम याद कर लिये इस प्रकार हैनरी अष्टम का सम्पूर्ण इतिहास याद हो गया । उसने छः विवाह किये थे । इन्हीं विवाहों में ही सारा जीवन समाप्त कर दिया था । मोहमद ने १२ वष मे हैनरी से भी अधिक शादियां की मोहमद का जीवन हैनरी अष्टम से इस बारे बहुत आगे है कहीं किसी युद्ध में विजय प्राप्त हुआ । परमात्मा की पवित्र सृष्टि की सुन्दरता नेत्रों के सामने आई । वहीं मोहमद के शादियों के उत्सव होने लगते थे । जिनक इष्ट मित्र मर गए हैं वे रोते हैं । अनाथ माता पिता का विलाप करते हैं । विधवायें पतियों के लिये शोक कर रही हैं । हजरत मोहमद रंगीला रसूल शोक प्रदर्शन करते हैं । और शादियां कर कर बीबियों से घर भी भरते हैं । हजरत आठों पहर दुल्हा वर राज बने रहते हैं । प्रीति भोज दावतें उड़ाते रहते हैं । दो खर्जूर खाकर खिला कर बहू बनाकर

पदार्थाः अतीव प्रियतमाः आसन् । प्रथमं भार्य्या द्वितीयं सुगन्ध-सारं (इत्र) तृतीयं मिष्ठान्न भोजनम् ।

तत्तु स्वल्पतया प्राप्तम् । सुगन्धसारं इच्छानुसारं लब्धम् । नार्य्यस्तु हजरताय विस्तृतं क्षेत्रमासीत् । अस्यामवस्थायां यदि अहं स्वकीय रंगीले रसूलाय बहु भार्य्यावन्तं कथयामि । तर्हि किं उचितं न भविष्यति । बहु भार्य्यावान् कथनेन मोहमदः प्राप्यते । तस्यात्मापि प्राप्तो भवति । कृष्ण वंशी विभूषितः । रामचन्द्रः धनुर्धारी । गुरू गोविन्दसिंह कलंगीवान् । दयानन्दः वेदोंवाला ऋषिः मोहमदः बहु भार्य्यावान् दरीदृश्यते श्रूयते च । सर्वेषां पैगम्बराणाम् कीर्तिः ।

मोहमदस्य कीर्तिः तस्य भार्य्यामण्डलम् सर्वो सहर्षेण कथयन्तु विजयतां बहु भार्य्यावान् मोहमदः ।

घर में डाल लेते थे । अनेक विधवायें शीघ्र सौभाग्यवती हो जाती थी । आयशा मोहमद की प्राण प्यारी बीबी थी वह कहती थी कि हजरत मोहमद को तीन चीज अत्यन्त प्यारी थी । एक औरतें दूसरी इत्र तीसरी मिष्टान भोजन था । मिठाइयां खाने को बहुत थोड़ी, सुगन्धसार इत्र तो इच्छानुसार मिला । औरतें तो मोहमद के लिये विस्तृत क्षेत्र मिला था । इसी अवस्था में यदि मैं अपने रंगीले रसूल को बीबियों वाला कहूं तो क्या उचित न होगा । बीबी वाला कहने से हजरत मोहमद मिल जाते हैं । उनकी रूह भी मिल जाती है । श्री कृष्ण वंशी विभूषित श्री रामचन्द्र धनुधारी गुरु गोविन्दसिंह कलङ्गी वाला दयानन्द वेदों वाला ऋषि । हजरत मोहमद बहुत बीबियों वाला दिखाई देते हैं और सुने जाते हैं । सब पैगम्बरों की कीर्ति मोहमद की इज्जत उसका स्त्री मण्डल है । इसलिये सब हर्ष से कहिये बहुत बीबियां वाले मोहमद की जय हो ।

मोहमदस्य प्रशंसा अनुभवश्च

सदा बहार सजीला रसूल है मेरा—
हो लाख पीर रसीला रसूल है मेरा ।।
जहे जमाल छबीला रसूल है मेरा—
रसूले इश्क रंगीला रसूल हैं मेरा ।।
चमन में होने दो बुलबुल को फूलके सदके—
मैं जाऊँ अपने रंगीले रसूल के सदके ।।
किसी बिगड़ी बनाना हैं व्याह कर लेंगे—
बुझा चिराग जलानाहै व्याह कर लेंगे ।।
किसी का रूप सुहाना है व्याह कर लेंगे—
किसी के पास खजाना है व्याह कर लेंगे ।।
सदा बहार सजीला रसूल है मेरा ।

अहं मौहमदं कथं प्रशंसामि । किमेतदर्थं तेन १२ द्वादश

मैं मोहमद की प्रशंसा क्यों करता हूं क्या इसलिए कि उसने १२ बारह शादियां की । बीबियों से घर भरना कोई बड़ा महत्व नहीं है । हमने पूर्व निवेदन कर दिया कि यह सब मोहमद के लिये कटुपान (कड़वा चिरायता) था मोहमद की महिमा इसमें है कि इसने दवा के समान पान कर लिया । जैसे.जैसे अनुभव बढ़ा वैसे वैसे बहुत बातों को स्वीकार किया । प्रथम मोमीनों के लिये शादी की संख्या के कोई नियम निश्चित न थे । इसने चार शादी करने की आज्ञा दी । (यह आदेश कुरान सूरये निसा आयत चार में है) वहां पर भी शरत लगी है कि यदि तुम सबके साथ न्यायाकरण कर सको । तब चार औरतें रख सकते हो । इतना ही नहीं इस ही आयत में इस ही एक श्वास में कहा तुम इन्साफ नहीं कर सकोगे । क्या यह बहु शादियां करने को मनाई नहीं है तो क्या है । मोहमद तो बुढ़ापे की वजह बेवश था । इसलिये

भार्य्याः कृताः। भार्य्याभिः गृह भरणस्य किमपि महत्वं नास्ति। अस्माभिः पूर्वमुक्तं एतत् सर्वं मोहमदाय कटुपानं आसीत्। मोहमदस्य महत्वं मस्ति यदनेन कटुपानं औषधिवत् गृहीतम्। यथा यथा अनुभवः एधते तथातथा वहुवार्ता स्वीकृतवान्। पुरा मोमिनानां कृते भार्य्या संख्या विषये न नियमाः निश्चिताः आसन्।

अनेन ४ चतस्त्रः संख्या कृते आज्ञा प्रदत्ता (कुरस्नस्थ सूरये निसा आयत ४ चतुर्थतमेविद्यते) तत्रापि शृती (बन्धनम्) अस्ति। यदि यूयं न्यायाचरणँ कर्तुं शक्नुया तदा चतुर्भार्य्याः करणीयाः। एतदेव नास्ति अस्मिन्नेव आयते अपितु अस्मिन्नेव श्वासे प्रोक्तम्। यूयं न्यायाचरणं कर्तुं न पारयिष्यथ। इदं बहु भार्य्या करणस्य वाधा नासीत् तर्हि किमासीत्। मोहमदस्तु वृद्धत्वात् विवशः आसीत्। यतः शरीरेण सह कल्पना शक्तिः अपि

==========================

शरीर के साथ कल्पना शक्ति भी क्षीण हो गई थी। जो स्वभाव बन गया था। उसका बुढ़ापे में बदलना कठिन था। अस्तु अपने अनुयायियों के लिये आज्ञा दी कि मैंने तो ऐसा न किया परन्तु आप लोग एक से अधिक शादी को न करें। यदि मोहमद को दूसरा जन्म मनुष्यं का मिले तो वह इस जन्म के पाप कर्मों को याद कर बहुत ब्याह करने को डरेगा। और कान पर हाथ धरेगा। क्या मारिया दासी के वृतान्त को भूल जायगा। सब औरतों ने बूढ़े मोहमद का बहिष्कार किया और दुखी कर दिया था। और नाकों में दम कर दिया था घर का नाश और यश में अपयश फैला। फिर यही अच्छा था कि किसी के पेट से पुत्र पैंदा नहीं हुआ था। अन्यथा इब्राहीम को आयशा के पास ले जाना। और उसका लड़के को देख नाक भोंह चढ़ाता क्रोध में आना। अली आयशा की सत्रुता मोहमद के दिल को सदा सताती रहती

क्षीणा जाता। यः स्वभावः संजातः। अस्यां अवस्थायां। वृद्धस्य स्वभावस्य परिवर्तनम् कठिन मासीत्।

अस्तु स्वानुयायि कृते मोहमदेन आज्ञा दत्ता। मया तु तथा न कृतं परन्तु भवद्भिः वहुभार्य्याकरणं हेयम्। यदि मोहमदोपि स्वजन्म कृतं स्मृत्वा द्वितीय मनुष्य जन्म गृहीतवान् स्यात्। तदा तु वहुभार्य्या करणाय कर्णौ हस्तेन स्पृशेत्। किं मारिया दासी वृतान्तं विस्मृतम् सर्वभार्याभिः मिलित्वा वृद्धः वहिष्कृतः पीडितश्च। नासिकायां श्वासाः कृताः। गृहस्थनाशः तथा च यशसि अपयशः। पुनः इदमेव कुशलमासीत्।

यत् कापि पुत्रं न उत्पादितवती। अन्यथा इब्राहीमस्य आयशा पार्श्वे आनयनम्। तथा व आयशा तस्य आकृति स्वरूपं दृष्ट्वा नेत्रनासिकयोः विकृतिं कृत्वा कोपवती जाता। अली आयशायाः मध्ये शत्रुता मोहमदस्य हृदयं नित्यं पीडयति। सः

थी। वह जानते थे कि मैं अपने अनुयायियों के लिये पारस्परिक युद्ध चला कर मर रहा हूं। इस युद्ध से शनैः शनैः सब वरवाद हो जायेंगे। प्रश्न होता है कि स्पष्ट शब्दों में बहुत शादी करने का मना क्यों न थी। १२ बारह स्वयं शादी कर दूसरों को एक शादी ही करो ऐसा उपदेश देना बड़ी भारी शक्ति की आवश्यकता है मोहमद के लिये। उसको पैगम्बरी का सम्मान कर अन्य मुसलमानों के लिये चार शादी करने की आज्ञा दी। नहीं तो अन्तिम रसूल का महत्व न हो। हम सैयद अकबर अली महाशय के साथ सहमत हैं। कि इस कुरान की आयत का कुछ भी अर्थ नहीं है। यदि इसमें बहु शादी का निषेध नहीं है। आज्ञा देने में कमजोरी दीखती है। इसका परिणाम आज तक इस्लाम दुःखदायक भोग रहा है। मुल्ला लोग इन्साफ शब्द का अर्थ खाने पीने वस्त्र पहनने में समता रखना करते हैं। परन्तु सैयद असर अली इस

जानाति यदहं स्वानुयायिनां कृते पारस्परिकं युद्धं चालयित्वा परलोक गच्छामि । अनेन एते सर्वे शनैः शनैः नाशं गमिष्यन्ति । प्रश्नो जायते कथं स्पृष्ट शब्दैः बहुविवाहान् न निषेधयति ।

द्वादश विवाहान् कृत्वा । अन्यान् कथयेत् एक एक विवाहः करणीयः । अत्र अतीव अधिका शक्तेरावश्यकता अपेक्षते मोहमदाय तस्य पैगम्बरसम्मानं स्वीकृत्य अन्येभ्यः मुसलमानेभ्यः त्रिगुण भार्य्याकरणस्य आज्ञा प्रदत्ता । अन्यथा अन्तिम रसूलस्य महत्वं न भवेत् । वयं सैयद अकबरअली महानुभावेन सह सम्मताः स्मः । यदि अस्य आयतस्य कोपि अर्थः नास्ति । तर्हि अस्मिन् बहुविवाह निषेधो नास्ति । आज्ञा प्रदाने शैथल्यं संजात दृश्यते । यस्यपरिणाम अतिदुःख करं इदानीं पर्य्यन्तं इस्लामः वहति ।

मुल्ला महाशयाः न्याय शब्देन भोजन वस्त्राणां समता

शब्द से विषय भोग में विषमता न हो ऐसा करते हैं । वह कहते हैं ऐसा करना मनुष्य शक्ति से बाहर की बात है । इसलिये कुरान की आज्ञा बहु विवाह के लिये स्पष्ट निषेध है । हम अमर अली के विचारों को सत्य मानते हैं । इसलिये मोहमद वृद्धावस्था में आसमान की हूरों को याद नहीं करते हैं । दुनियावी हूरों से दुःखी हुआ स्वर्ग की अप्सराओं से भी डर रहा है । कानों पर हाथ धरता है । यदि मुसलमान मोहमद की शिक्षानुसार नहीं चलते हैं । कुरान के भाष्य पर भाष्य कर करके बहु विवाह को कुण्ठित कर रहे हैं । इस प्रश्न का उत्तर दायत्व इस्लाम की अपनी सभ्यता की कमजोरी का कारण है । खलीफा की इन्द्रिय लोलुपता को मनमें धारण कर अनुचित को भी उचित प्रतिपादन किया है । फिर इस मर्य्यादा का दुष्टफल स्वयं भोग रहे हैं । शिक्षा में संकेत सन्तोष स्वीकार करना अवगुण है । तो भी हम

लज्जा भवेत् । अतः विधानं कृतं तृतीय त्यागानन्तर भार्य्या तदा पुनः स्वपतिना विवाहिता स्यात् । यदा सा भार्य्या अन्यपुरुषेण सहमित्रतां कुर्यात् । तथा तेन सह प्रसंगं भोग मपि आचरेत् । (सूरये वकर रुकू अ० २९ तमेस्ति ।)

लोकाः ? पश्यन्तु एषा प्रथा लज्जा हीना वर्तते । अत्र सैयद अमीरअली लिखति-प्रदेतत् अरब निवासिनां लज्जायाः उत्पादनाय आसीत्—रसूलस्य तात्पर्य्यमिद मासीत् । यद् नारीणां कृते दौ एव त्यागौ स्याताम् । हलाला कार्य्यान्विता भविष्यति इति अनुमानं मोहमदाय नासीत् । अत्र विषये वयं तथ्यं मन्यामहे न कापि आपत्तिः । व्यर्थ मुसलमान बान्धवान् हलाला बन्धनेन बन्धितान् द्रष्टुमिच्छामः यदपि अस्माकं समीपे अस्याः आज्ञा पालनस्य कतिपयानि उदाहरणानि वेविद्यन्ते ।

त्रुटि विधानस्य संजाता । मोहमदस्य भावनायां अपराधो

==========================

हम तो उसकी कल्पना को मानते हैं । हम कुरान की व्यर्थ बातों का मन्सुख (त्याग) करने को तैयार हैं । अगर उसके कुरानी भाई उसकी सम्मति को स्वीकार करें । तब हलाला से नजात मिले । तो भी तलाक पिशाचिनी शेष बच जाती है । अधिक बार नहीं दो बार हो तलाक सही । यह भी बहुत अपराधों का कारण है । मोहमद ने स्वयं जैनबा को तलाक दिलवाया था । प्रत्यक्ष नहीं संकेत से । कुरान मोहमद की बात को खोल देती है । कि उसके दिल में कामदेव की पीड़ा प्रचलित हो रही थी । जो कि अकथनीय थी । मोहमद अपने प्रोग्राम को मन में ही सोचता था मुँह पर परदा डालने की आज्ञा इस बात की गवाही है दूसरे के घर जाने की मनाई दूसरों के साथ बातचीत करने का निषेध । मोहमद और जैनबा का परस्पर तृषित नेत्रों से दर्शन तलाक का कारण हुआ । मोहमद अपनी बीवियों से रुष्ट हुआ । एक मास

नास्ति। सैयद अमीरअली लिखति यत् अस्याः आयताग्रे पुनः एका आयता विवाहाध्याये समायाता। अनया हलाला आदेशः सम्मतिः ज्ञातव्यः। एषा कल्पना आनोवुलस्य एकाकिनी प्लम्ममिः अस्ति। वयं तस्य कथनं मन्यामहे। वयं तु संपूर्ण कुरानस्य व्यर्थां वार्तां खण्डयितुं (मन्सुखं कर्तुं) सन्नद्धाः स्मः। तस्य कुरानी भ्रातरः तस्य सम्मतिं स्वीकुर्वन्तिचेत्। तर्हि हलालातः मुक्ति जायते।

तथापि भार्य्या त्यागः पिशाचिनी तु अवशिष्टा। अधिक वारं न भवेत् द्विवारं भवेत्। इदमपि निश्चयेन कतिपयापराधानाँ कारणमस्ति। मोहमदेन स्वयं जौनवायौ तलाकः (त्यागः) दापितः आसीत् कथतेन नहि संकेतेन कुरानः माहमदस्य भेदं उद्घाटयति यत् तस्य हृदये कापि पीड़ा प्रवर्ततेस्म। सा अकथनीया आसीत्। मोहमदः मनसि एव स्वकीय कार्य्य कलापेन शोचति स्म। मुखे

==========================

तक वह उनसे अलग रहा चिन्तातुर भी। परन्तु क्यों तलाक नहीं दिया। सब औरतें रुष्ट थी। अल्ला मियाँ द्वारा पत्र और सन्देश भी भेजे तलाक का डर भी दिया। तव उनको तलाक देने को तैयार हुआ। परन्तु सूद ने अपनी भोग की वारी आयशा को दी। अल्ला मियां की सलाह से मोहमद तलाक के अपराध से वच गए सूदा भी तलाक की तकलीफ से वच गई। मुस्लिम जिल्द राविया म है। यथार्थ में मोहमद तलाक को नहीं चाहते थे। ऐसी एक हदीस है। हम कुरान को भी हदीश मानते है। अल्लामियां किसी अमल से उतने अप्रसन्न नहीं होते जितने अपनी वीवी को तलाक देने से होते हैं। गुलाम को दासता से मुक्त करना अल्ला की प्रसन्नता का कारण है। इब्न माजा अब्वावुल निकाह ग्रन्थेस्तिय हजरत मोहमद ने १२ वारह शादियां की परन्तु मरण तक अल्ला की प्रसन्नता के लिये एक को भी तलाक नहीं दिया। मुसलमान

वस्त्राच्छादनस्य प्रतिबन्धः। एतानि बन्धनानि साक्ष्यँ वर्तते। अन्यस्य गृहे गमन बन्धनम् । अन्यैः सह वार्तालापायः निषिद्धः।

यत् मोहमदस्य जैनबायाः परस्परं तृषितनेत्राभ्यां मोहावलोकनम् तलाकस्य कारणं जातम् । मोहमदः स्व भार्य्याभ्योऽपि रुष्ट, संजातः मास पर्य्यन्तं भार्य्याभ्यो पृथक् निवासेन चिन्तातुरो अवत्। तलाकं कथं न दत्तवान् । सर्वाः अति रुष्टाः जाताः। अल्लामियाँ द्वारा पत्राणि संदेशाश्च प्रेषिताः। तलाकस्य भीतिः दत्ता । तदा ता त्यक्तुं सन्नद्धो भवत् । परन्तु सूदा स्वकीय भोग क्रम आयशाथै दत्तवती । अल्लामियाँ महाशयस्य अनुमत्या मोहमदः तलाकस्य अपराधात् रक्षितः । सापिसूदा त्यागकष्टात् सुरक्षिता (मुस्लिम जिल्द रावआ) ।

यथार्थतः मोहमदः तलाकं नेच्छतिस्म । एका हदीसा विद्यते । तथा च वयं कुरानमपि हदीसां मन्यामहे । अल्लामियां केनापि

==========================

मिल कर प्रस्ताव स्वीकार करें कि जैसे मोहमद ने स्वीकार नहीं किया वैसे हम भी तलाक स्वीकार न करें। भार्या त्याग अनुचित तलाक अनुचित । तलाक सर्वथा अनुचित है ।

कोसे कजाह (इन्द्र धनुष)

प्रिय पाठक गण ? आपने रङ्गीले रसूल के जीवन के अनेक रङ्ग देखे। कोई रङ्ग तेरे पर भी चढ़ा ? मोहमद अनुभवी पैगम्बर थे । उनके अनुभवों से शिक्षा प्राप्त कर। देख रङ्गीले पैगम्बर का एक ही रङ्ग नहीं है अपितु इन्द्र धनुष के समान पूरे सात रङ्ग हैं।

इन्द्र धनुष के सात रंग

(१) २५ पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन कर। जैसे मोहमद

कृत्येन तादृश: अप्रसन्नो न भवति। यथा मनुष्यस्य स्वकीया भार्य्यायाः तलाकेतु । तथा दासमुक्ति करणं अल्लामियां प्रसन्नतायाः कारणँ जायते । (इब्न माजा अब्बाबुलनिकाह ग्रन्थे विद्यते) हजरत मोहमदः मरणपर्य्यन्तं अल्लामियाँ प्रसादार्थं १२ द्वादश भार्य्याः विवाहिताः । परन्तु एकापि तलाकेन न त्यक्ता । मोहमदीयाः अवगच्छन्तु प्रस्ताव स्वीकुर्वन्तु । यथा मोहमदेन भार्य्या तलाकः (त्यागः) न स्वीकृतः । भार्य्या-त्यागः अनुचितः । तलाकः अनुचितः । तलाकः सर्वथा अनुचितः ।

कौसे कजहः (इन्द्रधनुषः)

प्रिय पाठक ! त्वया रंगीले रसूलस्य जीवनस्य अनेकाः रागाः (रंगाः) अवलोकिताः । किं कश्चित् रंग त्वयि अपि आरूढः । मोहमदः अनुभवी पैगम्बरः आसीत् । तस्य अनुभवैः शिक्षां

ने पालन किया । परन्तु कभी भी मन में काली रात के काले कर्म करने का ध्यान मत करना ।

(२) ४० चालीस वर्ष की बूढ़ी से शादी न करना । किसी पूजनीय वृद्ध औरत के समीप शयन चाहता है । और अपनी अनाथ दशा जन्य दुःख दूर करना चाहता है तो वैसी बूढ़ी स्त्री को माता बना लेना । बीबी न बनाना ।

(३) किसी छोटी बच्ची जो कि गेंद गुड़िया खेलने वाली है उसके साथ शादी मत करना । नहीं तो उस बच्ची के साथ तुझे भी गेंद गुड़ियां खेलनी पड़ेगी । तेरे मरे पर तेरे शिर को रोती फिरेगी । यदि मन में आ जाय तो उस बच्ची को पुत्री बना लिया । बीबी मत बनाना ।

(४) दासी मान्य नहीं है । उसकी सन्तान को बीबियाँ नहीं

विधेयः इति कुर्वन्ति। परन्तु सैयद अमीरअली अनेन शब्देन विषय भोग करणे विषमता न स्यात् इति करोति स कथयति एवं करणं मनुष्य शक्तेः बहिर्भूतमस्ति। अतएव कुरानस्य आज्ञा बहुविवाह प्रतिवन्धिका स्पृष्ट रूपेण दृश्यते। वयं सैयद अमीरअली विचारान् सत्यान् मन्यामहे।

यतः मोहमदः वृद्धावस्थायां आकाशीय हूरान् अपसरान् न स्मरति। भूतलीय हूरेभ्यः अप्सरेभ्यः उद्वेजितः सन् स्वर्गस्थेभ्यः अपसरेभ्यः त्रिभेति। कर्णौ हस्तेन स्पृशति। यदि इस्लाम मतानुयायिनः मोहमदस्य शिक्षानुसारं न चलन्ति। कुरानस्य भाष्या नु भाष्येन मोहमदीय विवाह विषयः कुण्ठितः। अस्य उत्तर दायत्वं इस्लाम मतस्य स्वकीय सम्यतायाः निर्बलता कारण मस्ति।

खलीफानां इन्दियलोलुपतां मनसि स्वीकृत्य उचितमपि

मोहमद की इस सत्यता को देख कर मोहमद की प्रशंसा करते हैं। हम अपने मुसलमान भाईयों को सम्मति देते हैं कि रंगीले रसूल के जीवन से शिक्षा ग्रहण करें। उसकी मित्रता की शिक्षा में उन शब्दों के विपरीत स्वप्न फलों में आचरण न करें।

मोहमद के अनुभव का दूसरा भाग

मैं मोहमद में विश्वास करता हूं। क्या इसलिये कि उसने मुसलमानों को स्त्री त्याग की आज्ञा दी। क्या मैं उसका अनुयायी हूं कदापि नहीं। तलाक की आज्ञा देने से विवाह का सम्बन्ध कृत्रिम हो जाता है। गृस्थाश्रम का प्रबन्ध भी स्थायी नहीं रहता। बेगम साहिबा भूपाल को अनुभव हुआ है कि जहां शादी बच्चों का खेल हो वहाँ गम्भीरता नहीं आती। यह कारण है कि बेगम भूपाल को ऐसी औरतें कम मिली जिन्होंने दो ही पति किये हों

अनुचितं प्रतिपादित मस्ति । पुनः अस्याः मर्यादायाः दुष्ट फलं स्वयं अनु भवन्ति । शिक्षायां सकेत संतोष स्वीकरणं अवगुणोस्ति । तथापि वयं मोहमदस्य इमांसत्यतां अवलोक्य म हमदं प्रशंसामः । अस्माभिः स्वीकायान् मुसलमानान् बन्धून् सम्मतिः दीयते । यत् रंगीला रसूलस्य जीवनेन शिक्षां गृह्णीयुः । तस्य मित्रत्व शिक्षायां तच्छद्मेषु विपरीत स्वप्न फलेषु न आचरणं कुर्यूः ।

मोहमदस्य अनुभवः (द्वितीयो भागः)

अहं मोहमदे विश्वसामि किमेतदर्थं न् यत्तेन स्वानुयायिनां भार्या त्यागस्य आज्ञा प्रदत्ता । कि महं तस्य अनुयायी न कदापि न । तलाकस्य आज्ञया विवाहः कृत्रिमः सम्बंद्धः जायते गृहस्थाश्रम प्रबन्धः स्थायी न भवति । बेगम साहिवा भूपालस्य अनुभवः जातः । यद्यदा विवाहः बालक्रीडा भवन्ति । तदा तत्र गम्भारता

=====================

इसके विपरीत दशदश पति वाली बहुत देखी गई । जब पुरुषों के लिये तलाक की आज्ञा दी तो स्त्री वर्ग भी पुरुष दर्ग के समान अपने आनन्द के लिये अपने मित्र वर्ग के समीप जाने लगा । हम को यहां यह देखना है कि इस विषय में मोहमद क्या कहते हैं । कुरान में प्रथम नारी की चली वहाँ आई जहां उनको पारिश्रमिक प्रदान की आज्ञा दी है (सूरये निशा) धन दे कर सतीत्व ग्रहण में पाप नहीं समझा है । यह आज्ञा बलात्कार से उत्तम है । यह आज्ञा मुसलमानी औरतों के लिये बड़ी न्यामत हैं । यह प्रथम अनुकम्पा है अरबी भाषा में इसको "मुतआ" कहते हैं । ईरान देश में आज तक यह परिपाटी मुतआ प्रचलित है । परन्तु वे ईरान प्रदेश वालों के अपराधों को मोहमद के लिये नहीं देते हैं । मुताआ के समय कुरान की एक आयत पढ़ कर उसके साथ गुल मोहमद हो जाते हैं विषय भोग में लगते हैं आगे मोहमद ने उन्नति

न समायाति। इदं कारणं अस्ति। भूपाल वेगमाय एतादृश्य:नार्य्यः स्वल्पा मिलिता:। याभि: दौगतो न कृतोस्याता एतद् विरुद्ध दश दश पतिवन्त्य: नार्य्यः दृष्टाः। यदा पुरुषाणां कृते भार्य्या त्याग व्यवस्था दत्ता। तदा भार्य्यावर्गोपि पुरुष वर्गवत् स्वानन्दाय मित्रवर्गस्य समीपे गच्छति।

अत्र अस्माभिरेतदवलोकनोयमस्ति। अस्मिन् विषये मोहमदः किं कथयति। कुरान मध्ये प्रथमा चर्चा नारीणां तत्र समागच्छति। यत्र ताभ्य: पारिश्रमिक प्रदानस्य आज्ञा प्रदत्ता विद्यते (सूरये निसा) धनं दत्वा सतीत्व ग्रहणे पापं न ज्ञातम्। अतएव बलात्कारणात् कापि उत्तमा व्यवस्था दृश्यते। एषा आज्ञा मोहमद मतस्य नारीणां कृते महत्य: अनुकम्पा: दृश्यन्ते, एषा प्रथमा अनुकम्पा।

एतां अरबी भाषायां "मुतआं" कथयन्ति ईरानदेशे अधुना

========================

की विवाह का यह क्षणिक कृत्रिम सम्बन्ध बहुत काल के लिये बना दिया। तलाक के बारे में भी संख्या निश्चित की। क्यों कि कोई मियां साहब अपनी बीवी से बिगड़ कर तलाक दे देवें। और फिर उसका दिल उसको चाहने लगे तो उसकी हालत धनुष से निकले हुए यीर की तरह न हो। इसलिये स्पष्ट कहा कि प्रथम तलाक के पश्चात तीन मास तक बिना विवाह (ब्रह्मचर्य) से रहे। औरतें न कि आदमी। अगर आदमी दूसरी शादी कर ले तो भी कुरान की व्यवस्था में रह सकता है। इस प्रथम व दूसरी बार भी। यही नहीं। पुन: हलाला नाम का बन्धन किया अगर कोई नटखट पति बार बार त्याग देता है तो तीसरी बार तलाक देने में उसको शर्म आवे। अत: विधान किया कि तीसरे तलाक के समय उसकी बीवी दूसरे पति से शादी कर उससे विषय भोग करा ले तब इस को वह बीवी बन सकती है। यह बात कुरान की

पर्यन्तं मुतआ परिपाटी जायते। परन्तु ईरान प्रदेशीयानां अपराधात् मोहमदाय न प्रयच्छन्ति। तदा तो कुरान वाक्यं पठित्वा तत्रैव गुलमोहमदाः जायन्ते भोगाय प्रवर्तन्ते। अग्रे मोहमदेन उन्नतिः कृता। विवाहस्य अयं क्षणिकः कृत्रिमः सम्बन्धः चिराय विहितः। यावती भार्य्या त्याग विषये संख्या निश्चिता। यतः कश्चित् मियां स्व भार्य्यातः रुष्टः जातः। कदाचित् पुनः तस्य हृदयं तस्याः कृते चलति। धनुषः निसृत तीरवत् दशा न भवेत् उक्त स्पृष्टतया। प्रथम त्यागानन्तरं मासत्रयं बिना विवाहेण ब्रह्मचर्य्यो स्थेयम्।

नारीभिः न तु पुरुषैः। यदि पुरुषः द्विविवाहं करिष्यति। तदपि कुरान व्यवस्थायां स्थास्यति। प्रथमायां द्वितीयायां वा। एतदेव न। हलाला बन्धनं कृतम्। यदि कश्चित् नटखट पतिः पुनः पुनः भार्य्या त्यागं करोति। तदा तृतीय त्याग समये अस्मै

======================

सूरये रुकू आ० २९ में देदीप्यमान् है। देखो लोगो! यह मुसलमानी रिवाज कितना लज्जा हीन है। यहां पर सैयद अमीर अली लिखते हैं कि यह रिवाज अरब निवासियों के लिये लज्जा उत्पन्न करने के लिये था। रसूल का तात्पर्य यह था। कि औरतों को दो बार तलाक हो। हलाला काम में लाया जायगा यह अनुमान मोहमद को नहीं था। हम इसको सत्य मानते हैं कोई आपत्ति नहीं है। व्यर्थ में हम मुसलमान बन्धुओं को हलाला के बन्धन से बँधे हुए दिखना नहीं चाहते हैं। अगर वे हमारे पास इस हलाला के कुछ नमूने (उदाहरण) हैं। त्रुटि विधान की हुई। मोहमद की भावना में अपराध नहीं है। सैयद अमीर अली लिखते हैं कि कुरान की इस आयत के आगे एक और आयत विवाह के अध्याय में आती है। जिससे हलाला की मनाई कर दी है ऐसा मालूम होता है। यह कल्पना अमीर अली की अपनी अकेली सलाह है।

प्राप्नुहि । पश्य रंगीले पैगम्बरस्य एक एव रागो नास्ति अपितु इन्द्र धनुषवत् सम्पूर्णाः सप्त रंगा वे विद्यन्ते

इन्द्र धनुषस्य सप्तरंगाः

(१) २५ पंचविंशति वर्ष पर्य्यन्तं ब्रह्मचर्यं चर। यथा मोहमदेन आचरितम् । परन्तु कदाचिदपि मनसिकृष्ण निशा कार्य्यस्य ध्यानं मा कुरू।

(२) ४० चत्वारिंशत् वर्षाया वृद्धया सह विवाहं मा कुरू। कस्या पूजनीया वृद्धायाः नार्य्याः समीपे शयिसुमिच्छति। तथा स्वकीयस्य अनाथ दशाजन्यं दुःखं यापयितुं वाञ्छति तर्हि तादृशीं वृद्धां मातरं कुरू न तु भार्य्याम् ।

(३) कयाचित् बालिकया पुत्तलिका वस्त्र पुत्रिका क्रीडा-संलग्न परया सह विवाहं मा कुरू। अन्यथा क्रीडाखेलनमपि त्वया कर्तव्यं भविष्यति। तव मरणान्तरं तव शिरसि रोदनं करिष्यति । परन्तु यदि मनसि समागतं स्यात् तर्हि पुत्रीरूपेण स्वीकार्य्या । न तु भार्य्यारूपेण ।

(४) वधुः स्वकीयस्य औरस पुत्रस्य स्यात् । आहोस्वित्

चाहती हैं। दासी के सौभाग्य से जलती हैं। पति की अभिलाषाओं की बाधक होती हैं।

(५) पुत्र बधू अपनी हो अथवा दत्तक पुत्र की हो । उसको अपनी पुत्री के समान समझना चाहिये। नहीं तो परदे बुरके की व्यवस्था करनी पड़ेगी। संसार की सुन्दरता के ऊपर परदा करना होगा और प्रहरी बनाने होगे।

(६) बीवी एक ही होनी चाहिये । अधिक अभिशाप पाप और गुनाह है। गृहस्थाश्रम के लिये दुःख का कारण होता है। अपने लिये भी दुःख होता है। न एकान्त में न बाहर न सभाओं में न दोस्तों की महफिलों में चित्त को शान्ति नहीं होती है । वे

दत्तक पुत्रस्य स्यात् । सा स्वपुत्रीवत् ज्ञातव्या । अन्यथा अन्तर-पटस्य व्यवस्थाकरणीया भविष्यति । संसारस्य सुन्दरतायाः उपरि वस्त्राच्छादनं प्रहरी व्यवस्था करणीमा स्यात् ।

(५) दासी मान्या न भवति । तस्याः सन्तानं भार्य्यां वर्गः न स्वीकरोति । तस्याः सौभाग्येन ज्वलति । पत्युः इच्छायां बाधिकाः भवन्ति ।

(६ पत्नी एका भवेत् । अधिकाः अभिशापः पापम् । गृहस्थाश्रमाय पीडा । आत्मनःअभिशापः कष्टम् । न एकान्ते न वहिरंगे न सभायां न मित्रगोष्ठिषु चित्त शान्तिर्भवति । ताः भार्य्याः पारस्परिकं युद्धम् आचरन्ति तदपि चित्तस्य अशान्तिः जायते । यदा सम्मिलन्ति तदा प्रलय मुत्पादयन्ति ।

(७) यथा स्वविधवां अन्येषां मातरं कथयति । न अपितु अल्लामियांतः प्रेरणां दापमति । तथैव अन्येषां अपि विधवाः स्वमातरः स्वीकरणीया मान्या । एषा आकाशवाणी अयं अल्ला-मियां ईश्वरस्य आदेशः । अस्तु श्रीमन् इदानीं अस्माकं प्रस्थानम् प्रस्थानम् । रंगोला रसूल नाटक दृश्यं समाप्तम् । पुनः कदाचित किमपि दृश्यं गृहीत्वा उपस्थास्यामः ।

==========================

घर की औरतें आपस में लड़ती हैं तो भी दिल को वेचैनी रहती है । जब वे सम्मेलन करती हैं तो कयामत ढाती है ।

(७) जैसे अपनी विधवाओं को औरों के लिए माता बताते हो नहीं अपितु अल्लामियां से प्रेरणा दिलाते हो । ऐसे ही दूसरों की विधवाओं को भी अपनी माता स्वीकार करो और उनका भी मान करो ।

यही आकाश वाणी पेगम्बर अल्लामियां का हुक्म है । अस्तु श्रीमान् पाठक गण ! अब हमारा प्रस्थान है । रूकस्त है । रंगीले रसूल नाटक दृश्य समाप्त है । फिर कभी कोई दृश्य लेकर उपस्थित होंगे ।

संस्कृत सत्यार्थ प्रकाशे पृष्ठ ५०२ तमे समीक्षा
सं० १४३ तमें

(१) यस्य बह्वयो भार्या भवेयु: स कथङ्कारं परमात्मनो भक्त: पैगम्बरश्च भवितु मर्हति ।

(२) य: भूयसीभ्योऽपि भार्य्याभ्यो असंतुष्य दासीभी रमेत तस्य लज्जाभये धर्मश्च कुत्र स्थीयन्ते कथं रसूलो भवितु मर्हति । कामातुराणां न भयं न लज्जा ।

(३) नायमीश्वर: प्रत्युत मुहम्मदस्य कृते योषिता मानेता नापित: इति मुसलमानानां खुदा अस्ति ।

—×—

सत्यार्थ प्रकाश १४ समुल्लास समीक्षा १४३ में

(१) अनेक स्त्रियों को रक्खे वह ईश्वर का भक्त वा पैगम्बर कैसे हो सके ?

(२) जो बहुत सी स्त्रियों से भी संतुष्ट न होकर बान्दियों के साथ फँसे वह कैसे रसूल हो सकता है ।
कामातुराणां न भयं न लज्जा

(३) मूसलमानों का खुदा क्या ठहरा मानो मुहम्मद साहिब के लिये बीबियाँ लाने वाला नाई ठहरा ।

मोहमद की प्रशंसा

सदा बहार सजीला रसूल है मेरा–
हो लाख पीर रसीला रसूल है मेरा ॥
जहे जमाल छबीला रसूल है मेरा–
रहमे इश्क रंगीला रसूल है मेरा ॥
चमन में होने दो बुलबुल को फूल के सदके
मैं जाऊँ अपने रंगीले रसूल के सदके ॥
किसी बिगड़ी बनाना है ब्याह कर लेंगे
बुझा चिराग जलाना है ब्याह कर लेंगे ॥
किसी का रूप सुहाना है ब्याह कर लेंगे
किसी के पास खजाना है ब्याह कर लेंगे ॥
सदा बहार सजीला रसूल है मेरा

समर्पणम्

श्री पं० भोजदत्त शर्मा आगरा के द्वारा संस्थापित
आर्य मुसाफिर विद्यालय में सन् १६१२-१३ में
कुरान हदीस व अरबी भाषा की शिक्षा
प्राप्त की तदर्थ यह पुस्तक उन्ही
को समर्पित है।

निवेदक—

मङ्गलदत्त शर्मा

पुस्तक मिलने का पता—

(१) स्वामी केवलानन्द सरस्वती आर्यसमाज ऋषिकेश।
(२) डा० श्रीराम आर्य, कासगंज (उ० प्र०)
(३) श्री गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क देहली।
(४) पं० राजेन्द्र शर्मा टी स्टाल जीन्द जंकशन।